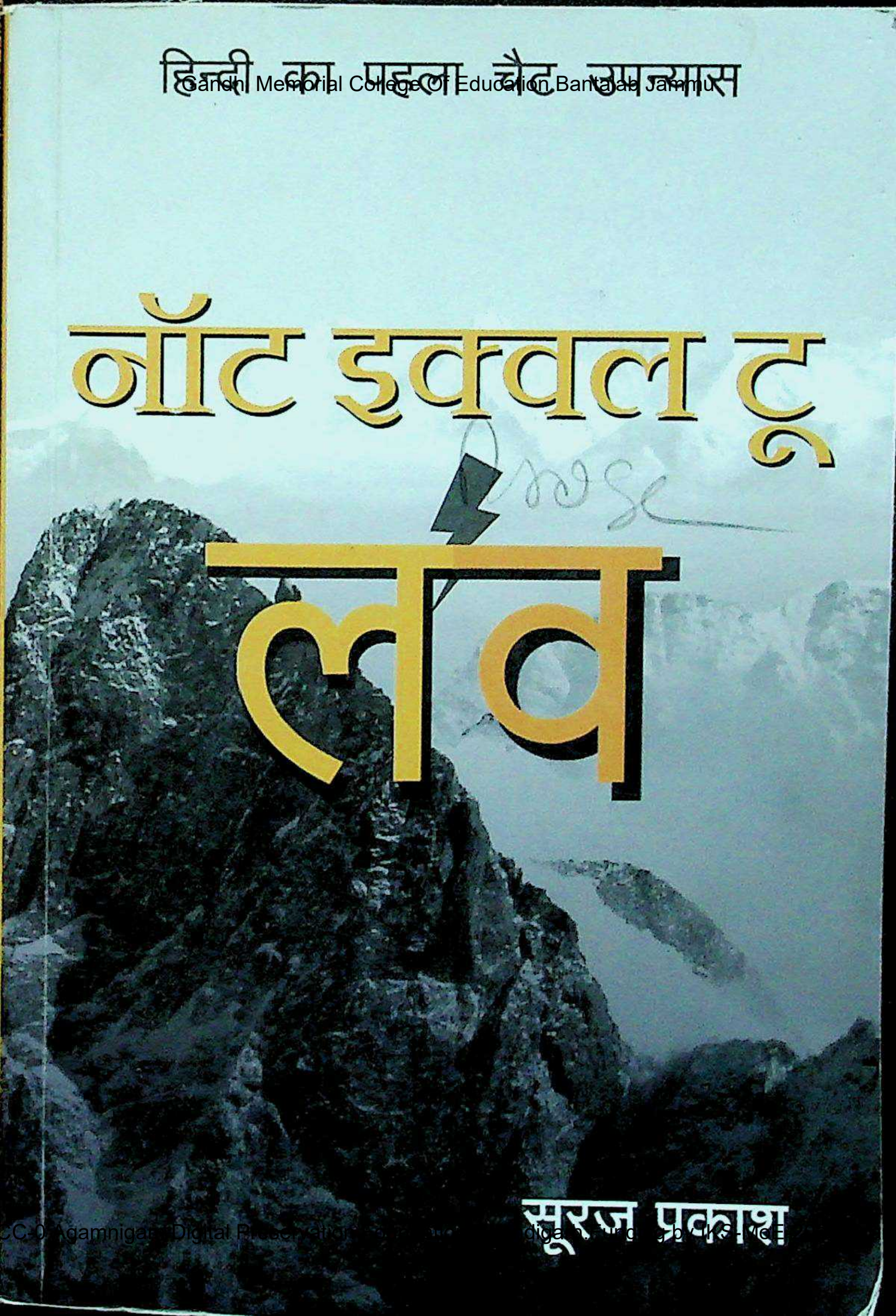

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नॉट इक्वल टू लव

सूरज प्रकाश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नॉट इक्वल टू लव

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
42337
13.12.2023

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

सूरज प्रकाश

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वाधिकार © 2016 सूरज प्रकाश

यह एक काल्पनिक कृति है। नाम, वर्ण, व्यवसाय, स्थान, और घटनाएं या तो लेखक की कल्पना का उत्पाद हैं या एक कल्पित तरीके से इस्तेमाल की गई हैं। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं के साथ कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग होगा।

प्रथम संस्करण: 2016

भारत में मुद्रित

ISBN: 978-93-86305-05-3

आवरण रचना: StoryMirror

मुद्रक: StoryMirror Infotech Pvt. Ltd.
H33/1 (Basement), DLF Phase 1,
Gurgaon -122002, Haryana, India.

STORYMIRROR

Web: www.storymirror.com
Facebook: www.facebook.com/storymirror
Instagram: https://instagram.com/storymirror
Twitter : https://twitter.com/story_mirror

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा, इलेक्ट्रानिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा द्वारा, के रूप में या किसी भी तरह, प्रकाशक/लेखक की पूर्व अनुमति के बिना, पुनरूत्पादित, हस्तांतरित, या किसी भी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जाना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नॉट इक्वल टू लव

हिंदी का पहला चैट उपन्यास

सूरज प्रकाश

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी सदाबहार मित्र, पत्नी और मेरे लेखन की

सबसे तीखी आलोचक

मधु को

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी के पहले चैट उपन्यास के पक्ष में दो शब्द

1997 में मैंने एक कहानी लिखी थी - दो जीवन समांतर। लगभग 8 पेज में समायी 3200 शब्दों की ये कहानी एक नये ही फार्मेट में लिखी गयी थी। टेलीफोन पर बातचीत के रूप में। कहानी इतनी सी थी कि एक प्राध्यापक अपनी भूतपूर्व प्रेमिका और इस समय वरिष्ठ आइएएस अधिकारी से बीस बरस के अरसे के बाद फोन करता है। इस कहानी में वे बीस बरस पहले की, बीच के अंतराल की और वर्तमान की बात करते हैं। उलाहने देते हैं, शिकायतें करते हैं, प्रेम प्रसंग याद करते हैं और दोबारा न मिल पाने की कचोट साझा करते हैं। बेहद रोचक संवादों में लिखी गयी ये कहानी खूब पसंद की जाती रही है, बीसियों बार छपती रही है। कई भाषाओं में इसके अनुवाद हुए हैं, एकाधिक मंचन हुए हैं और रेडियो पर सुनायी जाती रही है। ये कहानी ऑडियो रूप में नेट पर उपलब्ध है। मैंने शायद सबसे ज्यादा बार यही कहानी सुनायी हो।

इन 19 बरसों में तकनीकी विकास और ग्लोबल विश्व की धारणा ने हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन और हमारी सोच को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। हम सबके जीवन में मोबाइल और सोशल मीडिया ने सबसे

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज्यादा जगह घेर ली है और आपसी संवाद के, संप्रेषण के सारे तौर तरीके बदल गये हैं।

इन सबके आलोक में आपसी संबंधों को नये नज़रिये से देखने की ज़रूरत आ पड़ी है। जीवन के साथ साथ साहित्य भी इन सारी गतिविधियों से अछूता नहीं रहा है। इधर की कहानियों और उपन्यासों की बुनावट में फेसबुक वगैरह की मौज़ूदगी देखी जा सकती है।

उम्र के साढ़े छ: दशक और लेखन के लगभग तीन दशक पार कर लेने के बाद मैं भी इन सब की आंच से बचा नहीं रह सका। बल्कि कुछ ज्यादा ही प्रभावित हुआ हूं। इधर की मेरी सारी कहानियां फेसबुक से लिये गये पात्रों पर आधारित हैं और बहुत पसंद की गयी हैं। फेसबुक की कहानियों का संकलन हाल ही में लहरों की बांसुरी तथा अन्य कहानियां के नाम से आया है।

टेलीफोन पर बात के रूप में लिखी गयी कहानी के 19 बरस बाद मैंने एक और प्रयोग किया है। फेसबुक पर चैट के रूप में लघु उपन्यास - नॉट *इक्वल टू लव* लिख कर। अंग्रेजी में उपन्यास का नाम अपनी सार्थकता खुद सिद्ध करेगा।

ये लघु उपन्यास आपको आत्मकथात्मक भी लग सकता है लेकिन इस उपन्यास में उठाये गये मुद्दे मेरे नहीं बल्कि आप सब के जीवन से लिये गये हैं। झूठ क्यों बोलूं, फेसबुक पर भी तो हम ही होते हैं, बस थोड़ी सी सुर्खी बिंदी लगा कर थोड़ा अलग, थोड़ा बेहतर, थोड़ा भावुक और थोड़ा समझदार
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगने की भी कोशिश करते हैं। इसमें आप आसपास के जीवन के एकाधिक प्रसंग पायेंगे।

हिंदी में फेसबुक चैट के रूप में लिखा गया पहला उपन्यास आपको सौंपते हुए मैं बेहद रोमांचित हूं! आपको निराश नहीं करूंगा।

सूरज प्रकाश

15 नवम्बर 2016

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
05/18/2014 7.37 PM

- हैलो!

- जी!

- कैसे हैं सर?

- मैं ठीक, आप?

- मैं हमेशा की तरह ठीक।

- ये तो बहुत ही अच्छी बात है। हमेशा ठीक होना और बताना कि हम हमेशा की तरह ठीक हैं।

- आपने ये खूब कही। लीजिये गौर फरमाएं -

मुझमें होकर भी जुदा-जुदा सा रहा
यूं तन्हा मुझ ही में मेरा खुदा रहा......!!!

- वाह, अच्छी लाइनें हैं।

- और ये भी सर-

आवाज़ों की बस्ती में
दो लफ़्ज मेरे अपने
इक तुम्हारा "मौन"
कुछ मेरे "सपने" !!

- क्या बात है आप आज शायरी के मूड में हैं? अपना परिचय देंगी?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- प्रोफाइल में है ना। काफी नहीं है?
- मैडम आपका प्रोफाइल साइलेंट मोड में है। बता कम रहा है, छुपा ज्यादा रहा है।
- सर, मैं आपको अपना पेज देखने के लिए इन्वाइट करना चाहती हूं...।
- ज़रूर!!
- सर, ये रहा लिंक!
- देख रहा हूं।
- जी!
- आप तो कविता के ज़रिये बहुत गहरे मन की बातें कर रही हैं। बाद में आराम से आपकी सारी रचनाएं देखूंगा, लेकिन एक बात अभी कह दूं?
- जी!
- आपकी बातचीत से, आपकी रचनाओं से और आपकी मनःस्थिति से आपकी डीपी में विराजे कान्हा और मीरा यहां मेल नहीं खा रहे। ये मिस मैच सा लग रहा है कुछ तो!!
- जी, सर आपकी वॉल से एक कविता शेयर की है अभी.....बहुत बहुत अच्छी लगी।
- ये तो मेरी बात का जवाब न हुआ।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- सर, कविता शेयर की है।

- कौन सी? मेरी या किसी और की?

- पहचान!

- ये कविता मेरी तो नहीं है। किसी टैग वीर ने टैग कर दी होगी। एक बात और कहनी है मुझे।

- जी।

- पहली ही बार में ये बात कह रहा हूं। हो सकता है खराब भी लगे।

- सर, आप कहें तो सही।

- फेसबुक पर अपना फेस न दिखाना शायद मित्रों से और अपने आपसे बेईमानी है!

- हम्मममम!

- आपका प्रोफाइल बता रहा है कि आप विवाहिता हैं। तय है, अपने पति की जानकारी में ही आप फेसबुक पर होंगी?

- तो इसमें परेशानी क्या?

- फेसबुक पर अपनी तस्वीर की जगह गोलकोंडा के उजड़े किले की फोटो लगाने का क्या मतलब? कहीं तो लगे कि किसी रचनाकार के होम पेज पर हैं!

- सर, मेरी फोटो बाकायदा है वहां।

- किधर है जी?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- फोटो एलबम में देखिये।

- वेट.. !

- वज़न बताना है या इंतज़ार करना है?... हाहाहाहाहा!!

- हिंदी में अंग्रेजी के इंतज़ार वाला वेट। शायद आप इसी किले में ही बहुत दूर नीली साड़ी में खड़ी हैं?

- जी सही पहचाना!

- फोटो ऊपर से कट रही है। फोटो में चेहरा लगभग है ही नहीं। इसलिए. ध्यान नहीं गया, सॉरी।

- हाहाहाहा!

- ये हाहाकार क्यों?

- मन हुआ, बस!

- क्या करती हैं आप कविताएं लिखने के अलावा?

- फुल टाइम जॉब। दो अपने बच्चे और सास के एक बच्चे को संभालती हूं। सास ससुर और ननद एक्स्ट्रा। पूरे परिवार की होम मिनिस्ट्री मेरे जिम्मे है।

- हाहा! सबसे बड़ा काम!!

- ऐसा काम जिसमें कोई शुक्रिया नहीं कहता और कोई मेहनताना नहीं मिलता।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- यही काम ऐसा है जिसके लिए किसी सरकार ने कभी कोई वेतन तय नहीं किया है। वैसे जो बाहर काम करने जाती हैं, उन्हें भी घर के काम से मुक्ति कहां?
- अब देखिये ना, होटल में खाना खाने जाएंगे, तो खाने की दस तारीफें करेंगे, खानसामा को बुला कर उसकी डिशेस की तारीफ करेंगे, बैरे को दुनिया का सबसे बेहतरीन फोटोग्राफर बनाते हुए उसे अपना मोबाइल थमा देंगे और उसके साथ सेल्फी भी लेंगे, बैरे को तगड़ी टिप भी देंगे लेकिन जो लेडी बरस में 360 दिन चार बार सबकी पसंद का बेहतरीन खाना बनाती है, उसके लिए कभी भी किसी के पास दो शब्द नहीं होते। खाने में दस नुक्स जरूर निकालेंगे।
- आपके कहने का मतलब ये है कि हाउस वाइफ होने के तुलना में होटल में खानसामा होना बेहतर है!
- यस बेशक। हर लेडी की यही कहानी है। थैंकलेस बट अनपेड जॉब। मुझे ही देखें। मैं चार विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट हूं। दो बरस तक पढ़ाती रही। अब अंग्रेज़ी में पीएचडी करने के लिए छटपटा रही हूं। लेकिन कर क्या रही हूं! फ्री एंड टाइमली टिफिन सर्विस सबके लिए!!
- ग्रेट!! लेकिन फेसबुक पर एक अजनबी के साथ पहली ही चैट में अपने परिवार वालों के प्रति इतना गुस्सा। हमें ही हजम नहीं हो रहा है। वैसे किन विषयों में हैं पोस्ट ग्रेजुएट?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपको हँसी आयेगी! हिंदी, अंग्रेज़ी, एजुकेशन और साइकॉलोजी!
- और पढ़ाती क्या रहीं?
- बारी बारी से सब।
- हाहा!! और पढ़ती क्या हैं?
- खूब पढ़ती हूं लेकिन क्या पढ़ना है इसका कोई सिलसिला नहीं रहता।
- और लिखने का?
- उसका भी।
- जी, लेकिन आप एक काम बखूबी कर सकती हैं और करना भी चाहिये।
- क्या?
- रचनात्मक कृतियों का अनुवाद। आपके पास संवेदनशील भाषा और सहजता है।
- कभी किया नहीं लेकिन करना चाहूंगी।
- आपको समय मिले और मूड करे तो ज़रूर करें। आप बेहतर कर पाएंगी।
- जी शायद इसलिए कि मैं हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में पोस्ट ग्रेजुएट हूं।
- जी आप खुद रचनाकार है तो बेहतर अनुवाद करेंगी। इसके अलावा आप चार मास्टर्स डिग्री वाली हैं ही।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- रचनाकार होने से क्या फर्क पड़ता है!

- ऐसा है मैडम कि रचनाकार के लिए ज़रूरी नहीं कि वह अनुवादक हो लेकिन अनुवादक अगर रचनाकार भी है तो सोने में सुहागा होता है।

- बहुत अच्छी बात कही है आपने सर। हमेशा याद रहेगी।

- इन दिनों क्या कर रही हैं?

- जी इस समय तो अंग्रेजी नेट की तैयारी में लगी हूं। अगले महीने पेपर हैं।

- वाह मल्टी टास्किंग, एक तरफ पीएचडी की तैयारी दूसरी तरफ नेट!

- मैंने एचटीईटी पास किया है।

- ये क्या होता है?

- हरियाणा टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट।

- अरे वाह, आपको तो खूब सम्मान मिलना चाहिये।

- जी शुक्रिया।

- हम तो हो ही गये आपके कद्रदान।

- इंतज़ार कर रही हूं कि सरकारी नौकरियां कब निकलती हैं।

- ओके। मेरी शुभकामना आज से शुरू।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेकिन नेट क्लीयर हो जाये ....तो कॉलेज के जॉब की बात ही कुछ और है!
- जी!
- 24 जून को एक्जाम है।
- हिम्मते मरदां मददे खुदा। जानती हैं अर्थ?
- भाषाओं और साहित्य का ओर छोर नहीं। इसका अर्थ ..जानती हूं। औरत हूं फिर भी .....।
- हाहाहाहा। अपने आप पर लागू कीजिये, हमारी मदद की दरकार हो तो बोलिये।
- आभार आपका।
- अजीब बात है कि कानूनी भाषा में अंग्रेजी के he में she शामिल होता है जबकि असल में अंग्रेजी शब्द she में he शामिल होता है।
- अरे मैं भी यही टाइप करने वाली थी।
- हाहाहा, दो दानव एक जैसा सोचते हैं।
- सही कहा।
- हम आज से मित्र हुए। दानव मित्र।
- हाहा दानव! अच्छा है। कैसे हैं दानव जी।
- दानव मानव एक ही बात।
- जी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- वैसे कौन मानव कब दानव बन जाये और कौन दानव कब मानव?
- दानव मानव गुड ओके, एक काम कीजिये....अपने लिए एक नाम का चयन कीजिये....जल्दी!!
- कोई जाने ना!!
- नाम चुनें!!
- किस तरह का?
- दूसरा मेरा!!
- आप मानव, बाकी मैं!
- मज़ाक नहीं, फिर एक दूसरे को हम इन्हीं नामों से याद रखेंगे...!
- मानव दानव !!
- हाहा!!
- आप मा!! मैं दा!!
- ठीक!!
- नव छोड़ो!!
- तय हुआ कुछ?
- किशोर वय में मेरी बहुत इच्छा होती थी कि कोई मुझे देव नाम से पुकारे और मैं किसी को छवि नाम से पुकारूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ऐसा कभी हो तो नहीं पाया लेकिन ये दोनों नाम याद रह गये।

- हाय देव कैसे हैं आप?
- हम देव नाम से पुकारे नहीं गये कभी। बस आज ही इस नाम से पुकारे गये।
- जी!!
- छवि!!
- हाय देव, कैसे हैं आप?
- कैसी हो छवि?
- ठीक, हमेशा की तरह।
- कहां थी इतने दिनों से छवि?
- इसी नक्षत्र पर थी देव!
- कमाल है, मैं भी यहीं खोजता रहा।
- शायद परली तरफ थी।
- ठीक तो हो?
- छोटी सी है दुनिया!!
  कितनी भीड़ से भरी
  है यकीन मुझको
  कि मिल ही जाएँगे कहीं!!!
- मिल गये!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- कैसे हैं नाम?

- अच्छे हैं।

- आप नाम रखतीं तो क्या रखतीं?

- खुद को क्या कहती पता नहीं!!

- आपने दो नाम चुनने के लिए कहा था। आप पर भी यही लागू होता। मेरे लिए क्या नाम चुना होता?

- अपने मोर्चे पर जाने का समय हो गया। किचन की तरफ कूच करें!!

- मुझे भी आज डिनर बनाना है।

- क्यों?

- बीवी बाहर, बच्चे बाहर।

- कहां गये?

- अपने अपने मोर्चे पर, कोई फिल्म, कोई ईवेंट।

- आप यहां क्यूं रह गये?

- हमीं रह गये दास्तां कहते कहते। आपसे बात करनी थी ना। एक नयी दोस्त मिलेगी पता था मुझे!!

- आपका सौभाग्य।

- आपका नहीं क्या छवि!! सिर्फ हमारा ही? आपने बताये नहीं अपनी पसंद के नाम?

- ओके बाय!!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- एक बात बताती जायें छवि!!

- जी!!

- नाम क्या चुनतीं?

- फिर कब बात होगी?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

05/28/2014 6.55 PM

- सर आपकी वेबसाइट देख रही हूं। वाह क्या बात कही है कहीं हमें दर्पण देखने की लत लग जाये तो हम अपने आपको इतना ज्यादा जानने-पहचानने लगते हैं कि अपने और सिर्फ अपने बारे में घंटों, दिनों और महीनों तक अच्छी अच्छी बात करते रह सकते हैं। बहुत अच्छा लिखा है सर आपने।
- जी!
- देखी आपकी साइट। कुछ वक्त गुज़ारा।
- जी।
- बिज़ी हैं सर?
- न, एक फोन आ गया था। कहिये। दरअसल आजकल मैं एक नेट पत्रिका का संपादन कर रहा हूं। उसी के काम में लगा रहता हूं।
- जी पता है। आपकी वॉल पर संदेश है इसके बारे में।
- आपका प्रोफाइल बता रहा है कि आपका जन्मदिन है अगले हफ्ते, तो कुछ कविताएं हमारी पत्रिका के लिए खास तौर पर लिखें। हम सस्नेह छापेंगे।
- मेरी वॉल पर आपको जो लाइनें अच्छी लगीं जरा बतायें!
- ये वाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझमें होकर भी जुदा-जुदा सा रहा
यूं तन्हा मुझ ही में मेरा खुदा रहा......!!!

- अच्छी है। आप पूरी रचना दें।

- जी ज़रूर।

- कितनी होंगी कविताएं?

- कच्ची पक्की होंगी पचास के करीब।

- हमें कम से कम पांच दें, बस एक इकलौती शर्त है।

- जी कहें सर!!

- वही रचना दें जो पहले से नेट पर या आपकी वॉल पर न हों।

- नेट पर ये सब तब बेकार हो जायेंगी क्या?

- नहीं, हम चाहते हैं कि हम जो छापें लोग उसे पहली बार हमारे यहां ही पढ़ें।

- मैं तो बेहद खुशी से लिखती हूं यहां ताकि सब पढ़ सकें। लोग पढ़ते और कमेंट भी करते हैं।

- आप फेसबुक की टीआरपी पर न जायें। हम यही तो नहीं चाहते कि आप ही के पाठक और मित्र ये कहें कि अरे ये तो पहले पढ़ी हैं आपकी वॉल पर। अब हमारे लिए लिखें खास तौर पर। बेशक बाद में आप अपनी वॉल पर उसका लिंक दे दें। हमारी पत्रिका लगभग 2000 पाठक रोज़ पढ़ते हैं और खूब पसंद भी करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेकिन सर, यहां पर तो सिर्फ दो ही लाइनें दी हैं..... पूरी रचना तो नहीं दी है।
- अरे नयी लिखिये न। आपके लिए तो बायें हाथ का काम होगा।
- ऐसा क्यों?
- मेरी बात रखने में कोई हर्ज है क्या?
- अच्छा ये देखें -

तुम ही तो बोलते हो
सुन भी रहे हो तुम ही
तुम ही निहारते हो
और आईना हो तुम ही
क्या हो तुम, और कौन हो
ये भी पता नहीं
ना दूर हो ना पास हो
पर हो यहीं कहीं!!

- अच्छी है लेकिन यह भी आपकी वॉल पर तो होगी ना?
- कितने कम लोगों ने देखी है ये कविता यहां ....फिर भी जो आपका आदेश ....!!!!
- ऐ होई ना गल्ल। हमारी पत्रिका पूरे सम्मान के साथ आपकी नवीनतम रचना पेश करना चाहेगी। नये रचनाकारों को इंट्रोड्यूस करने के लिए एक खास कॉलम है - आओ धूप।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- देखा अभी सर। अच्छा नाम दिया है कॉलम का।

- जी, और आप अनुवाद के बारे में सोचना।

- आप आदेश दें सर।

- एक बात तो ये कि मैं आपका सर नहीं। मेरा नाम ले सकती हैं।

- दूसरी बात?

- कोई अच्छी सी किताब चुनिये या कोई कहानी।

- जी!

- कर पाएंगी?

- जी इन दिनों फ्री हूं। मुझे घर पर ज्यादा काम नहीं रहता और कोई भी रचनात्मक काम करना मेरे लिए बहुत खुशी की बात होगी।

- आपने रस्किन बॉंड की कहानियां पढ़ी होंगी?

- जी पढ़ी हैं।

- गुड, बच्चों के लिए उत्तम काम है उनका। कोई कहानी चुन कर उसका अनुवाद करने के बारे में सोचिये।

- जी।

- उनकी पूरी किताब कर सकें तो बल्ले बल्ले।

- मुझे मार्ग दर्शन चाहिये। कोई बताये तो मैं बहुत काम कर सकती हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हम हैं ना, फ्रेंड फिलास्फर एंड गाइड। [illegible]यर्ड।

- हाहाहाहा सर। बनाया आपको फ्रेंड फिलास्फर एंड गाइड।

- और बतायें।

- सर, आपको बताया था। मेरा बहुत प्यारा परिवार है। भरा पूरा परिवार। पति, दो बच्चे, सास ससुर, ननद। साहित्य के लिए काम करने में कोई भी तकलीफ नहीं होगी। आप सुझायें .....मैं सच कह रही हूं।

- और.. !!

- और क्या?

- जो आप बताना चाहें। वेट को छोड़ कर हाहा।

- वेट बहुत ज्यादा है.....।

- कम ऑन..।

- ओके।

- मुझे कौन सा आपको नदी पार करानी है!!

- हाहा, नाइस सेंस ऑफ ह्यूमर।

- आपसे एक बात पूछते हैं।

- ज़रूर।

- दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं। पहले वे जो बरसात आने पर खिड़कियां बंद कर देते हैं और दूसरी किस्म के लोग बरसात आने पर बंद खिड़कियां भी खोल देते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आप अपने आपको किस तरह के लोगों में शामिल करना चाहेंगी?

- आपके वर्गीकरण का जवाब नहीं, लेकिन हम भी अपने जवाब से आपको लाजवाब कर देंगे।
- कहें।
- दरअसल एक और किस्म होती है लोगों की। हम उसी में आते हैं। पहली बरसात आने पर हम छत पर चले जाते हैं और जी भर कर भीगने का आनंद लेते हैं। वैसे भीगने के मौके नहीं छोड़ते। आप अपने आप को कहां रखते हैं लेखक महोदय?
- आपके जवाब से हम बेहद खुश हुए। जहां तक बंबई की बरसात का सवाल है, यहां भरपूर होती है और इतनी तरह की होती है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते।
- अरे वाह। जरा हमें भी बतायें।
- कई बार तो छतरी खोलने से भी पहले बरसात बंद हो चुकी होती है और आप भीग चुके होते हैं। सड़क के इस तरफ बरसात है और उस तरफ नहीं है। कई बार इतनी लंबी चलती है कि सब कुछ ठप्प हो जाता है। इसके बावजूद हम भीगते हैं और भरपूर भीगते हैं। बस ये देख लेते हैं कि मोबाइल और पर्स भीगने से बचे रहें।
- वॉव! सुना है बंबई के आसपास कई रिसॉर्ट्स में म्यूजिकल रेन डांस का इंतजाम होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- देख लीजिये, इतनी बरसात के बाद भी हम और भीगने के मौके तलाशते रहते हैं।
- सुना है बंबई में लोग बरसात और लड़की का भरोसा नहीं करते। दोनों कभी भी आती जाती रहती हैं।
- सही फरमाया। यही सच है।
- देखा, हम भी बंबई के बारे में कितना कुछ जानते हैं।
- एक और बात बतायें।
- जी
- क्या पढ़ना अच्छा लगता है?
- संगीत सुनना, पढ़ना, लेकिन बताया ना कि हर तरह की किताबें पढ़ती रही हूं लेकिन डिग्रियां बटोरने के चक्कर में मन माफिक पढ़ना सिलसिलेवार नहीं हो पाया। संगीत हर समय चाहिये।
- जी, आपकी पर्सनल लाइब्रेरी है क्या?
- जी कुछ किताबें हैं ......थोड़ी बहुत।
- ओके, एक काम करना।
- जी!!
- आप रस्किन बांड की कोई किताब खरीदें।
- पहले भी बताया था। किताब का नाम बतायें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- बुक शॉप में जो भी मिल जाये। उसमें से अपनी पसंद की किसी कहानी का अनुवाद करें।

- जी, ज़रूर।

- वेट, मैं आपको उनकी एक कहानी ईमेल ही कर देता हूं। आइडी बतायें।

- जी!!

- प्रिंटर है क्या घर में?

- जी है।

- आप जब अनुवाद कर लें तो हम अपनी पत्रिका में छापेंगे। ये आपको जन्मदिन का उपहार होगा। लेकिन जल्दी। मैं आपको आज ही कहानी भेज दूंगा।

- जी सरकार!

- जी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/13/2014 9.18 PM

- आजकल किसी दूसरी दुनिया में हूं ...पता नहीं चलता कब लिखती हूं ....कुछ भी आ जाता है दिमाग में।

- यूं कहिये दिल में।

- जी, शायद -

हर एक अभिव्यक्ति तेरी ही प्रेरणा है।
फिर मिल गए स्वर जीवन की सारी वेदना को !!

- सही कहा।

- कुछ है ....जिसे समझ नहीं पा रही हूं ठीक से ....आजकल।

- कई बार होता है कि हम अपने मन की बात नहीं कह पाते।

- सामने वाला भी तो हो सुनने के लिए।

- वैसे मैं बहुत लकी हूं कि मुझे सुरिंदर जैसे पति मिले। वह मेरे लिए ऑल इन वन हैं....।

- श्योर। वैसे क्या करते हैं?

- गाइड, फ्रेंड, फिलास्फर, सखा, भगवान सब कुछ ...।

- ओह गॉड!!!

- ये ....आढ़ती हैं। समझते हैं आप ......?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जी, मैं उत्तर भारतीय हूं और पंजाबी हूं।
- कमीशन एजेंट।
- जानता हूं भई। आढ़ती को अंग्रेजी में कमीशन एजेंट कहते हैं।
- जो अनाज मंडी होती है ...समझते हैं.. ?
- अरे, मैं समझता हूं ना।
- ओके के के के के।
- और?
- और सब अच्छा अच्छा जो एक अच्छी सी लाइफ के लिए चाहिये।
- और शायद वाइफ के लिए भी।
- शब्दों से खेलना तो कोई लेखकों से सीखे। बात को कहां से कहां ले जाते हैं।
- आप ग्रेट हैं। लकी यू आर।
- वैल, आप लकी के बजाये कह सकते हैं आशावादी .. ..मेरे मामले में वह बेहतर शब्द होगा।
- जी, जो शब्द आपको अच्छा लगे, फिट कर लें। वैसे आप खुद किस शहर की रहने वाली हैं शादी से पहले?
- बहादुरगढ़, मेरे बारे में सबसे अच्छी बात है – स्वीकार भाव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आप कहना चाहती है अपने आपको मौके के हिसाब से ढाल लेना।
- सरवाइवल आफ द फिटैस्ट। डार्विन का सिद्धांत।
- आपके संदर्भ में कहां आ गये डार्विन बाबा?
- ढालना खुद को। सरवाइवल आफ द फिटैस्ट।
- चप्पा चप्पा बूटा बूटा!!
- इसलिए कहा!!
- हाल हमारा जाने है!!
- सही फरमाया!!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/17/2014 4.39 PM

- छवि जी, कहानी आपके ईमेल आइडी पर नहीं भेजी जा सकी क्योंकि इस नाम का कोई आइडी मौजूद नहीं है। बतायें क्या करूं?
- ओह!
- कहानी यहीं एफबी पर इनबॉक्स में ही चिपका दी है। देख लें।
- देव ....मेरी आइडी कहां गयी.....यहीं तो थी?
- ये आइडी सिस्टम को मंजूर नहीं है छवि, आप बतायें मैं क्या करता!
- अच्छा, वो तो देख लिया मैंने पर मेरी आइडी?
- नया बना लें जीमेल में। या एक काम करें।
- जी सर।
- मेरे आइडी पर एक टेस्ट मेल भेजें।
- अभी नहीं ....कल। मेरा एक और भी आइडी है!
- ये काम तो अभी ही होना है।
- प्लीज।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/26/2014 9.01 PM

- हैलो सर कैसे हैं? फेसबुक के बारे में आपने जो लेख लिखा है, बहुत अच्छा लिखा है। मेरे ख्याल से उसमें कुछ और पहलू और जोड़े जा सकते हैं.... !

- हैलो, क्या आप कुछ देर इंतज़ार कर सकती हैं। जल्द ही आपसे बात करता हूं।

- आपको इतने दिन बाद देख कर अच्छा लगा। कैसे हैं सर?

- कुछ पल और दें।

- जी!

- अब कहें, जी छवि जी मैंने उस लेख में से उस लड़की का पोर्शन हटा दिया है। बाद में बता चला वो लेस्बियन है। उनका पूरा ग्रुप है तो सारा दिन फेसबुक पर अश्लील तस्वीरें परोसता रहता है। उसका पूरा ग्रुप फेसबुक पर गंद मचा रहा है। मैंने उसे ब्लॉक कर दिया है। हालांकि अब लेख काफी बड़ा हो गया है और लोग अपने कमेंट्स भी दे रहे हैं। आप क्या योगदान देना चाहेंगी? मैं साभार लेना चाहूंगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/29/2014 2.13 PM

- सर, आप कभी ऑन लाइन नहीं दिखते..... !

- जाने दें.. !

- बात क्या हवा के साथ करूं!

- वैसे मेरे लैपटॉप में हर समय फेसबुक खुला ही रहता है। मैं घर से बाहर रहूं तब भी। आप ही की सेटिंग में कुछ गड़बड़ होगी। वैसे आप कभी भी ऑफलाइन मैसेज छोड़ सकती हैं।

- जी!

- वैसे भी मुझे नींद नहीं आती, सोता जागता रहता हूं!

- सरकारी जॉब के लिए एप्लाई किया है। उसी को ले कर थोड़ी अस्त-व्यस्त हूं।

- मित्र छवि, आप पहले बतातीं, मैं क्या शुभकामना भी नहीं दे सकता था?

- ऑनलाइन तो होती हूं लेकिन कम्प्यूटर के पास नहीं होती।

- पहले बतायें कैसी हैं, नेट परीक्षा का क्या रहा?

- नेट का रिजल्ट आने के बाद ही पता चलेगा कि परीक्षा कैसी रही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- ज़रा बतायें कि आप ऑनलाइन रह कर मैसेज देती हैं या ऑफलाइन रह कर?
- जी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

08/08/2014 11.38 PM

- मेरी शुभकामना तो सही वक्त पर मिल गयी थी ना?
- कहानी भी आज.....अभी .....डाउनलोड कर ली....रस्किन बॉंड की!
- बापा रे, ये कहानी तो आपको तीन महीने पहले भेजी थी अनुवाद के लिए।
- हां पर!!
- अब अनुवाद करेंगी?
- हां ...पहले देख तो लूं!
- बेशक, देव कुछ कहना चाहता है सरकार!
- आज्ञा है!
- आपसे दो चार बार ही संवाद हुआ लेकिन आपसे बात करके बेहद अच्छा लगा था। आमतौर पर फेसबुक पर ऐसे सहज संबंध नहीं बनते। किसी से भी नहीं।
- अगर ऐसा ही है तो आय एम ऑनर्ड।
- सच!
- शायद.... !

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपने शायद महसूस न किया हो। मैं उम्र में आपसे बड़ा हूं और दुनिया देखी है लेकिन एक ईमानदार अभिव्यक्ति होती है। वही देखी मैंने।

- आपको वरदान मिला होगा शायद........मेरी तरह शायद आपमें भी कोई अच्छी सी बात बची होगी। आपके आसपास दुनिया भर की सारी बदतमीजियों के बावजूद।

- आज इतनी देर रात कैसे जाग रही हैं, कभी नहीं देखा?

- इसमें कुछ भी खास नहीं। अब जरा दो बातों पर रोशनी डालें।

- जी कहें!

- आभासी मित्रों से जो शुभकामनाएं मिलती हैं, वो रीयल होती हैं....ऐसा मैंने महसूस किया है।

- सही कहा, फेफबुक बेशक आभासी है लेकिन यहां मिलने वाले दोस्त खरे हैं। दूसरा!

- क्या लेखन देर से भी शुरू किया जा सकता है!

- लेखन कभी भी शुरू किया जा सकता है बल्कि देर से लिखना शुरू करने का ये फायदा होता है कि आप अपनी रचनाओं में भाषा और ट्रीटमेंट के कच्चेपन से बच जाते हैं और पूरी मैच्युरिटी से रचनाकार के रूप में अपनी शुरुआत करते हैं।

- जी सर। समझ में आया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अब दो सवाल मेरे।

- आप भी पूछ ही डालो वरना डकार अटके रहेंगे।

- छवि, चैटिंग के लिए दोनों के ही अलग नाम रखने के पीछे आइडिया क्या था और दूसरे इतनी आत्मीयता से परिचय देने के और चैट शुरू करने के महीने बाद विरले ही आपके दर्शन होते हैं।

- मैं मानती हूं कि आपने नाम सुझाये ... इसमें खास बात यही थी कि मुझे लगा आपको इसमें खुशी मिलेगी।

- थैंक्स लेकिन मोहतरमा, खुशी तो तब मिलती जब उसे जाहिर करने के मौके मिलते। आप तो एक सिरे से ही गायब हो गयीं!!

- लेकिन आपको भी तो इससे उतनी ही खुशी मिली होगी?

- पहले एग्जाम की तैयारी, फिर एग्जाम और एग्जाम के बाद कुछ दिन आराम..फिर जॉब के लिए भागदौड़..।

- आपके ये तर्क स्वीकार्य नहीं।

- आज आपकी स्टेटस अपडेट देखी.. लगा कि आप ऑनलाइन हैं।

- थैंक्स छवि।

- सच तो है कि मैं फेसबुक पर मुश्किल से ही किसी से बात करती हूं। पता नहीं आपसे..

- जी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मेरे मित्रों की सूची बहुत छोटी है। आप देख सकते हैं।
- हां देखी हैं। फेसबुक पर लगभग बारह करोड़ भारतीय हैं और आपके कुल 11 मित्र और म्युचुअल सिर्फ तीन।
- और संवाद सिर्फ आपसे। हाहा!!
- सिर्फ 11 मित्रों के सहारे आप फेसबुक पर इतना समय कैसे गुज़ार लेती हैं।
- देख लें कि हम कितने संतोषी जीव हैं। आपने तो शायद 4500 तोते पाले हुए हैं।
- तोते और तोतियां दोनों ही। उनमें से एक आप।
- आप ही अकेले हैं जिनसे दूसरी तीसरी बार बात हो रही है।
- जी!
- एक सुमित सर हैं जिनसे बात हुई है।
- थैंक्स दोबारा कहना होगा क्या? चलो माने लेते हैं!
- हिंदी टाइपिंग में तकलीफ होती है। आप कैसे कर लेते हैं।
- अभ्यास की बात है। आ जायेगी। वैसे भी अभिव्यक्ति मायने रखती है, भाषा नहीं।
- यहां तो दोनों के ही लाले पड़े हुए हैं।
- एक बात बतायें। आप अपने आपको एक वंडरफुल महिला मानती हैं या साधारण महिला??

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- माने!

- आपको अपनी शक्तियों पर पूरा भरोसा है कि आप किसी भी हालत का मुकाबला कर सकती हैं।

- क्या आप अपनी बात को आसान शब्दों में समझा सकते हैं कि आप कहना क्या चाहते हैं।

- क्या आपको अपनी ताकत पर भरोसा है? क्या आप अपने आपको किसी भी हालत का मुकाबला करने में योग्य पाती हैं?

- किसी भी हालत में.... जैसे?

- कोई ट्रिकी सिचुएशन जिसमें आम तौर पर लोग हाथ खड़े कर देते हैं कि ये मेरे बस का काम नहीं। इस तरह की स्थिति। क्या आप ऐसी हालत में आगे आ कर चुनौती ले सकती हैं?

- ...

- आप हैं क्या छवि?

- मेरी ज़िंदगी का निचोड़ ये है कि मैं एक बहुत ही छोटे से शहर में रहती हूं.. संयुक्त परिवार! शादी के पहले भी और शादी के बाद भी। ...और उतने ही छोटे शहर में बाइस बरस गुज़ारे। बेशक पढ़ लिख ली लेकिन मेरी या किसी छोटे शहर में रहने वाली मेरे जैसी लड़की की ज़िंदगी में कुछ रोमांचकारी घट ही नहीं सकता। हम इतने प्रोटैक्टेड माहौल में रहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हममम।

- हां चोरी चोरी इश्क करने और उसका भांडा फूट जाने के सिवा हमारे यहां कुछ भी रोमांचकारी नहीं होता। और वह हमने किया नहीं।

- बताती चलें।

- इसलिए किसी ट्रेनिंग या चैलेंज की ज़रूरत नहीं पड़ती। न ज़िंदगी ही कोई डिमांड रखती है। न ऐसी हालत ही आती है हमारे सामने पूरी ज़िंदगी।

- आपके लिए फेसबुक?

...

- लड़की के लिए आज़ादी?

- जो भी है अपने बलबूते पर अपनी खुशी के लिए और अपनी चहारदीवारी के भीतर।

- और

- थकान हो रही है.......जाने की अनुमति मिलेगी?

- एक प्रॉमिस के साथ।

- जी कहें।

- अगली चैट में आप बतायेंगी कि आपके या किसी छोटे शहर में रहने वाली आपके लिए फेसबुक क्या मायने रखता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025
- आप ही ऑनलाइन नहीं दिखते। मैं कैसे कह सकती हूं।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपको बताया था मेरा लैपटॉप कम ही बंद होता है। आप कब मिलियेगा?

- मुझे क्या पता .....आपकी किस्मत कब अच्छी होगी दोबारा......हाहा....चलें खूब नींद लें आप। जितनी बची है रात उसके लिए नींद की कामना। बाय!

- ठीक है यही सही बाबा राह देखेगा। छवि गहरी नींद पाओ।

- जितनी बची है....ज़िंदगी ..उसे जीने के लिए कामना।

- थैंक्स एंड बाय।

- बाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

08/28/2014 9.21 AM

- नेट के मार्क्स आ गये हैं।
- कितने आये?
- बताये जा सकते हैं। पहले में 70%.....दूसरे में 48%....तीसरे में 40 %
- अच्छा!
- जबकि पहले में 40....दूसरे में 40.....तीसरे में 50...चाहिये थे।
- ओह!
- तीसरे में हम लुढक गये।
- खराब हुआ। क्या एक पेपर दोबारा देने से चलेगा या तीनों के लिए दोबारा बैठना होगा?
- नहीं, सभी पेपर दोबारा देने होंगे। चिंता नको। फिर सही। ज्यादा तैयारी के साथ। इस बार पता तो चल गया कि हम दे सकते हैं।
- आपके बारे में अच्छी बात है कि आप पॉजिटिव हैं।
- हां मैं बी पॉजिटिव हूं।
- उसके लिए एक्स्ट्रा अंक मिलेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हाहा, वैसे आपसे खूब निभ रही है। इसी के एक्स्ट्रा अंक मिलने चाहिये!
- बेशक, दस में से पंद्रह बीस जितने अंक चाहें, ले लें।
- मैं इतनी अच्छी हूं कि सबसे निभ जाती है। बस, सामने वाले को भी मेरे जितना ही अच्छा होना चाहिये।
- मतलब मुझे आपके जितना अच्छा बनना पड़ेगा?
- वे सचमुच लकी होते हैं मैं जिनका ख्याल रखती हूं!
- सच!
- लेकिन आप उन खुशनसीबों में से एक कभी नहीं हो पायेंगे। सो सैड!
- बनने से भी क्या हो जाने वाला है.......मैं अपने घर में भला। आप अपने घर में। आपकी सूची में से अपना नाम वापिस लेता हूं।
- अगर सच में हो अच्छे तो बनने की ज़रूरत नहीं।
- आप जानती हैं कि मैं अपने साथ अच्छा होने के सर्टिफिकेट लिये लिये नहीं घूमता!
- ठीक है, मेरे पास तो हैं सर्टिफिकेट हाहा!
- मैं और मेरे शब्द।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

09/03/2014 4.30 PM

- मुझे पता था सर, आप आसपास हैं।
- कैसी हैं?
- अच्छी हूं।
- छवि आप सामने तो आती नहीं। पता नहीं बात क्यों नहीं करना चाहतीं।
- फोन आ गया था।
- कैसा चल रहा है जीवन छवि?
- वही सब कुछ पुरानापन लिये।
- ऐसा क्यों सोचती हैं?
- लगता है सारे शब्द और भाव किसी ने छीन लिये हैं।
- ऐसा न कहें मित्र। हमें कहते, हम अपने सारे शब्द आपको भेंट कर देते। भाव बेशक आपको भरने पड़ते।
- सावन की रिमझिम फुहारों का मौसम।

  लो फिर आ गया उनकी यादों का मौसम।
- हां, अब हुई ना बात।
- आप मुझे कुछ अच्छा पढ़ने के लिए भेज सकते हैं?
- अपना सही ईमेल आइडी दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- ये रहा। नया बनाया है। आपसे कुछ अच्छा अच्छा साहित्य पाने के लिए।

- कुछ ईबुक्स भेज रहा हूं।

- ...

- आप चुप क्यों हो जाती हैं बीच बीच में। पहुंचीं कहानियों की किताबें और मेरी एक कविता आपके नये ईमेल आइडी पर?

- देखती हूं।

- जी।

- वाह, क्या तो पंक्तियां हैं

क्या पता
कोई खोया कलगीदार सिक्का खुशियों भरा
छपाक से हमारी गोद में आ गिरे
उम्र की गुल्लक से

- अच्छा लगा कि आपको अच्छी लगी।

- सुंदर कविता। आपने आज मुझे बहुत अमीर कर दिया। कई दिन के लिए खजाना मिल गया। एक बात और, सर..

- जी?

- मुझे क्या करना चाहिये? क्या.. सलाह दे सकते हैं?

- पहले तो बात करनी चाहिये मुझसे। तभी बता पाऊंगा ना।

- जी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- पता तो चले कि किस बारे में पूछ रही है?

- लिखने के बारे में पूछ रही हूं।

- मन में क्या लिखने की इच्छा होती है? कविता, कहानी, डायरी, शायरी? आप बतायेंगी तभी कुछ कह पाऊंगा।

- पंख नहीं हैं और उड़ना चाहता है.....

दिल ना जाने क्या क्या होना चाहता है।

- भटकाओ नहीं अपने आपको। लेखन निरंतर अभ्यास मांगता है, रोज़ लिखने की मेज पर बैठो। संगीत के रियाज़ की तरह।

- और?

- एक खूबसूरत डायरी और उससे भी खूबसूरत पैन लो।

- फिर?

- जो भी मन में आये लिखती चलो। उस पर तारीख ज़रूर डालो।

- और?

- समय निकाल कर पढ़ो भी।

- कुछ सुझायें।

- www.gadyakosh.com या www.hindisamay.com पर हिंदी का श्रेष्ठ साहित्य है। कई साइट्स हैं जो घर बैठे आपको सब कुछ देंगी। विकीपीडिया तो है ही। कई पत्रिकाएं हैं जो ऑनलाइन हैं। इनके अलावा कई ऑनलाइन

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्रिकाएं हैं। सब पढ़ो, लेकिन जो भी मन में आता है, लिखो ज़रूर।

- जी, जो आज्ञा।

- लिख कर उसे फेसबुक पर पोस्ट करने की हड़बड़ी मत करो।

- जी।

- सब ऐसे ही लिखना शुरू करते हैं।

- अब तो फेसबुक पर अनाप शनाप डालने का सिलसिला बंद है। जब से आपने कहा ....उसके बाद से।

- कहानी के अनुवाद का क्या हुआ?

- नहीं कर पायी। जॉब के सिलसिले में बहुत परेशान हूं।

- जॉब मिल गया तो क्या होगा। पहले ही ये हाल है तो... ?

- नहीं जानती। रास्ता नहीं सूझता। छटपटाहट है लेकिन पता नहीं ये सब क्या चल रहा है।

- जॉब 24 घंटे का नहीं होता, अपने लिए और अपनी पसंद के कामों के लिए समय निकालें, रात को जागें।

- जी।

- फेसबुक पर कम बैठें। अपने आप को एक्सप्रेस ज्यादा करें।

- ओके।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अगर आप में लिखने की छटपटाहट है तो ज़रूर लिख पाएंगी।

- जी।

- बस, लिखना खुद होगा।

- लेकिन लिखने का फायदा क्या?

- अगर फायदा ही पूछना था तो फिर सारे सवाल ही क्यों?

- ये भी सही है।

- अगर आज मैं लेखक हूं तो बहुत सुकून मिलता है। घुटन नहीं होती। कभी अकेलापन या खालीपन नहीं होता।

- और?

- देखो छवि, सरल भाषा में बताऊं तो आम तौर पर सोचने समझने वाला आदमी तीन इच्छाएं रखता है। बेहतर जीवन यापन की, अभिव्यक्ति की और मान्यता की। यानी जो कुछ हम कर रहे हैं वह हमारी पहचान बने। बस, सारी जद्दोजहद अभिव्यक्ति का माध्यम तलाशने की और उसे मान्यता मिलने की है। अपने आपको अभिव्यक्त कर लेने का माध्यम मिल जाना बहुत सुख देता है।

- सही कहा देव। माध्यम कैसे तलाशें?

- लेखक बनना है तो लिखें। खूब लिखें। डायरी लिखने से शुरुआत करें। डायरी में लिखे और बाद में रचना के रूप में छपे शब्द बहुत सुख देते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- और?

- दुनिया को देखने का नज़रिया बदलता है।

- मतलब ये सब थैराप्यूटिक होता है?

- आप के पास तो भाषाओं का ज्ञान है। एक्सप्रेशन आसान होना चाहिये।

- हममम।

- आज पहला पन्ना लिखें, फिर बतायें।

- शुरू हो गया थैराप्यूटिक असर। वैसे मैंने ये सब पहले भी महसूस किया है।

- कैसा था?

- खूबसूरत, लेकिन टिक कर काम नहीं कर पायी।

- आपको सचमुच कन्स्नट्रेट करने की ज़रूरत है जबकि आप कई बार मेडिटेशन की, ध्यान की बात करती हैं।

- उसी बात की तो मुझमें कमी है। अपनी ऊर्जा को चैनलाइज नहीं कर पाती।

- पता है कलाम साहब इस बारे में क्या कहते हैं?

- जी?

- जिन्हें सपने देखने होते हैं उनके लिए रात छोटी होती है। और जिन्हें सपने पूरे करने होते हैं उनके लिए दिन छोटा होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- वाह। बहुत अच्छी बात कही है।

- नेट।

- नेट का रिजल्ट तो बताया था न?

- अरे मैं कह रहा था कि नेट तकलीफ दे रहा है।

- ओह ओके बाय फार नाउ।

- अन्यथा न लें तो मैं ये कहना चाह रहा था कि आप फेसबुक पर होती हैं तो किसी को पता नहीं होता इसलिए कोई आपसे बात तभी कर सकता है जब आप चाहें और जब तक मनपसंद व्यक्ति न मिले आप इंतज़ार करती होंगी। वैसे भी आपके पास 11 खिलाड़ियों की टीम ही तो है। ये सारा समय आप लिखने पढ़ने में लगायें। कम्प्यूटर पर हिंदी में टाइप करना सीखें। फेसबुक पर रहते हुए भी आप कर्मलीन रह सकती हैं। हिंदी में टाइप करने का अभ्यास भी होता रहेगा। शुभस्य शीघ्रम।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10/01/2014 11.37 am

- हैलो, कैसे हैं सर?
- कैसी हो छवि?
- f9
- मेरी बात पढ़ी थी क्या?
- हां
- क्या कहता है मन?
- छीन लो ये शब्द मुझको मौन चाहिये
  मन को भी नहीं मालूम कि मुझको कौन चाहिये?
- ठीक है हम शब्द नहीं छीनेंगे, बेशक मौन का उपहार देंगे, लेकिन संवाद के दरवाजे खुले रखना। बेशक झिर्री भर जगह हो। हाहा।
- जी, जब भी लिखती हूं उसी दुनिया में रह जाती हूं। बाहर आना या बैलेंस बनाना मुश्किल हो जाता है। और ये बात मेरे परिवार के हित में नहीं जाती। जानते हैं, मेरा माहौल मुझे अकेले रहने की, अपनी खुद की दुनिया में खो जाने की इजाज़त ही नहीं देता।
- मेरे पास इस बचकाने तर्क का जवाब नहीं। कभी तो अपने परिवार की इतनी तारीफ करती हैं कि आप दुनिया के

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सबसे सुखी परिवार में रह रही हैं और कभी कोसती हैं कि आपको मनमाफिक अकेलापन नहीं मिलता। आप सबके बीच रह कर भी अकेले हो सकते हैं। अपने लिए कोने तलाशें। मिलेंगे फुर्सत के पल अपने लिए। चाहें तो।

- ये तर्क नहीं था। बचकाना तो बिलकुल नहीं।

- आप सबके लिए 24 घंटे दें समझ में आता है। अपने लिए एक पल भी नहीं आपके पास, ये समझ में नहीं आता।

- मैं हर समय व्यस्त रहती हूं बिना काम के।

- ये सारी दुनिया की समस्या है कि जो लोग कोई काम नहीं कर रहे होते, वे सबसे ज्यादा बिजी होते हैं और जो पहले से बिजी होते हैं वे अपनी पसंद के कामों के लिए समय निकाल ही लेते हैं। मेरा ये मानना है और आपसे कह भी चुका हूं कि अपनी पसंद के कामों के लिए समय चुराना पड़ता है।

- इससे इनकार नहीं लेकिन...।

- कोई आपके लिए नहीं जी रहा तो आप ही इस खुशफहमी में क्यों रहें कि आपको परिवार में सबके लिए जीना है। मैं नहीं मानता कि आप हर समय बिजी हैं और खुद के लिए समय नहीं।

- हममम

- फेसबुक का समय कहां से आता है? खुद को पहचानें और संवारें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मुझे बिलकुल हैरानी नहीं हुई......मुझे पूरा विश्वास था कि आपका अगला तर्क ये होगा कि फेसबुक का समय कहां से आता है?

- आयम सॉरी, शायद हम इस बात पर संवाद नहीं कर पायेंगे।

- नहीं....हम बात करेंगे.....हम ही कर सकते हैं.. और अभी कर सकते हैं। दरअसल..।

- शायद मैं अपनी सीमा लांघ गया था।

- ऐसी बात नहीं है। ये तो आपका बहुत ही nice gesture...था। very caring it was।

- मैं अपने लिए तो कुछ नहीं कर रहा था। सिर्फ एक संभावनाशील रचनाकार को प्रेरित ही कर रहा था। और वो भी आपके पूछे जाने पर कि कैसे करूं?

- मैं समझ सकती हूं। ओके, आपने फेसबुक की बात कही है तो आप जानना चाहते थे ना कि फेसबुक मेरे लिए या मेरे जैसी उन लाखों लड़कियों के लिए क्या है जिनके पास अपने आपको हलका करने या शेयर करने या अपनी बात कहने सुनने का अब तक कोई भी जरिया नहीं था।

- ज़रूर जानना चाहूंगा।

- अपना दिन न खराब करें। थोड़ी देर में बात करती हूं। तब तक आपको ओशो का ये लिंक भेज रही हूं। ध्यान से सुनें। बेचैन मैं हूं, ध्यान का मंत्र आपको भेज रही हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
www.youtube.com/watch?v=VGCqJOY5Euo&list=PLI evniKONJbmdOprZG33eOnp-vsZFxY5r

- इट्स ओके। थैंक्स। सुनता हूं।

- फेसबुक पर थोड़ी देर में बात करती हूं। सच कहूं तो आपसे बात करने में हमेशा मुझे असीम सुख मिलता है। जानती हूं मेरा दिन बेहतर गुज़रेगा आज। घर में पूजा है....4 बजे। खीर बना रही हूं किचन में .... ।

- वाह।

- 4 मेहमान एटेंड कर चुकी। पिछले आधे घंटे में।

- माने?

- मेहमान माने मेहमान। और क्या?

- समझा

- जाना होगा। सासू मां पुकार रही हैं।

- ओके, टेक केयर।

- जा नहीं रही। पूरी बात सुनो पहले।

- बोलो।

- क्या मेरे लिए ये सुख की बात नहीं कि मैं फेसबुक के जरिये आप जैसे कुछ अच्छे लोगों से बात कर लेती हूं वो भी तब जब मैं अपने घर से बाहर कदम भी नहीं रख पाती। सब कुछ चहारदीवारों के भीतर। और कई बार तो रसोई के भीतर। जैसे अभी हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मैं समझ सकता हूं।

- अजीब बात है ना कि चार विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट को इस संयुक्त परिवार में इस तरह की ज़िंदगी जीनी पड़ती है। अपने लिए कोई स्पेस नहीं। गुंजाइश होते हुए भी गुंजाइश नहीं।

- अजीब बात तो ये भी है कि चार विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट की शादी एक आढ़ती से होती है। मेरा कहना बुरा लग सकता है। हो सकता है ये आपके पति का खानदानी पेशा हो और वे आपके क्लास फेलो भी हो सकते हैं, आपके बराबर पढ़े लिखे हो सकते हैं लेकिन आपकी बातचीत से तो यही लगता है कि आप शादी में और परिवार में सब कुछ होते हुए भी बेचैन हैं। कुछ है जो मिसिंग है जिसकी आपको तलाश है। मैं आपके मन की पीड़ा समझ सकता हूं।

- मैं पीड़ित और वो सब नहीं हूं। लेकिन एक चीज है। इंटेलेक्चुअल ज़रूरत। उसी सेक्टर में मेरे सब खाने खाली हैं। आस पास कोई भी नहीं है जिससे अपने मन की बात कह सकूं या किसी चीज को ले कर बहस कर सकूं। आप कह सकते हैं... वही मुझे कुछ न कुछ करने, सोचने और महसूस करने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती है। लेकिन नतीजा सिफर ही रहता है। अब आप मिले हैं तो अपने आपको हलका भी कर देती हूं और अपनी बकवास से आपको परेशान भी। सॉरी सर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- पीड़ित नहीं कहा लेकिन आपने खुद ही माना कि आपकी इंटेलेक्चुअल ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही हैं। घर की भौतिक सुविधाएं इंटेलेक्चुअल ज़रूरतों की भरपाई नहीं कर पातीं। घर में कीमती सामान या चार नौकर ही सब कुछ नहीं होते। आपकी ज़रूरतें इनसे ऊपर की हैं। यही सही होगा कि अपने बौद्धिक हित और अपनी मानसिक ज़रूरतों के लिए कुछ करें।

- मैं अपने लिए इसी फ्रंट पर सॉरी महसूस करती हूं। तभी तो बार बार आपसे मदद मांगती हूं। ये अलग बात है कि मदद के लिए आपका बढ़ा हुआ हाथ भी नहीं थाम पाती।

- दुश्यंत जी की दो लाइनें हैं-

  मेरे सीने में न सही तेरे सीने में सही
  हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिये

- पूरी ग़ज़ल देंगे सर

- ये लीजिये

  हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
  इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
  आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
  शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
  हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
  हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

- आभार सर। मैं अपनी बात कहूं तो फेसबुक को ले कर कई मतभेद हो सकते हैं लेकिन मैं इसका बेहतरीन इस्तेमाल करने की कोशिश करती हूं...यानी कुछ अच्छे लोगों के साथ सम्पर्क।
- इतना बुरा नहीं है फेसबुक। सदा स्वागत।
- हम बाद में इस पर लम्बी बात करेंगे। अगर आपने फेसबुक वाला अपना लेख कहीं छपने के लिए न भेजा हो तो मेरा पाइंट ऑफ व्यू उस आर्टिकल में शामिल कर सकते हैं...। वैसे वो फाइनल हुआ क्या?
- बहुत दिन से पैंडिंग पड़ा है। उसे जल्द ही ब्रश अप करके आपकी बातें उसमें जोड़ता हूं।
- जी फिलहाल रसोई पुकार रही है। बाय।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10/01/2014 1.25 PM

- ज़िंदगी जैसी कोई सज़ा ही नहीं,
  गुनाह क्या है पता भी नहीं।
  इतने हिस्सों में बंट गया हूं मैं .....
  मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं

- जी

- किसने कहा है पता नहीं, लेकिन सही लिखा है!

- मीनाकुमारी की चार लाइनें दे रहा हूं-

  टुकड़े टुकड़े दिन बीता, धज्जी धज्जी रात मिली।
  जिसका जितना आंचल था, उतनी ही सौगात मिली।

  जब चाहा दिल को समझें, हँसने की आवाज सुनी।
  जैसे कोई कहता हो लो, फिर तुमको अब मात मिली।
  बातें कैसी घातें क्या, चलते रहना आठ पहर।
  दिल सा साथी जब पाया, बेचैनी भी साथ मिली।

- बहुत अच्छी है। थैंक्स। अब जाना ही होगा ....बाय!

- बाय। नाइस डे एंड नाइस खीर!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10/01/2104 10.43 pm

- हैलो, आप हैं क्या सर?
- हां कहें!
- अभी भी काम निपटा नहीं है ठीक से!
- खीर खायी?
- हां!
- कितने आदमी थे मेहमान के रूप में कद्रदान के जिम्मे?
- 60 महिलाएं, 20 बच्चे और दस जेंटलमेन।
- घर पर ही या मंदिर जाने के बहाने हाहाहा!
- सो जाना चाहती हूं.. अच्छी नींद चाहिये.........बाय!
- क्या आयोजन था?
- घर पर ही!
- बाय नींद लीजिये!
- यहां हर दिन किसी न किसी देवता या देवी का जन्मदिन होता है या विवाह प्रसंग...... !
- बापा रे, निपट गया!
- और साथ में मेरे ससुर साहब का जनम दिन।
- ग्रेट कम्बीनेशन, ओके और आपकी भूमिका!

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आयोजक की।

- खूब बिजी रही होंगी?

- बहुत तारीफ कर सकती हूं अपनी....लेकिन अभी नींददददददददददददददददददददददददद!

- लीजिये ना!

- बाय देव!

- छवि जाओ आराम करो।

- गुड नाइट!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10/22/2014 03.01 AM

- सर, आप मेरे लिए और मेरे जैसी लड़कियों के लिए फेसबुक के मायने जानना चाह रहे थे। मैं कब से टाल रही थी लेकिन आज अपनी बात कह ही देती हूं। इस समय रात के तीन बजे हैं और तय है आप ऑनलाइन नहीं होंगे! वैसे कुछ भरोसा नहीं मेरे ऑनलाइन होने की खुशबू आप तक पहुंचे और जनाब खट से सामने आ जायें। लेकिन मैं ये सारी बातें लिख कर आपके मैसेज बॉक्स में डालने वाली हूं। आप खटखट करेंगे तो भी जवाब नहीं देने वाली। यहां भी तो आप ही की बात का जवाब दे रही हूं।

आप शायद जानते होंगे कि पूरे उत्तर भारत में छोटे शहरों में और कस्बों में मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग की आम लड़कियों की पारिवारिक आज़ादी का आलम क्या है। बाकी जगहों के बारे में नहीं जानती इसलिए कह नहीं सकती। यहां आज़ादी के नाम पर उनके हिस्से में कुछ नहीं आता। न घर के अंदर, न घर के बाहर। पढ़ी लिखी होने के बावजूद उन्हें न कुछ कहने की आज़ादी मिलती है न कुछ करने की। और न कुछ जानने की ही। आप सर्वे करके देख लें, उन्हें अपने घर और स्कूल या कॉलेज के रास्ते के अलावा शहर के दो रास्तों की भी जानकारी नहीं होगी। हर तरह की बंदिशें हैं। कई घरों में लड़कियों को नॉन वेज

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
यहां तक कि अंडा भी खाने की अनुमति नहीं है। हां, पुरुष कुछ भी खा पी सकते हैं। सिर्फ धर्म की आड़ में। भाई बेशक सारे ऐश करे, सिनेमा जाये, हर तरह की किताबें पढ़े, सिगरेट पीये, शराब पीये या आवारागर्दी करे, बहन के लिए ये सब कुछ आउट ऑफ कोर्स है। वे कहीं अकेली कहीं जा नहीं सकतीं। सिनेमा या पार्क तो बहुत दूर की बात है, चाट खाने या अपनी ज़रूरत की चीजें खरीदने जाने के लिए भी उसे किसी सहेली या घर के किसी पुरुष को साथ ले जाना पड़ता है चाहे वह पुरुष आठ साल का बच्चा ही क्यों न हो। वह बच्चा अपने से पंद्रह बीस बरस बड़ी लड़की की रक्षा करने में सक्षम माना जाता है। लड़की का भाई कभी भी कहीं भी आ जा सकता है और कुछ भी करने के लिए आज़ाद है लेकिन बहन या लड़की के हिस्से में आज भी कोई आज़ादी नहीं आती। वह बाहर के अपने हर कामों के लिए किसी न किसी पुरुष पर निर्भर रहने के लिए अभिशप्त है। उसका सगा भाई चाहे छोटा हो या बड़ा, उसका सबसे बड़ा पहरेदार, दुश्मन और संरक्षक होता है। भाई की अनुमति या सहमति के बिना वह कुछ नहीं कर सकती।

उसकी आज़ादी के लिए पहली झिर्री खोली थी मोबाइल ने। एक ताज़ा हवा के झोंके की तरह आया था मोबाइल उसकी ज़िंदगी में। बेशक मोबाइल से एक वक्त में एक से और वह भी किसी परिचित से बात हो पाती थी लेकिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदियों से चली आ रही बंद कमरे में खुलने वाली झिर्री बहुत बड़ी रौशनी का पैगाम ले कर आयी थी, लेकिन मोबाइल ने घर के भीतर रहते हुए भी, बेशक लोकल ही सही, बाहर की दुनिया से संवाद करने, अपनी बात कहने, अपने प्रेम का इज़हार करने का एक नायाब तोहफा तो दिया था। बेशक इसे गुप्त रखने, मैसेज डिलिट करने या इसका अतिरिक्त खर्चा उठाने के लिए उन्हें दस तरह के जतन करने पड़ते थे। झूठ बोलने पड़ते थे और कई बार मोबाइल रिचार्ज करवाने के लिए अपने पुरुष मित्र के आगे ही हाथ फैलाना पड़ता था। बेशक ये सिलसिला आज भी थमा नहीं है। पहले मायके में और फिर ससुराल में यह सिलसिला अनवरत चलता ही रहता था। जो लड़कियां ख्वाब में भी किसी अनजान आदमी से, यहां तक कि भाई के या पति के दोस्त से अकेले में बात तक करने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थीं, कम से कम अपने मित्र से, चाहे वो जैसा भी हो, अपने मन की बात कहने के मौके पा कर जैसे आसमान को छू लेने लगी थीं। मोबाइल ऐसी लाखों लड़कियों और महिलाओं के लिए आज़ादी की तरफ उठाये गये पहला कदम रखने का न केवल हमराज़ था बल्कि मददगार भी था।

फेसबुक और वह भी मोबाइल पर फेसबुक उन सबके लिए आज़ादी की एक ऊंची छलांग की तरह आया। वे बहुत कम खर्च में, अब कहीं भी किसी से भी दोस्ती कर सकती

Sangamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हैं, बात कर सकती हैं, मन की बात शेयर कर सकती हैं, अपने कमरे के एकांत में, देर सबेर किसी भी समय पूरी दुनिया की गतिविधियों में शामिल हो सकती हैं। प्रेम कर सकती हैं, अपने आपको हलका कर सकती हैं, पसंद न आने पर दिन में दस बार दोस्त बदल सकती हैं और सबसे बड़ी बात, अगर चाहें तो अपनी प्राइवेसी बनाये रख सकती हैं या निजता बरकरार रख सकती हैं। वे अपने पड़ोसी से भी अपनी पहचान बताये बिना दोस्ती कर सकती हैं और तथाकथित एक्सप्रेशन और शेयरिंग का सुख पा सकती हैं।

आप कह सकते हैं कि फेसबुक उनका या सबका बहुत समय ले रहा है, फेसबुक परिवार का ताना बाना बिगाड़ रहा है या गंदगी फैला रहा है या ये कर रहा है, वो कर रहा है तो सर, कोई भी नयी चीज़ आती है तो उसके फायदे नुक्सान समझने में समय तो लगता ही है। फेसबुक हमारे जीवन में अचानक आया और आते ही हमारे जीवन में इतनी जगह घेर चुका है कि जब तक कोई इससे बेहतर और मजबूत विकल्प नहीं आ जाता, ये यहीं रहने वाला है। मैं स्वीकार करती हूं कि लड़कियां या महिलाएं इसका कहीं न कहीं गलत इस्तेमाल भी कर रही होंगी तो क्या पुरुष वर्ग इसका बेजा इस्तेमाल नहीं कर रहा क्या। अगर फेसबुक या मोबाइल के इस तरफ लड़की है तो तय है दूसरी तरफ पुरुष ही है। तो सौदा बराबरी का

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुआ ना। दो-तीन किस्से अपने ही शहर के और परिचितों के शेयर करना चाहती हूं। दोनों घटनाओं के पात्र मेरे ही कॉलेज के हैं और एक पड़ोसन है।

पहला किस्सा हमारे कॉलेज की लाइब्रेरियन मिसेज सपना अग्रवाल का है। उनके पति दूसरे कॉलेज में पढ़ाते हैं। उनका चक्कर अपनी ही शादीशुदा कलीग से बीस बरस से चल रहा है। इसके बावजूद वे सपना पर शक करते हैं और मौका तलाश कर उसका मोबाइल चेक करते हैं कि उसने दिन में किस किस से बात की। कई बार सपना पर हाथ भी उठा देते हैं। सपना ने परेशान हो कर इसका तरीका खोज लिया है। उसने अपनी बचत के पैसों से एक और मोबाइल खरीद लिया है। उसमें फेसबुक और व्हाट्सअप सब हैं। ये मोबाइल उनकी पर्सनल लाइफ के लिए है और कॉलेज के बाद उनकी ड्रावर में ही बंद रहता है।

दूसरा मामला डॉक्टर सिन्हा का है। इकॉनामिक्स की हैड का। कार उनकी है चलाते पति हैं। उनके हिस्से में स्कूटी आयी है। बैंक एकाउंट उनका है लेकिन एटीएम कार्ड उनके पति के पास है। सेलेरी का मैसेज पति के मोबाइल पर आता है। उन्हें पता ही नहीं होता कि कितनी सेलरी आयी। यहां तक कि उन्हें अपना मोबाइल चार्ज कराने के लिए कई बार अपने पति या बेटे से कहना पड़ता है।

तीसरा किस्सा और भी विचित्र है। हमारे पड़ोस में मिसेज आचार्य रहती हैं। बड़े बच्चों के साथ। पति कहीं असम की

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तरफ नौकरी करते हैं। साल में दो बार आते हैं। वे खुद डबल एमए हैं और एक सुधार गृह में हफ्ते में चार बार बच्चों की काउंसलिंग करने के लिए जाती हैं। उनकी तकलीफ ये है कि उन्हें अपने हर मूवमेंट की रिपोर्ट फोन पर अपने पति को देनी पड़ती है। घर पर कौन आया, कितनी देर बैठा, वे खुद किस किस से मिलीं, सब लॉग बुक भरने की तरह पति को बताना पड़ता है। यहां तक कि पति महोदय इस बात के लिए भी मिसेज आचार्य से जवाब तलब करते हैं कि रात को उनका मोबाइल लगातार इंगेज क्यों आ रहा था। इतनी रात गये वे किससे बात कर रही थीं। सीसीटीवी कैमरे की तरह वे हर समय पति की निगरानी में रहती हैं। वे इस लगातार निगरानी से इतनी आतंकित रहती हैं कि अब उन्हें लगने लगा है कि कहीं यस सर यस सर की तर्ज पर लगातार रिपोर्ट देते देते वे कहीं खुद पागल न हो जायें।

मेरे ख्याल से इन तीन किस्सों के बाद कुछ और कहने की गुंजाइश नहीं बचती कि हमारे लिए आज़ादी की खिड़की आज भी कितनी खुलती है।

जहां तक मेरी बात है मैंने ये आज़ादी कुछ हद तक हासिल की है। कुछ अपनी पढ़ाई, आत्म विश्वास के बलबूते पर और कुछ सुरिंदर का सहयोग और समर्थन पा कर। मुझे घर पर और अपनी सोसाइटी में पूरा स्पेस मिला हुआ है। मैं आपको बता ही चुकी हूं कि मैं फेसबुक

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को अपना बेहतरीन गोपनीय दोस्त, बेहतरीन टाइम पास और बेहतरीन गाइड मानती हूं। मैं बेशक यहां ऑफ लाइन ही रहती हूं, बहुत थोड़े से, गिने चुने दोस्तों से ही बात करती हूं। फोन पर सिर्फ आपसे। आपने मेरे लिए अपने और दूसरों के बेहतरीन साहित्य के दरवाजे खोले, मेरे साथ यादगार संगीत शेयर किया और सबसे बड़ी बात मेरे मन में जीवन के प्रति आस्था जगायी। ऐसा नहीं था कि मैं फेसबुक से पहले जीवन नहीं जी रही थी, लेकिन फेसबुक पर आने के बाद पता चला कि मैं अपने बारे में और अपने आसपास की दुनिया के बारे में कितने फालतू के भ्रम पाले हुए थी। थैंक्स सर फॉर ऑल द नाइस थिंग्स यू शेयर्ड विद मी। पहले घर की चहारदीवारी तक ही मेरी दुनिया सीमित थी, अब दुनिया का ओर छोर नज़र नहीं आता। मैं पहले की तुलना में अपने आपको बहुत अमीर महसूस करती हूं।

फेसबुक के बारे में आपने अपनी वॉल पर जो टिप्पणी लिखी है उसे पढ़ कर मैं देर तक हंसती रही। आप भी ना... क्या तो लिखा है आपने.. हमारे देश में बहुत सी असंतुष्ट और अतृप्त आत्माएं रहती हैं। फेसबुक ऐसी असंतुष्ट और अतृप्त आत्माओं की भावनात्मक शरणस्थली है। ऐसी ज्यादातर आत्माएं यहां एक मजबूत कंधा तलाश रही हैं ताकि अपना सिर कुछ देर के लिए टिका सकें।

Sagamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन डरती भी हूं कि कंधा देने वाला कहीं पीठ पर हाथ न फेरने लग जाये।

मैं इस रोचक पोस्ट के बारे में आपसे बाद में अलग से बात करूंगी।

अभी इतना ही। नींद आ रही है। अपने इस भाषण के साथ आपके लिए किशोरी अमोनकर के गाये कबीर के एक बहुत मधुर पद - घट घट पंछी बोलता का लिंक भेज रही हूं।

https://www.youtube.com/watch?v=OFxsQ762rpwI

मैं पिछले तीन घंटे से इसे बार बार सुन रही हूं। मन ही नहीं भरता। ओके बॉस गुड नाइट।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11/28/2014 11.37 PM

- हैलो सर!
- विदा मित्र, फेसबुक से मैं विदा ले रहा हूं। फेसबुक ने बहुत कुछ दिया। ढेर सारे अनुभव, आप जैसे दोस्त और दुनिया को देखने का एक नया नज़रिया। लेकिन फेसबुक के चक्कर में लिखना-पढ़ना छूटता जा रहा है। अब सारा समय लिखने में लगाऊंगा। अब आप मुझसे ईमेल से ही संवाद कर पायेंगे।
- कॉपी पेस्ट किया है मेरे बॉक्स में हाहा!! सत श्री अकाल कॉपी टू ऑल। अच्छा है।
- नहीं छवि, मुझे लगा मैं यहां समय बरबाद कर रहा हूं। अब कुछ नया लिखना है।
- चलो, मुझसे बात करके कुछ तो समझ में आया।
- वेलकम डीयर।
- कितना इंतजार कराते हैं आप?
- जी, अब आराम से फेसबुक छोड़ सकता हूं!
- जैसे मेरे लिए ही सांस अटकी हुई थी!
- छोड़ आये हम वो गलियां..... !
- मेरे बारे में लिखो...अगर कुछ अच्छा लिखना है!

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

- कुछ बताओ तो लिखें छवि!

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मेरी कहानी इतनी अलग होगी देव कि आप सोच भी नहीं सकते। खुद अपनी कहानी के बारे में सोच कर मेरी रूह कांपती है!

- छवि, जीवन कई बार कहानी से ज्यादा हैरान करता है और कहानी कई बार जीवन से ज्यादा विचित्र होती है।

- कहानी या जीवन जो भी है, मेरे पास है! आप लिख दो दुनिया की सबसे बेहतरीन कहानी होगी!!

- कल दिन में सुनाना। फिर लिखने की सोचूंगा। अद्भुत जीवन की अद्भुत कहानी, छवि की जबानी!

- बेशक! जिस कन्क्लूजन पर आप इतने समय बाद पहुंचे, मुझे उसका ही डर है, आभास भी कि मेरा जीवन कागज़ पर उतारा ही नहीं जायेगा। कितनी भी लिखने की कोशिश करो, बहुत कुछ अनकहा फिर भी रह ही जायेगा।

- फिर भी तुम्हारी कहानी सुनना रोचक होगा बेशक लिखा न जाये उसे।

- मुझे कहानी सुना कर मुक्ति मिलेगी और आपको लिख कर।

- मुक्ति लिखने से नहीं मिलती छवि। कभी भी। लेखन जुनून मांगता है। मुक्ति बाद में।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आप ही ने बताया था। आप कुछ ऐसा लिखें ना जो आपको अमर कर दे। प्यार लिखें, प्यार पर लिखें, अगर कभी महसूस किया हो, ऐसा प्यार जिस पर लिखा जा सके, अमर प्यार की अमर कहानी!! प्यार पर तो हमेशा लिखा जा सकता है न देव।

- बेशक। अब भी तो लिखते हैं। प्यार पर भी और अमर होने के लिए भी। लेकिन सब कुछ इतना आसान नहीं होता। हो सकता है, आपकी कहानी मेरी राह आसान कर दे। पर मेरे लिए लिखना कभी आसान नहीं होता। लिखने की तैयारी की कोई तुलना नहीं होती।

- सच!!

- कुछ भी रचना हमेशा बहुत मुश्किल होता है रचनाकार के लिए। भीतर एक आग सी जलानी होती है और फिर उस आग के ताप में कुछ रचा जाता है।

- कहते चलें।

- कई बार लोग तुलना करते हैं कि रचने की पीड़ा या लिखने की पीड़ा प्रसव पीड़ा की तरह होती है लेकिन मैं इस तुलना से सहमत नहीं।

- क्यों देव, इस तुलना में क्या दिक्कत है। सही ही तो है कि लेखक भी उसी गहरी तकलीफ से गुजरता है जिसे एक स्त्री बच्चे को जन्म देते समय गुज़रती है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- दोनों तरह की पीड़ा में अंतर है छवि। बच्चे के जन्म की पीड़ा की मियाद अमूमन तय है। बहुत हुआ तो एकाध हफ़्ता आगे या पीछे। और यह पीड़ा भी संतान उत्पत्ति के समय ही होती है, गर्भधारण की पूरी अवधि के दौरान नहीं। बाकी का समय उस मां के लिए बहुत आनंद का, उमंग का भी हो सकता है। लेकिन कम्बख्त लेखन इतना आसान नहीं होता। जब किसी रचना के अंकुए फूटते हैं तो न तो रचना के बाहर आने की अवधि तय होती है और न मानसिक उथल पुथल की सीमा। आप जूझते रहिये रात दिन, दिनों, महीनों और कई बार बरसों लेकिन राइटर्स ब्लॉक ऐसा होता है कि आपको कुछ करने ही नहीं देता। कुछ भी लिखा नहीं जाता।

- ये राइटर्स ब्लॉक क्या होता है। सुना तो है पर इसके बारे में ज्यादा जानती नहीं।

- दरअसल थोड़ा विस्तार से बताना होगा। इस समय आप तैयार हैं क्या ये सब जानने के लिए?

- जरूर सर, ये भी कोई पूछने की बात है। आप मेरी ही तो जानकारी बढ़ा रहे हैं। आज रात थोड़ा कम सो लूंगी।

- यानी मुझे अपनी नींद को भी बाद में आने के लिए कहना होगा। खैर, इट्स ओके। दरअसल हर लेखक की अपनी खुद की दुनिया बहुत पेचीदगी भरी होती है। उसके भीतरी और बाहरी संघर्ष, उसकी कुछ खास आदतें, उसकी जीवन शैली, लिखने के लिए खुद को तैयार करने के कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नायाब तरीके, उसकी तकलीफें और कई बार उसकी जीवन शैली के हैरान कर देने वाले पक्ष होते हैं और ये हर लेखक के मामले में अलग होते हैं। लेखन एक ऐसी साधना है जिसकी अभिव्यक्ति के किसी अन्य माध्यम से तुलना नहीं की जा सकती।

- बताते चलें देव। जानना अच्छा लग रहा है।
- हर लेखक दूसरे लेखक से अलग होता है। उसकी आदतें, उसकी लिखने की शैली, उसका लेखन के लिए खुद को तैयार करना दूसरों से बिलकुल अलग होता है। यह अपने आप में एक रोचक अध्ययन है।
- नाइस।
- अब हर लेखक के जीवन में एक से अधिक बार ऐसे मौके आते हैं कि उसका लेखन बंद हो जाता है। वह सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं लिख पाता। कारण कुछ भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता। कभी शारीरिक तो कभी मानसिक। यही राइटर्स ब्लॉक होता है। कई बार बरसों तक चलता रह सकता है और कई बार एक से ज्यादा बार हमला करता है।
- इंटरेस्टिंग।
- और मजे की बात कि बेशक सभी लेखक कभी न कभी इस राइटर्स ब्लॉक से जूझते हैं लेकिन इससे पार पाने के सबके तरीके अलग अलग होते हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

- जी।
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अब कुछ लेखक तो लिखने की अपनी आदतें, सिस्टम या तरीके तय कर लेते हैं और आजीवन उनका पालन करते हैं और कुछ लेखक बहुत ही रोचक या अजीबो गरीब टोटके या सनकें पाल लेते हैं और उसी के हिसाब से काम करते हैं। मजेदार बात ये भी होती है कि लेखक बेशक राइटर्स ब्लाक से न भी जूझ रहा हो और जम के लिख रहा हो, वह अपने लेखन को ले कर कुछ वहम, कुछ सनकें और कुछ आदतें ले कर ही चलता हैं!

- अरे वाह कितना कम जानती हूं मैं लेखकों की भीतरी दुनिया के बारे में। वैसे इतना तो जानती ही हूं कि कोई भी क्रिएटिव बंदा चाहे लेखक हो, कलाकार हो या फिलास्फर हो, आधे से ज्यादा दीवाना ही होता है। अब समझ में आ रहा है कि ये दीवानगी क्यों और क्या होती है। और बताओ न देव, मैं जानती हूं आपका सोने का समय हो रहा होगा, लेकिन इतनी दिलचस्प बात छोड़ कर जाने का दिल नहीं कर रहा। मैडम की थोड़ी डांट सुन लेना और देर से सो लेना। सच, आज अपने आप पर अफसोस हो रहा है कि पहले आपसे क्यों नहीं मिली।

- ज्यादा पोल्सन लगाने की जरूरत नहीं। वैसे भी इस ब्रैंड का मक्खन बनना बंद हो चुका है।

- आप लेखकों के टोटकों के बारे में बता रहे थे देव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- पहले आदतों के बारे में बताता हूं।

- लेकिन सनकों और टोटकों के बारे में भी बताना।

- कुछ लेखक दिन के खास समय में तो कुछ आधी रात को लिखते हैं। कई लेखक एकांत में लिखते हैं तो कोई शोर शराबे में लिखता है। कई लेखक शब्द गिन कर लिखते हैं तो कुछ लेखक हर तरह के लेखन के लिए अलग रंग के कागज या स्याहियां चुनते हैं। कई ऐसे भी लेखक रहे जो खड़े हो कर या लेट कर लिखते थे। कोई लेखक पहाड़ पर जा कर ही लिख पाता है तो कोई होटल में जा कर।

- वाह।

- ये एक बहुत ही रोचक अध्ययन है और इस बात पर भी रोशनी डालता है कि लेखक कुछ न कुछ रचते रहने या राइटर्स ब्लॉक से बचने के लिए क्या क्या जुगतें नहीं भिड़ाता।

- और बताओ ना देव।

- एक लेखक महोदय थे अलेक्जेंडर ड्यूमा। उपन्यास हरे कागज पर लिखते थे और बाकी रचनाएं दूसरे रंगों के कागजों पर। उपन्यास लिखते समय अधबीच में हरा कागज खत्म हो गया और संयोग से वे जिस जगह पर रह कर लिख रहे थे, वहां हरा कागज मिला नहीं। मजबूरन उन्हें उपन्यास का बाकी हिस्सा किसी और रंग

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के कागज पर पूरा करना पड़ा। अब उपन्यास जब छपा तो पाठकों ने नकार दिया। पहले की तरह वाह वाही नहीं मिली। उन्होंने सारा दोष कागज के रंग पर मढ़ दिया कि हरे कागज पर न लिख पाने के कारण उपन्यास उतना अच्छा नहीं लिखा गया है।

- हद है। एक बात बताओ देव, ये सनकें और आदतें क्या दुनिया भर के लेखकों की हैं या भारतीय लेखक ही टोटके बाज होते हैं।

- छवि, एक बहुत बड़ा संकट है कि हम अपने ही लेखकों की लिखने की आदतों और सनकों के बारे में बहुत कम जानते हैं। वे बताते ही नहीं। हम लेखकों के जितने भी अजीबो गरीब किस्से जानते हैं वे सब दुनिया भर के लेखकों के हैं।

- यानी टोटकों और सनकों पर हमारा कापीराइट नहीं है।

- एक लेखक हुए हैं शिल्लर। वे अपनी जेब में सड़ा हुआ सेब रख कर लिखते थे। अर्नेस्ट हेमिंग्वे, चार्ल्स डिकेंस, वर्जीनिया वुल्फ, लेविस कैरोल और फिलिप रोथ, आचार्य नगेन्द्र और अपने हरिवंश राय बच्चन कभी-कभी खड़े होकर लिखते या टाइप करते थे।

- ग्रेट और..।

- यार, नींद आ रही है। बहुत लंबी सूची है। बताते बताते सुबह हो जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- प्लीजजजजजजजज। कुछ तो किस्से बताओ। सामने होते तो शानदार फलूदे वाली कुल्फी खिलाती। हमारे मोहल्ले के टोपन दास की फलूदा कुल्फी बहुत मशहूर है। रात एक बजे तक खुली रहती है उसकी दुकान।

- अच्छा तो लालच दे रही हो ई कुल्फी का। बस कुछ ही लेखकों के बारे में बताऊंगा।

- डन।

- आगाथा क्रिस्टी अपने उपन्यासों के लिए कत्ल के प्लॉट सोचने के लिए बाथ टब में बैठ कर सेब कुतरा करती थीं। जॉर्ज आर्वेल, मार्क ट्वेन, एडिथ वार्टन, विंस्टन चर्चिल और मार्सेल प्रोउस्ट आदि लेखक अपना अधिकतर लेखन बिस्तर में लेट कर ही करते थे।

- एक थे ट्र्युमैन कपोते। वे पीठ के बल लेट कर लिखते थे। वे अपना कोई भी काम शुक्रवार को शुरू नहीं कर पाते थे। उन्हें तीन तेरह से नफरत थी। वे ऐशट्रे में सिगरेट के तीन टोटों से ज्यादा कभी नहीं छोड़ते थे। अगर टोटे ज्यादा हो जायें तो अपने कोट की जेब में ठूंस लेते।

- कमाल है। मैं समझती थी कि इस तरह के झक्की हम ही होते हैं। जैसे होटलों में तेरह नंबर की मंजिल न होना।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जी हां, एक एयरलाइंस के जहाजों में तेरह नंबर की कतार ही नहीं है।

- देव, लेखकों की झक्कीपने की बात चल रही थी।

- हमारे एक कवि शुरू शुरू में शहतूत के पेड़ पर बैठ कर कविता लिखते थे। राही मासूम रज़ा अपने घर पर ही, बच्चों के शोर शराबे के बीच ही लिख पाते थे। पंजाबी कहानीकार नानक सिंह गरीबी के बावजूद पहाड़ पर जाकर लिखते थे। मोहन राकेश भी पहाड़ पर जा कर लिखते थे। सर वाल्टर स्कॉट घोड़े की पीठ पर सवार हो कर कविता रचते थे। नोएल कावर्ड का ये दावा था कि वे हर सुबह टाइम्स में मृत्यु के शोक संदेशों वाला कॉलम पढ़ कर अपना दिन शुरू करते थे। अगर उसमें उनका नाम नहीं होता था तो वे काम करना शुरू कर पाते थे।

- ......

- हैंस क्रिश्चियन एंडरसन जब होटलों में ठहरते तो अपने साथ लंबी रस्सी ले कर जाते थे ताकि अगर कभी आग लग जाये तो उन्हें निकल भागने में आसानी हो। डी एच लारेंस नंगे बदन शहतूत के पेड़ों पर चढ़ जाया करते थे। इससे उनकी कल्पना शक्ति को पंख लग जाते थे। कुर्ट वोनेगट लिखने से पहले दंड बैठक लगाते थे। गैब्रियल गार्सिया मार्कवेज की मेज पर पीला गुलाब न हो, तो वे लिख नहीं पाते थे।

- और और और प्लीज। काश ये सूची कभी खत्म न हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- चार्ल्स डिकेंस को नीली स्याही से मोह था। चेखव को घड़ी सामने रखकर लिखने की आदत थी। बाल्जाक लिखते समय अपनी बगल में जलता दीप रखते थे। दोपहर की तीखी रौशनी में भी उनकी बगल में दीप जलता रहता। विजय दान देथा बिज्जी हरे रंग के काग़ज़ पर हरी स्याही से लिखते थे। चार्ल्स डिकेंस अपने साथ हमेशा एक कम्पास रखते थे। उनका यह विश्वास था कि यदि वह उत्तर दिशा में सिर रखकर नहीं सोएंगे तो उन्हें मौत उठा ले जाएगी।
- ......
- लियो टॉलस्टाय को न जाने कैसे वहम हो गया था कि वे पक्षियों की तरह हवा में उड़ सकते हैं।
- हे राम। क्या तो पिटारा खोला आपने। एक वादा करो देव..।
- अभी कुछ बाकी है क्या?
- हां देव, ये सीरीज जारी रहनी चाहिये। आप हर बार कुछ न कुछ नया बताते रहेंगे लेखकों की सनकों के बारे में।
- अब नींद का टाइम। बाय!
- बाय!

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12/03/2014 3.31 PM

- आपसे कुछ शेयर करने का मन है, समय देंगे?
- क्या नाम था उसका?
- आपको कैसे पता कि मैं..!
- अपने पहले और इकलौते प्यार में कुछ कहने वाली हूं, यही कहतीं ना आप?
- जी लेकिन आप..!
- नाम पूछा मैंने!
- चंदन। वैसे उसका घर का नाम जस्सी था।
- कब की बात है?
- एमए के दिनों की!
- आजकल कहां है?
- मेरी शादी के आसपास ही बॉम्बे चला गया था।
- आपकी शादी की वजह से या?
- कभी पूछा नहीं, शायद हां भी, शायद न भी।
- क्या करता है?
- फोटोग्राफर है वैसे एक्टर बनने गया था।
- यानी बंदा स्मार्ट है। फिर मुलाकात हुई क्या?

gamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- यही शेयर करने के लिए आपसे बात करना चाहती थी और आप ले उड़े.. !

- देखा, आपका काम आसान कर दिया। जो बातें आप बताने में 10 मिनट लगातीं, मैंने एक ही मिनट में पूछ लीं। कहिये क्या कहना चाहती थीं?

- दरअसल मैं उसे लकी मानती थी। आज भी मानती हूं। मेरा बस चलता तो उसे अपनी लाइफ से ही न जाने देना चाहती।

- बहादुर गढ़ आया हुआ है क्या और आप उससे मिलना चाहती हैं?

- हां, आपसे यही सलाह लेना चाहती थी कि मिलना चाहिये क्या मुझे?

- एक क्लास फेलो और पुराने दोस्त की तरह हां और एक पूर्व प्रेमिका की तरह नहीं।

- आपने तो दुविधा में डाल दिया!!

- आपके पति क्या कहते हैं इस मुलाकात के बारे में?

- वे सब जानते हैं और मना नहीं करेंगे!

- तो सवाल कहां उठता है?

- मैं खुद को कमज़ोर साबित नहीं करना चाहती।

- लेकिन कमज़ोर तो हैं बेशक, साबित नहीं करना चाहतीं।

- अब सब कुछ मेरे मुंह से मत कहलवाइये।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेकिन मिलना भी चाहती है। चंदन क्या सोचता है इस बारे में?

- चंदन हमेशा मिलने से बचता रहा। ही वांटेड टू एस्केप एवरी टाइम।.......कि कहीं मेरी फैमिली लाइफ बरबाद न हो जाये!!

- मीन्स अब भी इस मुलाकात की चाहत इकतरफा है।

- नहीं जी, आप गलत समझ रहे हैं!!

- ओके, आप सही बताइये, मैं सुनता हूं!!

- वह ऐसा नहीं था कभी भी!!

- फिर?

- आप सोच सकते हैं कि इतने बरसों से वो मेरे लिए प्रेयर करता रहा है। चाहे जहां भी रह रहा हो।

- और?

- अभी भी पुराने दिनों को एक साथ जीने की चाहत होती है। एक साथ क्वालिटी टाइम गुजारने का आग्रह!!

- आपकी या दोनों की?

- आप सवाल बहुत पूछते हैं। सलाह देने के बजाये...इंटरव्यू लेना शुरू कर देते हैं।

- सॉरी, लेकिन पूरी बात जाने बिना सलाह कैसे दूं। आपका मतलब है कि आपकी तरह वह भी कभी कह नहीं पाया बेशक आपको चाहता रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- कह नहीं सकती क्योंकि शादी के बाद उससे एक ही बार मुलाकात हुई और हम दोनों ही अतीत की पोटलियां खोलने से बचते रहे।

- और फोन पर बात?

- उसने कभी कोशिश नहीं की और मैं जब भी फोन करती हूं या तो वह उठाता नहीं या कोई भी पुरानी बात करने से बचता है। बहुत कम मौकों पर ही बात हो पायी है। वह भी हाल चाल पूछने तक सीमित।

- हो सकता है वह इस मुलाकात से भी बचना चाहे।

- काश कि तृप्ति होती!

- ये तृप्ति कौन थी?

- ट्रिएंगल का एक एंगल। हमारे ही ग्रुप में थी। बेहद समझदार। मैं समझती रही चंदन उसे प्यार करता है। वो भी चंदन को चाहती थी लेकिन चंदन के प्रति मेरे झुकाव को देख कर पीछे हट गयी थी।

- और चंदन?

- उसे देर तक समझ ही नहीं आया था कि उसे कौन प्यार करता है और वो खुद किसे प्यार करे!

- शानदार लव ट्रिएंगल!! और आप?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मेरी छोड़िये, ये बताइये कि क्या मुझे उससे इस हालत में मिलना चाहिये खासकर तब जबकि उसके पास कई महीनों से काम नहीं है?

- इस बात को जाने दीजिये। उस पर तरस खाने के लिए तो बिलकुल मत मिलिये। मुंबई में इस लाइन में लम्बी बेरोजगारी आम बात है। कोई भी इस बात को दिल से नहीं लगाता। आगे बताइये।

- मेरी शादी हुई। तृप्ति को कैंसर खा गयी और चंदन को बंबई की भीड़ हमेशा के लिए खा गयी।

- हममम।

- पता है आपको सर ....चंदन और मेरी कितनी बातें मिलती हैं। हमें कभी भी आपस में अपनी बात एक दूजे से नहीं कहनी पड़ती थी। बिन कहे ही समझ जाते थे।

- इसमें कुछ भी नयापन नहीं। प्रेम में ऐसा ही होता है। बल्कि इससे भी ज्यादा।

- आप भी न देव, बात को कहां से कहां ले जाते हैं।

- आपको चंदन से मिलना है और सुरिंदर जी को एतराज नहीं।

- कल मैंने इनसे पूछा था.......क्या आप मुझे उससे मिलने जाने दोगे। कहा इन्होंने हां क्यों नहीं... !

- एक बात बताओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जी

- रात को उन्हीं पलों में पूछा होगा और सुरिंदर बेचारे मना भी नहीं कर पाये होंगे।

- बताऊं क्या?

- सेंस ऑफ म्युचुअल फेथ। बनाये रखें।

- बच्चों के स्कूल की एक मैडम हैं। अनमैरिड। कल ये उसका बीएड में एडमिशन करवाने के लिए करनाल ले गये थे। अपनी कार से। मुझे अच्छा लगा। स्मार्ट है वो लड़की। लेकिन मैं अपने आदमी को जानती हूं.......!

- हाहा हाहा म्युचुअल स्पेस! अब आप मेरे कुछ सवालों का जवाब दीजिये।

- नहीं, हमारे संबंध वहां तक नहीं पहुंचे थे।

- क्या बात है। आप भी समझ गयीं कि मैं क्या पूछने वाला हूं।

- अगला सवाल।

- जब दस पंद्रह बरस पहले भी सब कुछ प्लूटानिक था यानी देह से परे था, मात्र संग साथ पाने का आकर्षण था तो ईमानदारी से बतायें कि अब क्यों मिलना चाहती हैं जबकि आप जानती हैं कि न तो वह आपकी आज की ज़िंदगी में कहीं फिट होता है और न ही आप उसे ले कर कोई भ्रम पाल सकती हैं।

Sangamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

- ऐसा है देव.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- टोको नहीं, पहले पूरी बात सुनो।

- सॉरी, कहते चलें।

- छवि, कई रिश्तों की एक्सपायरी डेट होती है। ये रिश्ते खून के भी हो सकते हैं और सामाजिक निर्वाह के भी। कई बार निजी भी। वह तारीख या मियाद निकल जाने के बाद या बीच में संवादहीनता का लंबा अरसा पसर जाने के बाद उन रिश्तों में कुछ नहीं बचता। हम चाह कर भी ऐसे रिश्तों में बाद में प्राण नहीं फूंक सकते। बहुत दिनों के गैप वाले ऐसे सूख गये रिश्तों को बाद में हम रिपेयर नहीं कर सकते।

- ज़रा समझायें।

- देखो छवि, हम जब किसी वज़ह से अपनी जगह से कहीं दूर रहने लगते हैं तो इस दूरी के कारण रिश्तों में भी एक तरह की दूरी पसर जाती है जिसे पाट पाना आसान नहीं होता। कई बार काम सध जाने के बाद भी कुछ रिश्तों में कुछ बाकी नहीं बचता तो कई बार कुछ रिश्तों ने हमें इतनी तकलीफ दी होती है कि हम उन्हें बाद में याद करना या जीना ही नहीं चाहते। ऐसे व्यक्ति के सामने पड़ जाने पर भी कतरा कर निकल जाना बेहतर समझते हैं।

- फेसबुक के रिश्तों के बारे में क्या कहते हैं प्रभु?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
- उनकी एक्सपायरी डेट तो देर सबेर आनी ही होती है छवि। बल्कि कई बार बहुत जल्दी आ जाती है।

- हां मैंने देखा है कि फेसबुक पर कई बार कोई फ्रेंड बनता है, पहली ही चैट में बहुत शानदार बात होती है लेकिन दूसरी तीसरी बार बात करने का मन ही नहीं होता। हरी बत्ती जलती देख कर भी हैलो नहीं कर पाती।

- फेसबुक में हमारे पास रिमोट होता है। ये जो चैनल बदलने की आदत होती है न, जीवन के हर काम में हम इस्तेमाल करते हैं। जो पसंद नहीं, अच्छा नहीं, उसे सामने से हटा दो। हम जीवन भर यही करते रहते हैं।

- सॉरी बट.. मैंने चंदन को कभी रिजेक्ट नहीं किया। बरसों से दूर रहने के बावजूद।

- माना। आपने अभी खुद ही कहा कि कई बरसों से उससे संवाद नहीं है। फोन वह उठाता नहीं, मुलाकात वह करता नहीं, उस पर आपको ये खुशफहमी भी है कि वह आपके लिए प्रेयर भी करता रहा है। इससे बड़ी आयरनी क्या होगी कि बंबई में एक बेरोजगार और स्ट्रग्लर फोटोग्राफर अपनी सो कॉल्ड भूतपूर्व प्रेमिका और इस समय एक खाते पीते खानदान की बहू के लिए प्रेयर करता है और दूसरी आयरनी ये कि वही भूतपूर्व प्रेमिका जिसने शायद ही कभी अपने तब के सो कॉल्ड प्रेमी का हाथ भी थामा हो, या एक साथ सिनेमा ही देखा हो, न केवल अपने पति से पूछ कर उससे मिलने जाना चाहती है बल्कि उसके साथ

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि [illegible] भी मिलना चाहती है। ऐम आइ राइट मैडम?

- देव, आपकी सारी बातें अपनी जगह पर लेकिन ये बतायें कि मुझे चंदन से मिलने जाना चाहिये या नहीं।

- इसका मतलब, शादी के इतने दिन बाद भी आप भावनात्मक तौर पर चंदन से जुडी ही हुई हैं। इकतरफा।

- मेरा इस तरह के प्यार से कभी वास्ता नहीं पड़ा जिसमें उसे या किसी को शरीर से पा लेने की चाह हो। भावनात्मक रूप से हां। सिर्फ चंदन से।

- लेकिन ..

- कभी सोच ही नहीं पायी कि कभी उससे प्यार था मुझे या आज भी है?

- हममम?

- उसे आज भी एक अहसास की तरह जीती हूं। एक बात बतायें?

- और जीती रहेंगी। अनंत काल तक। आपका अगला वाक्य यही होना चाहिये।

- क्या प्लूटानिक लव होता है? क्या ऐसा हो सकता है कि प्यार में शरीर कहीं न आयें?

- ये तो प्लूटानिक लव करने वाले ही बता सकते हैं।

- आप क्या सोचते हैं प्यार और देह के बारे में?

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
- जरूरी नहीं कि आप मुझसे सहमत हों लेकिन जो रिश्ते प्यार से शुरू होते हैं उनमें देह कभी न कभी आ सकती है लेकिन जो रिश्ते देह से शुरू होते हैं उनमें प्यार आने की संभावना नहीं के बराबर होती है। आप कुछ पूछ रही थीं चंदन से मुलाकात के बारे में?

- आपकी आज की बात के आलोक में सारे मामले पर फिर से सोचूंगी, तब इस बारे में बात करूंगी।

- सलाह लेंगी या मिलने के बाद बतायेंगी?

- बताऊं क्या?

- ओके। वैसे आपको इस पर खुद कहानी लिखनी चाहिये। तीनों के एंगल से और कहानी में तीनों ये सोचते हुए बताये जायें कि वह बाकी दो के बारे में क्या सोचता या सोचती है।

- आपबीती को जग बीती बनाना नहीं हो पायेगा।

- आप सोचें तो सही। जीवन में चंदन कैसा भी हो कहानी में चंदन आपके क्रिएशन का चंदन होगा, तभी शानदार कहानी बनेगी।

- क्या लिख पाऊंगी अपनी कहानी?

- कोशिश करने में हर्ज नहीं।

- तो मैं मिलूं चंदन से?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हां, लेकिन यह बात तो रह ही गयी कि सुरिंदर की तरफ से पूरी छूट है।

- हां बताया ना आपको, उन्हें कोई एतराज नहीं हैं। मुझे पूरी छूट है कहीं भी आने जाने की।

- और आपने भी उन्हें पूरी छूट दे रखी है। कहीं भी किसी के साथ भी आने जाने की।

- हां आपको अभी बताया ही है..।

- कि वे एक अनमैरिड खूबसूरत मैडम को बीएड में एडमिशन करवाने के लिए अपनी कार से करनाल ले गये थे।

- जी राइटर महोदय, मेरी जानकारी में और मुझे अपने पति पर पूरा भरोसा है।

- और उन्हें भी आप पर पूरा भरोसा है तभी तो सब कुछ जानते हुए भी वे आपको जस्सी से मिलने जाने दे रहे हैं।

- तो क्या हुआ। लेकिन आप सारी बात क्लीयर हो जाने के बाद इसे दोबारा क्यों उठा रहे हैं?

- मैं साफ साफ कहूंगा तो आप बुरा मान जायेंगी।

- आप कह के देखें, बुरा मानने लायक होगा तो भी मुझ नासमझ के भले के लिए ही होगा। कहें तो...

- ऐसा है छवि कि आप पतंग उड़ाना बेशक न जानती हों, दूसरों को पतंग उड़ाते जरूर देखा होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आप हमें इतना अनाड़ी न समझें। बचपन में अपनी छत पर खूब पतंगें उड़ायी हैं और दूसरों की काटी भी हैं। बस हम बहनों को ले दे कर पतंग उड़ाने की ही इजाज़त थी।

- इसका कारण भी बता दो।

- यही काम ऐसा था जिसमें घर से बाहर नहीं जाना पड़ता था और मुहल्ले में किसी से मिलने की गुंजाइश ही नहीं रहती थी। छत से जितना मर्जी मस्ती कर लो।

- दैट्स ग्रेट। तो मेरी बात आपको आसानी से समझ में आ जायेगी।

- प्रवचन शुरू करें भगवन।

- पतंग जब बहुत ऊपर चली जाती है तो हवा के रुख के साथ अपने आप ही दायें बायें इतराने लगती है। पतंग समझती है, वह अब अपनी मनमर्जी की मालिक है। बहुत ऊपर आ गयी है लेकिन पतंगबाज तब या तो डोर तेजी से खींचते हुए पतंग को और ऊपर ले जाता है या फिर पतंग को खूब ढील देता है, चरखी को दोनों हाथों में इस तरह से पकड़ कर रखता है कि मांझा अपने आप खुलता जाये और पतंग हवा के ज़ोर से और ऊपर उठती चली जाये।

- सही कहा। ढील के समय पतंग अपनी मर्जी से डोलती रहती है लेकिन इस मिसाल का जस्सी से मुलाकात का क्या संबंध है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- छवि आपने बुरा न मानने का वादा किया है इसलिए कहने में कोई हर्ज नहीं है कि ये जो मर्दों की कौम होती है ना बहुत चालू होती है। पत्नी को पूरी छूट दे कर भरमाये रखो कि वह मेरी तरफ से आज़ाद है। वह कहीं भी कभी भी किसी के साथ भी मिलने जा सकती है लेकिन उसे अच्छी तरह से पता है कि पत्नी को ढील वाली पतंग की तरह छूट दिये जाने के बाद भी पत्नी का कंट्रोल उसी के हाथ में है। पति अच्छी तरह से जानता है कि पत्नी अपने संस्कारों से, परिवार से, बच्चों से और पति की तथाकथित छूट के भरोसे से इतनी बंधी हुई है कि वह चाह कर भी कहीं नहीं जाने वाली। कितनी भी उड़ ले, आखिर उसे बांधे रहने और नीचे लाने की डोर पति के हाथ में ही है।

- तो क्या हुआ? छूट तो दी है ना।

- छूट दी नहीं है छवि, पत्नी को छलावा दे कर अपने लिए छूट हासिल कर ली है।

- ये कैसे कह सकते है?

- अपना ही मामला देख लें। आपने ही तो बताया कि एक सुंदर, स्मार्ट और युवा टीचर को...

- मुझे अपने हसबैंड पर पूरा भरोसा है। बाकी का मैं नहीं जानती।

- उन्हें भी आप पर पूरा भरोसा है कि आप लाख कोशिश करें, आज भी चंदन या किसी और के साथ अकेले रात

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिताने या अंतरंग पल बिताने के बारे में सोच भी नहीं सकतीं। आपके हसबैंड महोदय ने इसी विश्वास के बदले सौदा किया और युवा और खूबसूरत टीचर जी के साथ निकल पड़े।

- आपने आज कसम खा रखी है कि हम दोनों के बीच झगड़ा करवा के रहेंगे।

- मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं है। जब बात खुलती है तो पूरी तरह से खुलनी चाहिये। आप ही बतायें कि सारी चाहत के बावजूद अपने आपको जस्सी के आगे आज भी सरंडर कर पायेंगी।

- शायद नहीं। मेरा मन नहीं मानेगा...

- यही बात मैं आपसे कहलवाना चाहता था।

- और कुछ..।

- अभी भी आपके मन में कुछ सवाल रह गये होंगे। पूछें।

- लेकिन ऐसा भी होता ही है कि औरतें ही इस छूट का पूरा फायदा उठाती हैं तो।

- दरअसल कोई भी दो संबंध एक से नहीं होते तो तय है कि उनके जीवन की मिसालें भी अलग अलग ही होंगी। मैं कितनी ही ऐसी महिलाओं को जानता हूं जो पति या परिवार की जानकारी के बिना विवाहेतर संबंध न केवल बनाये हुए हैं, बल्कि उसे पूरी शिद्दत से निभा भी रही हैं।

- लेकिन पुरुष भी तो यही करते हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- बेशक, ऐसे भी बहुत से मामले आपको मिलेंगे जहां पति के किसी अन्य विवाहित या अविवाहित महिला से संबंध हैं और इसका पता चलने पर बदले की भावना से पत्नी भी अपने विवाहेतर संबंध विकसित कर लेती है या फिर आजीवन पारिवारिक जीवन में जहर घुलता रहता है। दोनों ही स्थितियों में परिवार टूटते हैं।
- ये सब गलत नहीं है क्या?
- जीवन में सही तो कुछ भी नहीं है। सब गलत ही गलत है। हम संबंधों में भी अपनी सुविधा ही देखते हैं। संबंधों में भी लॉ ऑफ युटिलिटी, उपयोगिता का सिद्धांत काम करता ही है। हम कई संबंध निभाते ही इसलिए हैं कि इस संबंध से कितना फायदा होने वाला है।

नॉट इक्वल टू लव

- आप भी न बात को कहां से कहां ले जाते हैं। इन सारी बातों को जानने के बाद मैं चंदन से खाक मिलने जाऊंगी। आपने अच्छा खासा मूड चौपट कर दिया।
- एक काम करें छवि, जरूर मिलने जायें। आपका कोई अहित नहीं होने वाला।
- आप कैसे कह सकते हैं।
- मैं आपके मामले में शर्त लगा कर कह सकता हूं कि आज भी आपके और चंदन के बीच प्लूटौनिक लव है। दोनों ही सेफ हैं। न चंदन को आपसे कोई खतरा है न चंदन से आपको।
- आप भी ना। अगर सामने होते तो आपकी पिटाई तय थी।
- आजकल ई का ज़माना है। ई पिटाई करके देख लें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13/03/2014 07.35 AM

- मैं आपसे बहुत बहुत बहुत नाराज़ हूं।
- ये तो बहुत अच्छी बात है। नाराज़ होना और जिससे नाराज़ हैं उसी को बताना भी ताकि मामला वहीं सुलटाया जा सके।
- आपको मज़ाक सूझ रहा है। मैं रात भर सोयी नहीं हूं। आपसे एक छोटी सी सलाह क्या मांगी, दुनिया भर के उल्टे सीधे तर्क दे कर मुझे ही गलत ठहरा दिया।
- ये बतायें आज चंदन से मिलने किस समय जा रही हैं? ड्रेस अपनी पसंद की पहनेंगी या उसकी?
- बताऊं क्या। अच्छा खासा मूड चौपट कर दिया। कान खोल कर चुन लें। कहीं नहीं जा रही मैं और ये सब आपकी वजह से हो रहा है। सुरिंदर की निगाहों में बुरी बनी सो अलग।
- महामना, हमें बतायें तो सही, हमारी खता क्या है। अच्छा हम एक काम करते हैं। चंदन का नंबर हमें दें, हम ही उसे बता देते हैं कि आप उससे मिलने आना चाहती थीं, लेकिन पैर में मोच आने के कारण नहीं आ पा रही हैं। आप ही किसी तरह मिलने चले आयें।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- खबरदार जो आपने ये हरकत की तो। उसे यही पता है कि मेरे उसके संबंध के बारे में किसी को भी नहीं पता।

- तो आप ही बतायें कि आपकी नाराज़गी भी दूर हो जाये और आप खुशी खुशी चंदन से मिलने जायें। आपका दिन अच्छा गुज़रे।

- बनो मत। आखिर ऐसा क्या है हमारे रिश्ते में कि आपने सबको लपेटते हुए वीमेन लिब पर अच्छा खासा लेक्चर पिला डाला और एक तरह से मुझे ही कटघरे में खड़ा कर दिया।

- कहती रहें।

- जैसे मैंने सबकी आज़ादी का ठेका ले रखा है। मैं अपने हिसाब से आज़ाद हूं और आज़ाद ख्यालों की भी हूं।

- जानता हूं कि आप आज़ाद भी हैं और आज़ाद ख्यालों की भी हैं, बस एक ही कमी है।

- कौन सी?

- यही कि न तो आप अपनी इस आज़ादी का लुत्फ़ उठाना जानती हैं और न अपनी आज़ाद ख्याली का। आपको आता ही नहीं। ट्राई कर के देख लें।

- चैलेंज कर रहे हैं क्या। मुझे अपनी मर्जी के काम करने से कोई रोक नहीं सकता।

- कहना आसान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

- शर्त बद लें।

- आप हार जायेंगी और दोष मेरे ही मत्थे मढा जायेगा।

- बतायें क्या करना है।

- एक काम करें। अपनी मर्जी के दो दिन चुनें। एक घर के भीतर की आज़ादी का और एक घर के बाहर की आज़ादी का।

- फिर?

- मान लें कि आज आपकी आज़ादी का पहला दिन है। घर के भीतर की आज़ादी का। आप आज कोई काम नहीं करेंगी। सारा दिन अपनी मर्जी का बितायेंगी। सवेरे की चाय बेशक बना लें लेकिन उसके बाद घोषणा कर दें कि आज आप एक कहानी लिखने वाली हैं। कोई काम नहीं करेंगी। दोपहर को सहेलियों को गप्पबाजी के लिए बुलायेंगी और शाम को अपने दोस्त को चाय पर बुलायेंगी। सच बतायें कि क्या ऐसा होगा कि आपके पति कहें कि कोई बात नहीं, कहानी लिखने या कुछ अच्छा पढ़ने का मन है तो जरूर करो, मैं बच्चों को स्कूल छोड़ आऊंगा, ले भी आऊंगा और उनका होम वर्क करा दूंगा। खाना बाहर से मंगवा लेंगे या बाहर ही खा लेंगे। जिसे बुलाना हो खुशी से बुलाओ। शाम की फिल्म के लिए टिकट भी मंगवा देता हूं। क्या आपकी सास या ननद खुशी खुशी आपके सारे रूटीन काम कर देंगी और रात को ऐसा भी हो कि सब

Digitized by eGangotri / Sarayu Nigamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौपाल सजा कर बैठे आपकी लिखी कहानी सुनने के लिए।

- बाहर की आज़ादी की बात करें श्रीमन।

- आज़ादी बाहर की हो या भीतर की, पहली आज़ादी मन की होती है। जो करने का मन है, जरूर करो और लेकिन मन के खिलाफ कुछ मत करो। ये ही आज़ादी होती है छवि जो हम जीवन भर नहीं पा सकते। कभी बार चाहते नहीं और कई बार जानते नहीं कि मनमर्जी से जीवन बिताना क्या होता है।

- बाहर की आज़ादी में आप क्या क्या शामिल करते हैं। स्पष्ट करें।

- जाने दो छवि, आपसे हो नहीं पायेगा और बाद में गालियां मुझे सुननी पडेंगी। ये बड़े शहरों के चोंचले हैं।

- चैलेंज कर रहे हैं।

- अच्छा सुनो, पच्चीस बरस पहले पढ़ी एक कहानी सुनाता हूं। तब ये सब मॉल वॉल नहीं थे। एक छोटे से शहर में एक लड़की अपने हॉस्टल का कमरा खाली करके बस अड्डे पहुंची तो पता चला कि उसके शहर जाने वाली बस दो मिनट पहले ही छूट गयी है। अगली बस रात को आठ बजे है। अब क्या करे, वापिस जा नहीं सकती, शहर में मौसी रहती है, कभी उससे मिलने नहीं गयी, आज कैसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाये। वह तय करती है, सारा दिन अपनी तरह से बितायेगी।

वह क्लॉक रूप में सामान रखती है। और चल पड़ती है। सिनेमा देखती है, ढाबों पर खाना खाती है, चाट खाती है, पुराने दोस्तों से मिलती है, सीटियां बजाती सड़कों पर आवारागर्दी करती है, शापिंग करती है, लेकिन वह सब जगह महसूस करती है कि सबकी नंगी निगाहें लगातार उसका बदन छलनी कर रही हैं। वह परवाह नहीं करती। जब बस का समय होने वाला है तो वह एक कुल्फी खरीदती है और बैठ कर खाने के इरादे से पास ही के एक पार्क में जाती है। वहीं एक छोटा-सा लड़का आता है और पूरे अधिकार से उससे कहता है - मुझे भी कुल्फी दिला ना। लड़की उससे पूछती है - तेरे और भी संगी साथी हैं क्या, सबको बुला ला। वह लड़का दौड़ कर जाता है और अपने कई साथियों को बुला लाता है।

कहानी का अंत इस तरह से होता है छवि कि लड़की को पूरे दिन में पहली बार लगता है कि अब जा कर उसे अपनी तरह से जीने वाला दिन मिला है जब वह पूरे दिन में पहली बार अंजान बच्चों के साथ खिलखिला रही है, ठहाके लगा रही है।

- एक बात माननी पड़ेगी देव कि आप यूं ही कहानीकार नहीं बन गये हैं। चाशनी में लपेट कर करेले खिलाना कोई आपसे सीखे। सुबह सुबह आपसे नाराज़गी जताने आयी थी और

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रावचन की अगली किस्त सुनने को मिल गयी। ओओ माफ किया। इस चर्चा को यहीं विराम देते हैं। जवाब फिर कभी। कॉलेज का टाइम हो रहा है। टेक केयर देव।

- दिन अच्छा गुजरे छवि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12/21/2014 10.31 AM

- हैलो सर!

- हैलो!

- कैसे हैं सर! f9...कल पीके फिल्म देखने गयी थी.... अच्छी फिल्म है!

- कुछ लोग कहते हैं रंग रसिया देखो और आप पीके!

- दोनों देखें!

- मेरा संकट ये है कि मल्टीप्लेक्स थियेटर में दो ढाई घंटे बैठ नहीं सकता!

- पीके मस्ट वाच मूवी!

- देखता हूं किसी दिन। दोनों ही। कैसी हैं आप?

- हममम। कारण क्या है न देखने का?

- पीठ में तकलीफ है जो थियेटर का एसी सहन नहीं कर पाती। लगातार बैठने से भी दर्द रह रह कर करेंट मारता है।

- इलाज?

- ऐसा है दोस्त कि जब हम किसी बिल्डर के पास जाते हैं तो वह फ्लैट बेचने की ही बात करता है और अगर मुहल्ले के किसी प्रॉपर्टी एजेंट के पास जाते हैं तो वह

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किराये का मकान [illegible] की जुगत में रहता है। डॉक्टरों का भी वही हाल है। सर्जन के पास जाएंगे तो वह बिना ऑपरेशन के मानेगा नहीं। स्पाइन के सिर्फ 2 प्रतिशत मामलों में ऑपरेशन की जरूरत होती है बाकी के बारे में क्या कहूं। ऑपरेशन से बचना चाहता हूं लेकिन कब तक। फिजियोथेरेपी और रूटीन वॉक के सहारे ऑपरेशन टाल रहा हूं।

- आप बेहतर जानते हैं इस मामले में।

- हर मरीज अपने रोग का इलाज कराते कराते आधा डॉक्टर बन चुका होता है।

- देव एक अच्छा अभी एक आइडिया आया मेरे दिमाग में!

- बेशक। आज आपका दिमाग बेहतर काम कर रहा है। उसे बेकार न जाने दें। नोट कर लें। क्या आइडिया है? फेसबुक की मित्र मंडली में शेयर करें। अच्छा न भी हो तो भी शाम तक सौ पचास लाइक्स और कमेंट्स की गारंटी।

- क्या आपके पास कोई काम है चंदन के लिए? ना मत कहना!

- ट्यूशन ही दिलवा सकता हूं!

- सोचना!

- सच तो ये है कि मेरे पास ही कोई काम नहीं। मैं खुद खाली बैठे बैठे बोर हो चुका।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- फिल्म इंडस्ट्री में तो आपका खूब परिचय होगा.....जो उसे काम दे सके। उसकी मदद हो जायेगी।
- देखता हूं वैसे उसकी प्रोफाइल तो भेजें।
- चंदन का स्टेटस आपसे शेयर किया है। आप देख सकते हैं। मिलना चाहें तो मिल सकते हैं...........मेरे लिए कुछ समय बरबाद करें!
- श्योर, लोग आपके लिए पूरी ज़िंदगी दांव पर लगाये बैठे हैं। हम कुछ वक्त तो दे ही सकते हैं हाहा!!
- कुछ ज्यादा नहीं हो गया क्या?
- नहीं मिला चंदन का लिंक।
- भेजा है सर। वैसे मेरी वॉल पर भी है।
- खुली है आपकी वॉल। वहां भी कुछ नहीं दिखा।
- अब देखें।
- अब दिखा। ये जस्सी या चंदन है स्मार्ट हैं बंदा।
- मेरी तरह!
- आपकी तो अरसा पहले एक तस्वीर देखी थी जो आपने हटा दी!!
- वो भी शादी से पहले की! उसकी भी ये पुरानी तस्वीर है।
- जानता हूं। इस फोटो में तो वह 23 बरस का नज़र आ रहा है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

- और क्या?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अब उसकी उम्र?

- बहुत चालाक हैं आप। उसकी उम्र के बहाने मेरी उम्र जानना चाहते हैं!!

- मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं। आप अपने घर में बैठी ज्यादा अच्छी लग रही हैं।

- चंदन का नम्बर दे रही हूं अगर बात करना चाहें। जबर्दस्ती नहीं।

- आभार आपका।

- ओके।

- बेशक, मुझे कुछ समय दें। आपकी चिंताएं समझ आती हैं।

- लेकिन मेरा जिक्र न करें... !

- पता है।

- अपना नाम क्या बतायेंगे?

- आप भी न। सबके मोबाइल में ट्रू कॉलर होता है। आजकल नाम बताने की ज़रूरत नहीं होती। खुद ब खुद पहुंच जाता है। देखता हूं क्या कर सकता हूं। कुछ जॉब नजर आये तभी फोन करना ठीक रहेगा।

- इसका क्या मतलब?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
- कुछ हो हाथ में जॉब का आश्वासन तो ही फोन करूंगा। हां, अपने संपर्कों से बात करता रहूंगा काम के बारे में। चिंता न करें।

- जॉब नहीं करेगा वो.........फिल्म इंडस्ट्री में है कई बरसों से, सो वहीं करेगा जो भी करेगा।

- दोस्त मेरी, वहीं ट्राई कर रहा हूं। बस, समय लगता है।

- ओके।

- बी श्योर। अब देखो ना, चंदन या जो भी है नाम उसका अगर दस बारह बरस में इंडस्ट्री में धक्के खा कर भी अपनी जगह नहीं बना पाया तो मुझे कुछ समय तो दो।

- ओके। जैसा आप उचित समझें। देखते हैं कब तक और क्या होता है। थैंक्स फॉर एवरी थिंग। रुकें, आपको फोन कर रही हूं।

- जी।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12/27/2014 9.21 am

- हाय देव!
- हैलो छवि!
- सच में जा चुके थे फेसबुक से या वो कोई भ्रम था?
- नहीं, मैं कमेंट्स देख रहा था, लेकिन सचमुच में जा चुका। कसम से!
- आप यहां हो कर भी नहीं हैं और नहीं हो कर भी यहां हैं।
- सच कह रहा हूं, कमेंट्स देखने के लिए ही खाता रीएक्टीवेट किया। देख लेना, ढूंढते रह जाओगे!
- सच हम जानते हैं!
- सही कह रहा हूं। बहुत समय जा रहा था। तुम कैसी हो?
- तो फिर लौट के क्यों आये? गये ही क्यों थे? यहीं रहिये ना! ये पलायन क्यों? थोड़ा कम साहित्य रच लेंगे तो क्या फर्क पड़ेगा इस दुनिया की सेहत पर?
- ये तो कोई एक्सक्यूज न हुआ?
- संतुलन बनाये रखें।
- नहीं हो पा रहा था।
- एक बार में बात पल्ले नहीं पड़ती आपके?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- पड़ी ना, लेकिन बार बार जी करता है झांकने का।

- आप ही के शब्द दोहराऊं?

- कौन से?

- आपने ही अपनी वॉल पर लिखा था कि फेसबुक की टीआरपी बच्चे के डायपर की तरह होती है। होता कुछ नहीं है फिर भी बच्चे की माँ नींद में भी हाथ लगा लगा कर देखती रहती है कि गीला तो नहीं हो गया। अब आप ही नहीं देखेंगे तो कौन देखेगा। आपको तो दोनों हाथों में लड्डू चाहिये?

- आप ही कोई शॉर्टकट बताओ कि लालच न आये!

- और?

- और सिर्फ अपने प्रिय मित्रों से ही बात हो!

- या तो यहां रहें या मन कड़ा करके त्याग दें। मेडिटेशन करें।

- नहीं हो पायेगा।

- एफबी पर जो लेख लिख रहे थे आप....पूरा कर लिया क्या?

- वो अब तक पूरा नहीं कर पाया।

- तो ये बात है। दुविधा में सरकार। हम चले। फिलहाल तो पति महोदय का ब्रेकफास्ट। बाय। जल्द मिलते हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12/31/2015 6.19 PM

- हैलो सर!
- हैलो, एक काम करेंगी?
- जी!
- अपना सही ईमेल आइडी दें ताकि मैं आपको जीटॉक पर चैट के लिए इन्वाइट कर सकूं। स्वीकार कर लेना।
- ठीक है, पर क्यों?
- सच में कमजोर पड़ गया हूं फेसबुक के आगे। बहुत समय दे चुका। अब और नहीं रहना यहां।
- तो?
- उपन्यास शुरू करना है। बहुत छटपटाहट हो रही है।
- सही फैसला है। बस, पीछे मुड़ कर न देखें!! सच यहां कुछ नहीं है।
- थैंक्स डीयर।
- आप हैं क्या???
- बाय टेक केयर। लास्ट चैट।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01/01/2015 4.22 PM

- हैलो!

- कैसे हैं?

- यहां बात नहीं करनी!

- क्यों? नव वर्ष का यह संकल्प हजम नहीं हुआ सरकार। हम तो आपको नव वर्ष की असीम शुभकामनाएं देने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे।

मैं बताऊं आप क्या कहेंगे - अब फेसबुक मेरे लिए चैट करने का प्लेटफार्म नहीं रहा। तय कर चुका और आपको बता भी चुका। मगर महाशय, आपने दस दिन पहले ये सार्वजनिक घोषणा की थी और अभी भी फेसबुक पर अपनी दुकान सजाये बैठे हैं। हाहा हाहा!

- जी!

- यहां क्या कर रहे हैं? क्या पान की दुकान खोली है यहां?

- मज़ाक नहीं। सिर्फ थोड़ी देर के लिए आया हूं फेसबुक पर। आप नज़र आ गयी हैं तो बात हो रही है।

- एक बात बतायें सर, फेसबुक छोड़ कर क्या कमाया सर?

- कहानी लिख ली। आज का दिन ब्रेक का। फेसबुक के नाम बनता है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अब हम मकान में ताला लगाने वाले हैं

पता चला है कि मेहमान आने वाले हैं।

. राहत इंदौरी जी की मदद ले कर क्या कहना चाहती हैं?

- मैंने जाने को कब कहा? आप ही ने ईमेल आइडी मांगा और दिया, फोन नम्बर पहले से आपके पास है। लेकिन आपने किसी भी जरिये से बात नहीं की।

- ...

- देव!

- नेट प्रॉब्लम प्लीज!

- क्या फोन कर सकती हूं?

- जी।

- बाय देन!

- हमारे हिस्से में नहीं है बात करना हाहा!!

- क्या करें कि आपसे संवाद हो?

- आप छवि नहीं छुपी छवि हैं!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01/19/2015 2.53 PM

- आपके पूछने से पहले आइ एम f9...हमेशा की तरह!!

- आप हमेशा लुका छिपी क्यों खेलती हैं बाय द वे?

- जी नहीं श्रीमन! आप खेलते हैं। कहते कुछ हैं, करते कुछ नहीं।

- ये क्या बात हुई!

- सही कह रही हूं?

- अरे कुछ और बात करें!

- कहें!

- मेरी कहानी पढ़ी क्या, कल भेजी थी!

- पीएचडी का रिजल्ट आ गया.... बहुत इंतजार कराया। वन निल जीरो!

- मतलब पप्पू पास हुआ या नहीं!

- इंटरव्यू में रह गये!

- दोबारा होगा क्या? विषय क्या था? एक्सटर्नल एक्जामिनर कोई खड़ूस था क्या?

- मैराइटराइटल डिसहार्मोनी इन द नॉवेल्स ऑफ शशि देशपांडे एंड अनीता देसाई।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आप पूरी बात नहीं लिखती?

- पता है।

- अब बतायें कि इंटरव्यू के स्तर पर आपको रिजेक्ट क्यों कर दिया गया?

- बहुत ही दिल टूटने वाली बात। आठ ही सीटें थीं....केवल।

- आप थीसिस लिखना चाहती थीं या लिखने के लिए अनुमति मांगने गयी थीं?

- ...

- किधर गयीं?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01/19/2015 6.12 PM

- हैलो!

- तो बात तो पूरी कर लिया करें। ऐसा भी क्या?

- उपन्यास शुरू किया है।

- क्या नाम रखा है?

- एक थी छवि।

- नायक तय है देव ही होगा। कैसा काम चल रहा है? मेरी कहानी तो नहीं है ना।

- नहीं, एमए के दिनों की कहानी है। थोड़ा अलग किस्म की। अभी तो शुरू ही किया है लेकिन मज़ा आ रहा है।

- वाह!!

- थैंक्स!

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01/29/2015 7.03 PM

- कैसे हैं सर?

- अच्छा!

- पीएचडी करने के लिए किसी यूजीसी एप्रूव्ड युनिवर्सिटी का नाम बतायें।

- पुणे, जेएनयू, उस्मानिया, हैदराबाद, मुंबई, मराठवाड़ा, भारत में 200 हैं। आप किस विषय में करना चाहेंगी?

- रजिस्ट्रेशन तो मिले। आपको क्या लगता है कि मुझे ये सब नाम पता नहीं थे?

- भाषा हिंदी या अंग्रेजी?

- कोई भी!

- हिंदी के लिए तो मदद कर सकता हूं लेकिन अंग्रेजी के लिए शायद...नहीं!

- जी वही सही!

- दिल्ली या बंबई में हिंदी में कुछ परिचित हैं। हिंदी विभाग में। बात कर सकता हूं।

- वाह क्या बात है! पूरी बात बतायें।

- आप पहले भाषा तो तय कर लें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अगर मैं कहूं तो मैं चारों विषयों में पीएचडी करना चाहती हूं। सारा जीवन बस, नोट्स लेते रहो, पढ़ते रहो, झोला भर किताबें लाइब्रेरी से लाओ।
- उससे क्या होगा?
- अभी मेरी इमेज घरेलू औरत की है। तब भद्र और बुद्धिजीवी महिला वाली हो जायेगी। तब तक चश्मा भी अपने आप लग ही जायेगा। बढ़िया फ्रेम का चश्मा लगा के आया जाया करेंगे।
- हां ये फायदा तो हो ही सकता है। हों न हों, लगने में क्या बुराई है।
- आपका ये मजाक खूब समझ रही हूं लेकिन इस समय उसका जवाब नहीं दे रही सर। सही मौके पर दूंगी।
- स्वागत आपका। आप जल्द ऐसी ही डॉक्टर बनें। आप किसी एक विषय के सिनॉप्सिस बना कर भेजें।
- जी।
- वैसे ये काम तो आपने कर ही रखा होगा?
- बाद में फोन पर बताती हूं।
- आपने अब तक जीमेल पर बात करनी शुरू नहीं की है!
- आप यहां से जायें तो वहां मिलें प्रभु!
- ओह लेकिन मैं यहां आखिरी बार ही हूं!
- वक्त बतायेगा। वैसे यहां आप हर बार आखिरी बार ही मिलते हैं!
- ओके थैंक्स गुड नाइट।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

02/02/2015 9.13 PM

- मैंने आपको फोन किया था। देखा तो यहां दुकान खोले बैठे हैं।

- जी।

- अब आपको मेरी बत्ती गुल तो नज़र नहीं आती।

- हरी बत्ती मुबारक हो।

- जी।

- हेलो, फेसबुक पर बात नहीं कर पा रहा!

- क्यों?

- मुझे नज़र नहीं आ रहा कि क्या टाइप कर रहा हूं!

- क्यों ऐसा क्या हुआ?

- चश्मा टूट गया है!

- ओके, तकलीफ न पायें। फोन करती हूं। यहां मिलते हैं चश्मा बन जाने के बाद।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

02/03/2015 5.33 PM

- कैसी हो?
- हमेशा की तरह। इस समय ओशो को सुन रही हूं!
- ठीक है! बाद में बात करते हैं।
- नो नो नो मैं तो प्लेयर में सीडी लगा कर सुन रही हूं!
- कल की आपकी बात से बहुत देर तक अकेले हँसता रहा।
- कौन सी बात पर?
- कि आपके शहर में भी किट्टी पार्टी होती है और उसमें खेले जाने वाले कलर मैच के खेल में महिलाएं ऊपर से नीचे तक सब जगह पहना हुआ रंग गिनती हैं। हाहा हाहा।
- हाहा अच्छा है। हँसते रहिये।
- हमारी बस में एक महिला आती थी। अक्सर सामने वाली सीट पर बैठती थी।
- तो?
- उसने ऊपर से नीचे तक जितना सोना चांदी पहना होता था वही गिनता रहता था।
- कितना?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- गले में चार, कानों में चार, नाक में एक, पैरों की उंगलियों में कुल 6, हाथों में आठ, उंगलियों में कुल 6, सब जगह सोना ही सोना या चांदी।
- हृममम
- दिन कैसा रहा?
- जहां से झुक के उठे न सर, मुझे ऐसे एक दर की तलाश है!
- समझ नहीं आया?
- कोई ऐसा दरवाजा हो जहां मैं अपना मस्तक झुकाऊं!
- आपका रहस्यवाद!
- जी, मेरे पास ओशो की कई किताबें हैं, एक प्यार पर भी है।
- वाह!
- खुशवंत सिंह जी की एडिट की हुई। नाम है – being in love.
- उनकी कई किताबें मैंने पढ़ी हैं - शिवोहम शिवोहम, इमोशनल वेलनेस, द वे बियॉंड द वे और भी कई।
- ओशो सचमुच जीनियस थे।
- आपका अध्ययन कमाल का है।
- उन्हें आमने सामने देखने की हसरत रह ही गयी!!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जी, आपके कई मोर्चे हैं - पहले घर परिवार, बच्चे और अब फेसबुक और अध्ययन भी।

- अब मैं सुन रही हूं ...पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।

- वे अद्भुत वक्ता थे।

- मुल्ला नसीरूद्दीन। वाह एक एक शब्द जैसे मोती!!

- सीडी सुन रही हैं या ऑनलाइन?

- सीडी, किचन में किराने का सामान लगा रही हूं। सुन भी रही हूं साथ साथ।

- ध्यान का स्वाद बढ़ने लगता है बाकी सारे स्वाद फीके होने लगते हैं।

- आपका क्या कहना है?

- मैं आपसे सहमत हूं।

- मैं संगीत की रसिया हूं।

- जानता हूं।

- लेकिन ध्यान का जवाब नहीं। सुप्रीम है वह!!

- संयोग से मुझे भी संगीत सुनने का बहुत चाव है। संगीत हमें कभी भी तनाव में नहीं रखता और हर वक्त जैसे हमें भरा भरा रखता है।

- जी।

- मेरी ईवनिंग वाक का समय हो गया छवि जी।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपका तो चश्मा टूटा हुआ है ना?

- हां तो?

- किसी सैर वाली से टकरा मत जाना। हाहा बिना चश्मे के।

- कई बार टकराते टकराते बचा। वहां तो सारी की सारी 40-42-44 आती हैं।

- एक दिन सैर के लिए पार्क नहीं जाएंगे तो कोई आपको मिस नहीं करेगा। आज के दिन अपनी कॉलोनी वालियों को भी निहाल कर सकते हैं। वैसे भी कहीं भी सैर करें नेत्र सुख तो मिलने वाला नहीं।

- बताऊं क्या?

- कोई जरूरत नहीं। हम सब जानते हैं।

- बाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

02/19/2015 2.13 PM

- कहानी के तीन पेज लिखे हैं।
- वाह!!
- ओशो को सुन रहा हूं। बीइंग इन लव। ऑनलाइन!!
- वाह संगत का असर। नतीजा संगीत!! हमारे हिस्से का लिंक दीजिये।
- लीजिये मोहतरमा! https://www.youtube.com/watch?v=8LfUvi1bof8
- आभार उधार रहा।
- किधर गयीं?
- काम वाली बाई को विदा करने।
- कर दिया?
- मिलते हैं बाद में, अभी बाय।
- लौट कर आना ही होगा!!
- अरे यहां तो ये हालत है कि फेसबुक छोड़ कर जायें तो लौटें।
- वही कहावत हो गयी हम तो कंबल को छोड़ दें कंबल ही हमें नहीं छोड़ रहा।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

03/03/2015 3.39 PM

- कैसी हैं?
- अच्छी भी ...नहीं भी!!
- अच्छा क्या और ना अच्छा क्या?
- लिखना अच्छा लग रहा है!!
- ना अच्छा क्या?
- लिख कर होगा क्या..ये सोच कर अच्छा नहीं लग रहा है!!
- लिख कर शक्ति मिलती है। अभिव्यक्ति का सुख। आप लिखती रहें।
- आपकी कहानियां पढ़ रही हूं।
- जी।
- सुख मिल रहा है। ये बतायें कि लंतरानियां...बहुत प्यारा शब्द है। सही सही क्या होता है ये? आपके लेखन में बहुत बार आता है?
- आपको कुछ और शब्द भी ऐसे मिलेंगे। सबकी सूची बना लें तो एक पूरी चैट ऐसे शब्दों पर बात करेंगे।
- वाह मेरी बिल्ली मुझी को म्यांऊं। वैसे आप क्या कर रहे हैं?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- मैं मेंहदी हसन की गायी फ़ैज़ साहब की ग़ज़ल - दोनों जहां तेरी मुहब्बत में हार के सुन रहा हूं।

- ग्रेट। देखिये आप भूल जाते हैं कि आपके साथ हमारा करार है। हम या आप कुछ भी अकेले नहीं सुनेंगे। चैट के समय जो कुछ मैं सुन रही होऊंगी, वह आप तक पहुंचेगा और आपके पास बज रही संगीत लहरियां यहां भी सुनायी देनी चाहिये। पहले लिंक भेजें। मेरे पास इस ग़ज़ल की अच्छी रिकार्डिंग नहीं थी। कराची से मेरे फेसबुक फ्रेंड सैयद आसिफ सईद ने पेरालिसिस के बावजूद भिजवायी। मैं कितनी खुशनसीब हूं कि फेसबुक ने मुझे इतने कीमती दोस्त दिये।

- मेरे लिए क्या आज्ञा है?

- पहले लिंक।

- लीजिये-https://www.youtube.com/watch?v=UgoWKqxDZGY अब।

- आपको पता है कि ये ग़ज़ल अमूमन सभी ग़ज़ल गायकों ने गायी है और सभी की आवाज़ में मेरे कलेक्शन में है।

- तो मुझसे क्यों मांगी।

- सिर्फ इसलिए सरकार कि आप हमारी कद्र करना सीखें और मिल बांट कर संगीत सुनने की आदत डालें।

- अब तो शेयर कर दी। अब क्या आज्ञा है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- कुछ नहीं, आपकी कहानी शिब्बू पढ़ रही हूं।

- वो बहुत अच्छी कहानी नहीं बन पायी थी।

- डिस्टर्ब न करें... हाहा!!

- बाय!!

- अच्छी लगी कहानी मुझे.......... !! आपकी एक और कहानी .. राइट नम्बर रांग नम्बर। मैट्रो शहरों की कड़वी सच्चाई। रात को पढ़ी थी!!

- रांग नम्बर के पीछे का सच.. !!

- आपकी सारी कहानियां एक ही फाइल में हैं और अल्फाबेटिकली लगी हैं। मैं उस हिसाब से नहीं पढ़ पाती। कोई भी कहानी चुन कर पढ़ती हूं।

- जी!!

- आपने हिंदी साहित्य के लिए कुछ साइट्स बतायी थीं। जरा उनके लिंक भेज दें। आजकल खूब पढ़ने का मन हो रहा है।

- ये लें www.hindisamay.com

  www.gadyakosh.com

  www.kavitakosh.com

- अरे, इन दोनों में तो आपकी कहानियां भी हैं। ग्रेट। एक पंथ दो काज हो गये ये तो। थैंक्स।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- विकीपीडिया में भी खूब साहित्य है। दुनिया भर का। वो सही मायने में दीवानों की बस्ती है।

- मैं कितनी खुशनसीब हूं कि इतने बड़े लेखक से रोज़ बात करती हूं!

- अब बड़ा क्या और छोटा क्या... !

- केशव को गेम खेलने हैं। बाद में मिलते हैं।

- जी।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

03/15/2015 4.07 PM

- आपने पूछा था कहानी कहां है....?

- पूछा तो था! जस्सी की कहानी के बारे में बात कर रही हैं?

- कहानी के फार्म में तो नहीं, मैसेज के रूप में लिख रही हूं।

- हां, बात तो कुछ कहने की ही है! फार्म तो बाद में बदला भी जा सकता है। वैसे ये मैसेज चंदन के नाम ही होना चाहिये!

- जानते तो हैं सर, उससे मिले बिना चैन नहीं और मिल कर खुद को कमज़ोर नहीं करना चाहती।

- जानता हूं, चंदन से शेयर करें या न करें मुझसे जरूर शेयर किया जायेगा ये मैसेज।

- आपको अभी बोर नहीं करूंगी। इनबॉक्स में बाद में डाल दूंगी।

- जरूर।

- कल कॉलेज में टेलेंट शो है।

- आप जज होंगी?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- तय है। बाय करने के बाद आपके इनबॉक्स में चंदन को लिखा मैसेज पेस्ट करूंगी और ख्याल रहे उस पर किसी कमेंट या लाइक की ज़रूरत नहीं।

- जो आज्ञा महामाया।

- हैलो चंदन.. कैसे हो.. आज तुम हँसे क्या? मेरा ख्याल आया क्या? रोज सोचती हूं कि मैं तुम्हारे बारे में इतना क्यों सोचती हूं। जानते तो हो। मेरे बताने से क्या हो जाने वाला है। तुमसे बात शुरू करने से पहले भी लाइफ में सब कुछ तो परफैक्ट था। वैसे तो अभी भी है पर तुमने कहने की ललक को जगा दिया है फिर से... मैंने तो चुप रहना सीख लिया था.. मैं ये सोच कर हैरान हूं कि तुम इतने अच्छे से मुझे कैसे जानते हो। बिन बात किये, बिन मिले मुझसे कैसे संवाद कर लेते हो। मेरे मन की बात समझ जाते हो और अपनी बात मुझ तक पहुंचा भी देते हो। सच तो ये है कि जब तब आमने सामने मिलते थे तो भी हमारी बात ही कहां हो पाती थी...सब कुछ महसूस करना होता था, मुझे एमए के दिनों में .. जो मैसेज मैंने तुम्हें भेजा था, कि तृप्ति की तरह.. तब तुम नाराज़ हो गये थे। और अब देखती हूं कि तुमने मुझे फेसबुक से अनफ्रेंड कर दिया है। मुझे हमेशा से पता था कि हम कभी भी ज्यादा बात नहीं कर पायेंगे.....हम दोनों की दुनिया एक जैसी होते हुए भी बिल्कुल अलग अलग है। फिर भी मैंने तुम्हें फोन किया ....मैसेज भेजे .. मुझे तुमसे बस एक बार

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूछना था कि Trance क्या है। जो लेक्चर रह गया था अधूरा, उसे पूरा करो.. तुम्हारा कैरेक्टर मेरी चाहत का कारण है जैसा तुमने बताया वो ही सोच मेरी भी लाइफ की है....कई बार ऐसा लगता है कि किसी ने मुझे हिप्नोटाइज कर रखा है...कितनी भी कोशिश करूं कि न हो लेकिन तुम्हारा नम्बर डायल हो ही जाता है। कितने भी नम्बर बदलूं हर बार सबसे पहले तुम्हारा ही नम्बर डायल होता है। चाहे जवाब में कोई भी रिकार्डेड मैसेज आये.....हमने अभी कितनी तो बातें करनी थीं लेकिन तुम संवाद की हर सीमा से परे क्यूं चले गये हो। आइ लव यू सो मच। आई रिस्पेक्ट यू सो मच.....आइ.. ..।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

04/07/2015 9.23 pm

- एक मुद्दत से.........
 बस इस कशमकश में फंसा हूँ,
 तू मुझ में खोई है,
 ... या मैं तुझ में बसा हूँ।
- अब मैं क्या जवाब दूं?
- न सवाल में हूं न जवाब में हूं बस ख्याल में हूं।
- वाह?
- आपकी कहानी- क्या आप ग्रेसी राफेल से मिलना चाहेंगे?...
- जी!
- मार्मिक। इसमें ठीया शब्द आया है। एकदम जमीनी शब्द।
- जी मादाम, हम ठहरे ज़मीनी आदमी।
- कहानी पढ़ रही हूं। एक रिक्वेस्ट है सर।
- जी!
- आप आसपास बने रहें।
- ऐसा क्यों?
- यूं ही, कहानी पढ़ते समय लेखक के आसपास बने रहने का अहसास।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- एक शर्त है!

- जी अपनी एक उम्दा तस्वीर भेजें ताकि लेखक को अहसास रहे कि पाठक भी आसपास है।

- तस्वीर कभी रीयल नहीं होती। ट्वाइस अवे फ्राम रियलिटी। वाह आप लिखते हैं - हम किसी मरीज से तीसरी, चौथी बार मिलने के लिए अस्पताल जाते हैं और उसका खाली, साफ सुथरा बिस्तर देख कर एक पल के लिए चौंक जाते हैं कि कहीं मरीज ठीक हो गया या...अच्छा वाक्य है लेकिन डरावना।

- आखिर वहीं से तो वे पागल खानों में भेजी गयी थीं।

घर की ज़रूरतें इतनी कम थीं कि उनके पास सारा दिन बोर होने के अलावा कुछ भी न होता।

इस दुनिया में हर आदमी जैसे पागलपन के कगार पर बैठा है।

- कहानी पूरी पढ़ी?

- जरा से धक्के की ज़रूरत है बस...।

- दरअसल उस कहानी की नायिका पागल नहीं थी, बनायी गयी थी पागल।

- आप लिखते हैं - कोई तो है भले ही अनजान, अपरिचित ही सही, उनकी तरफ तारीफ भरी निगाह से देखता तो है। ...अच्छा उदाहरण है वीमेन साइकॉलोजी का।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आगे है - उनके हिस्से में उनका पूरा पति आज तक आया ही नहीं था कि उसे खोने से डरतीं। ....अच्छा है।

दिल को छू लेने वाली कहानी।

- जी थैंक्स। पूरी पढ़ ली?

- अब अल्बर्ट शुरू की है। डिस्टर्ब न करें!

- जी

- आपकी कई कहानियों में गेम्स का जिक्र आता है। लगता है, स्पोर्ट्स से गहरा ताल्लुक है।

- नहीं, सच तो ये है कि मुझे कोई गेम नहीं आता। कंचे खेलना, गुल्ली डंडे खेलना या पतंग उड़ाना भी कभी ढंग से नहीं आये।

- शायद यही वजह रही हो.. कि खेल कहानियों में आ रहे हैं।

- लगता है अगली पीएचडी मेरे ही साहित्य पर ही करने वाली हैं?

- आपकी कहानियों में पात्रों में ज़िंदगी के प्रति आत्महंता आस्था बहुत है, ज़िंदगी से नाराजगी?

- जी

- आपकी कहानियों में शराब भी बहुत आती है जिसमें डूबने का कोई ठोस कारण नहीं होता.... वापसी का कोई रास्ता भी नहीं होता। मजे की बात, आपकी इधर की अमूमन

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सभी कहानियों में महिला पात्र भी खुले आम बार में, क्लब में पीती दिखायी देती हैं।

- छवि जी, एक बात याद रखें कि जिस समाज से, जिस तबके से और जिस माहौल से वे महिला पात्र मेरी कहानियों में आयी हैं अगर वे वहां भी सचमुच पी रही थीं तो मैं उन्हें अपनी कहानियों में लस्सी या गन्ने का जूस तो नहीं पिला सकता।
- ये तो कोई तर्क न हुआ।
- तो ये भी कोई तर्क नहीं है कि अपनी कहानियों में मैं बाकी बातें तो उनके जीवन से लूं लेकिन जब शराब का जिक्र आये तो उन्हें लस्सी पिलाऊं। रबिश।
- भई आप ठहरे लेखक। अपने लेखन को जस्टीफाई करने के लिए आपके पास तर्कों की कमी थोड़े ही होगी।
- आपका खुद का अनुभव क्या कहता है शराब को ले कर?
- एक बार ली थी, यह महसूस करने के लिए कि कैसा लगता है ......वाइन थी शायद। मुझे उसमें और नॉनसेंस में कोई ज्यादा फर्क महसूस नहीं हुआ।
- दरअसल आपने गलत ड्रिंक ले लिया। भला वाइन से कोई पीने की शुरुआत करता है। नॉनसेंस लगना ही था।
- बेकार की बात मन करो। दूसरे ड्रिंक भी कम ज्यादा वाहियात ही होते हैं।
- आपकी सलाह मान लेते हैं जी। बिल्कुल हो सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- बहुत मजबूत या फिर बेचैन करने वाली भावनाओं से पार पाने के लिए ध्यान और मेडिटेशन बेहतर विकल्प हो सकते हैं। शराब ही क्यों?
- आप अपने सेशन को शराब कंपनियों के लिए तैयार करें। बहुत हिट होंगे।
- ख्याल अपना अपना।
- ओवरडोज इस आल्वेज नॉनसेंस।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

04/24/2015 09.01 AM

- एक निजी सवाल पूछना है आज।
- जानती हूं क्या पूछेंगे। आप मेरे प्रेम, पहले प्रेम, इकलौते प्रेम, असफल प्रेम और अब तक पीछा न छोड़ने वाले देहातीत प्रेम के बारे में जानते ही हैं। उसमें बताने लायक और कुछ बचा नहीं। आप जानना चाहते भी नहीं। तो बताने के लिए मेरा निजी जीवन ही बचता है। घर, परिवार, पति और विवाह में बचा प्रेम। यही पूछना है ना देव कि मैं सुखी हूं या नहीं!
- कहती चलें।
- दरअसल देव, मेरे पास इस न पूछे गये सवाल का जवाब हां भी है और नहीं भी। अब तक की बातचीत से आपको ये तो पता चल ही गया होगा कि मैं बेहद बेचैन हूं। परेशान हूं। अकुलाई और बौराई हुई हूं। हर समय कुछ न कुछ तलाश करती रहती हूं जो संपूर्णता दे, मेरे खाली खाने भरे। मुझे सुकून दे लेकिन मुझे खुद नहीं पता कि वह क्या है। कुछ है जो मिसिंग है मेरे जीवन से लेकिन उसके बारे में उँगली रख नहीं बता सकती कि यही चीज मिसिंग है। और ये भी नहीं जानती कि वह जो मिसिंग है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे पा कर रातों रात सब ठीक हो जायेगा। मैं दुनिया की सबसे सुखी महिला बन जाऊंगी। सुन रहे हो न..

- आगे कहो।

- घर को देखती हूं तो सब ठीक लगता है। सारी सुविधाएं हैं। पति को देखती हूं तो वे बेहद अच्छे और मेरा ख्याल रखने वाले हैं। मुझे इतना आगे बढ़ने और लगातार पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। बच्चों को देखती हूं तो लगता है दुनिया के सबसे प्यारे बच्चे मेरे हिस्से में आये हैं। खानदान में देखती हूं तो सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी बहू का खिताब और इज्ज़त मेरे ही पास है। फिर भी ये जो तलाश है न, यही मेरा पीछा नहीं छोड़ती। पता नहीं कब और कहां मेरी तलाश पूरी होगी।

- कोई दोस्त है आपका?

- शायद नहीं, लेकिन इतने अच्छे पति के होते हुए कभी इस तरह से सोचा नहीं।

- मेरे सवाल का जवाब हां या न में होना चाहिये।

- जीवन में नहीं और फेसबुक पर दो तीन। एक तो आप ही हैं।

- कभी ज़रूरत महसूस नहीं हुई?

- मिस्टर लेखक महोदय, बंबई जैसे अल्ट्रा मॉडर्न शहर में रह कर ये बातें करना बहुत आसान है। आपके शहर में जा कर यहां की लड़कियां भी दो एक बरस में लिव इन में रहना सीख जाती हैं। रहती भी हैं। झूठ कहा क्या?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- बिल्कुल सही कहा। लोकल लड़कियों को तो वैसे भी किराये के मकान में इस तरह से रहने की जरूरत कहां पड़ती है। लिव इन हो या अकेले, बाहर की लड़कियों को ही ज़रूरत पड़ती है। तुम्हारा जवाब अभी पूरा नहीं हुआ।
- दोनों जगह के जीवन में ज़मीन आसमान का फ़र्क है। वहां सब अकेले हैं और किसी से आप बात करने के लिए भी तरस जाते होंगे। यहां ऐसा नहीं है। यहां समाज का बना बनाया ढांचा है जो आपके चाहने न चाहने के बावजूद आपके सुख दुःख में न केवल दखल रखता है बल्कि भागीदारी भी करता है। तो यहां आपकी निजता या प्राइवेसी के लिए बहुत कम जगह बचती है।
- कहती चलो।
- अब इसी बात को लें। अगर आप मेरे बुलावे पर यहां आना भी चाहें तो मेरे ही सामने दस तरह की परेशानियां खड़ी होंगी। आप तब सिर्फ मेरे ही मेहमान नहीं होंगे। सब खबर रखेंगे और किसी न किसी बहाने से मुझे या सुरिंदर को कुरेदेंगे। न तो मैं आपके होटल में आपसे मिलने आ पाऊंगी और न ही किसी ढंग की जगह आपके साथ अकेले बैठ कर कॉफी पीते हुए गपशप ही मार पाऊंगी। आप मेहमान मेरे होंगे और आपको कंपनी सुरिंदर देंगे। समझे राइटर महोदय।
- यही तो बात है कि छवि कि हर शहर में कई भारत बसते हैं और एक भारत की दूसरे भारत से कोई तुलना नहीं। एक मज़ेदार बात बताऊं छवि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जरूर, ये भी कोई पूछने की बात है।

- अभी तुमने बंबई में लड़कियों के लिव इन में रहने की बात की। लेकिन यहीं बंबई में आज भी लड़कियों का एक बहुत बड़ा तबका रहता है जो रहता बेशक बंबई में है, लोकल भी है, जीवन कुछ हद तक आधुनिक भी है लेकिन बंदिशें उसके हिस्से में उतनी ही हैं जितनी किसी छोटे शहर में लड़कियों के हिस्से में आती हैं।

- ज़रा बात खोल कर बतायें ना। जलेबियां कुछ ज्यादा ही गोल हो रही हैं।

- अभी कुछ दिन पहले मुझे लड़कियों के एक डिग्री कॉलेज में एक रचना शिविर आयोजित करना था। लगभग 75 लड़कियां थीं। कुछ मुस्लिम भी थीं जो बुरके में थीं। वे ही सबसे ज्यादा सवाल पूछ रही थीं और बातचीत में हिस्सा ले रही थीं। जब मैंने उनके पंजीकरण के फार्म देखे तो पाया कि कम से कम 27 लड़कियों ने अपना ईमेल आइडी नहीं दिया था, ग्यारह लड़कियों ने अपना मोबाइल नंबर नहीं दिया था। पूछने पर उन्होंने यही बताया कि या तो ईमेल आइडी है ही नहीं या देने की इजाज़त नहीं है। मोबाइल नंबर भी न देने वाली लड़कियों ने यही बताया कि हर किसी को वे अपना मोबाइल नंबर नहीं दे सकतीं। इजाज़त नहीं है। मिसयूज हो सकता है।

- ग्रेट इंडियन स्टोरी। आगे क्या हुआ?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- शाम की सत्र के बाद चाय पीते हुए कुछ लड़कियों ने माना कि वे बेशक फेसबुक पर हैं लेकिन फेक आइडी से हैं। कुछ ने ये भी माना कि वे घर और कॉलेज के अलावा कहीं नहीं जातीं। यहां तक कि कुछेक लड़कियां आज तक सिर्फ चार किमी दूर जुहू तक नहीं गयी थीं।

- देखा, मैं यही कहना चाह रही थी कि हम कितने भी मॉडर्न हो जायें, कितने भी महंगे मोबाइल हों हमारे पास, अपनी बहू बेटियों को अंगूठे तले ही रखेंगे।

- यहां तुमसे सहमत हूं छवि।

- देव, एक रोचक किस्सा सुनाती हूं।

- इरशाद।

- जगजाहिर है ये किस्सा लेकिन शेयर करने में हर्ज नहीं है।

- जी

- अभी कुछ दिन पहले यहां स्थानीय निकायों के चुनाव हुए थे। बहुत सारी सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित थीं। तो जब चुनावी पोस्टर लगे सब तरफ तो पोस्टर पढ़ कर ही खूब हंसी आती थी।

- जैसे?

- भीमसेन चक्की वाले की पत्नी दुलारीबाई को वोट दें या राम सेवक सुनार की बहू गुलाबी को वोट दे कर सफल बनायें। पोस्टर पर जिस महिला की तस्वीर होती थी, लगता था पहली बार कैमरे के सामने आयी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- ये है आज़ादी का पैगाम मैडम। अब तय है इनमें से कोई तो चुन कर आयेगी। चतुर लाल की या चोखे लाल की। वह बेचारी पहले की तरह उपले थापती रहेगी और चतुर लाल जी अपना धंधा छोड़ कर राजनीति की गोटियां बिछायेंगे।
- देव, देखो ना हमारी बात कहां से कहां पहुंच गयी। समय का पता ही नहीं चला।
- अपनी बात पर लौटो।
- अपने शहर और यहां के माहौल की सारी बातें तो आपको बता चुकी। सच तो ये है कि हम यहां पर्सनल फ्रेंड रखना एफोर्ड ही नहीं कर सकते। पति या भाई के अलावा बाहर निकले नहीं या कहीं बाहर नज़र आये नहीं कि सबको, लिटरली सबको जवाब देना पड़ता है कि कौन है। वी जस्ट कैन नॉट एफोर्ड टू हैव ए मेल फ्रेंड। बात खत्म हो जाती है।
- समझ में आ गयी जी। थैंक्स, हम बड़े शहरों में रहने वाले अपने ही देश के गांव, कस्बों और छोटे शहरों की जिंदगी के बारे में कितना कम जानते हैं।
- लेखक महोदय लिखने पढ़ने के अलावा भरपूर देखना भी शुरू करें।
- टेक केयर छवि।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

04/27/2015 4.42 PM

- क्या कर रही हैं इस समय चैट के अलावा?
- आपकी कहानी छूटे हुए घर!
- इस समय भी मैं आसपास बना रहूं क्या?
- क्यों पूछा?
- बेशक फेसबुक खुला है लेकिन मैं अपने उपन्यास पर काम कर रहा हूं।
- आप लिखते हैं - नौकरी करके वे जितना कमाती थीं, नौकरी के लिए खुद को सजाने-संवारने में उससे कहीं अधिक खर्च कर डालती थीं।

  उनकी हैसियत, राजपाट और नियंत्रण का दायरा एक ही झटके में बिस्तर भर की जगह में सीमित कर दिया गया था।

  बेशक यह लड़ना सार्वजनिक नल पर होने वाले लड़ने के स्तर तक नहीं उतरा था, एकदम झक्कास है कहानी।
- जी।
- संवादों में बहुत प्रवाह है।
- मेरी कोशिश रहती है कि कहानी में पठनीयता और विश्वसनीयता बनी रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपकी कहानियों में वीमेन साइकॉलोजी के बेहतरीन प्रासंग मिलते हैं।

- कितनी पढ़ लीं?

- सारी कहानियां। अब यही वाक्य देखें ..उनकी गैर-मौजूदगी में आमतौर पर घरों को कुछ भी नहीं हुआ था। ग्रेट।

- पुरुष होते हुए भी आपकी कहानियों में महिलाओं में हार्मोनिक चेंजेज की वजह से होने वाले बदलाव भी इतनी बारीकी से आये हैं। गजब। आप स्त्री मन के कुशल चितेरे हैं।

आप जानते हैं कि .. जिस तरह लेडीज़ में मैनापॉज होता है ऐसा ही कुछ जेंट्स में भी होता है। बायोलाजिकली।

- जानता हूं एक तरह की उदासीनता!

- मैं यही कहना चाह रही थी, बेशक लक्षण अलग होते हैं।

- रिश्तों से मोह भंग ....पता नहीं लोग बाग बुजुर्ग होने का इंतज़ार क्यूं करते हैं पहले अक्कल नहीं होती..कि इस दुनिया के सारे रिश्ते लगभग झूठे ही होते हैं.......।

- मतलब?

- आपकी कहानियों में मुझे ऐसे पुरुष पात्रों की भी झलक मिली है जो सामान्य नहीं हैं, जैसे मेनोपॉज की स्टेज से गुज़र रहे हों।

- जरा विस्तार से बतायेंगी?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अभी डिस्टर्ब न करें। आप ही के कथा संसार में विचर रही हूं..।

....

- करोड़पति कहानी पढ़ रही हूं - कोई उसके सामने नहीं पड़ना चाहता। वे तो बिलकुल भी नहीं जिन्होंने उसकी सारी पूंजी लूट कर उसकी यह हालत बना दी है।

....

- अच्छी कहानी है।

- आप मेरी कहानियों पर नोट्स भी ले रही हैं या सब कुछ वर्चुअल?

- सारी कहानियों के महत्वपूर्ण अंश अंडरलाइन किये हैं।

....

- अब ये कहानी देखें - किराये का इंद्रधनुष। आप लिखते हैं - मैंने यह बात सुबह भी नोट की थी, अब भी देख रहा था कि यहाँ पर लोग और शहरों की तुलना में ज्यादा तेज चलते हैं, कहीं देखते नहीं, बस लपकते से रहते हैं। सुबह चर्चगेट के बाहर तो मैंने कई औरतों को भागते हुए देखा था। औरतों को इस तरह भागते देखना सचमुच मेरे लिए एक नया दृश्य था।

- ....

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- कोई तो है जो यहाँ शब्दों के बिना भी इतनी अच्छी तरह से कम्यूनिकेट कर रहा था।

- ....

- वह अपने हाथों में यह अनमोल खजाना लिए बहुत उल्लसित था।

....

- मैं इतना उत्साहित हूँ कि जी कर रहा है कि किसी भी व्यक्ति को रोककर उसे अपने सेलेक्शन के बारे में बताऊँ।

....

- सच, आपको पढ़ना अपने आप में किसी ट्रीट से कम नहीं।

....

- लम्बे अरसे से बाद किसी एक ही लेखक की इतनी रचनाओं के बीच से गुज़रना।

- सच!

- एक सवाल का जवाब दें!

- जी?

- ताज होटल में तब इतनी सस्ती थी क्या बीयर?

- हां जब कहानी लिखी गयी थी, तब कॉफी 8 रुपये की और बीयर 25 की थी शायद। बहुत पुरानी बात है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- क्या तो कहानी लिखते हैं आप ....माय गॉड, सिंपली ग्रेट!!

....

- लेकिन एक बात बता दूं। इस धरती पर दूसरी ग्रेट पर्सनैलिटी हम हैं जिन्होंने आपका सारा साहित्य एक ही बार में पढ़ डाला और उस पर कुछ काम करने की भी सोच रहे हैं!

- थैंक्स अभी कहना होगा या उधारी चलेगी?

- बेशक मैं भी बेहतर कहानियां लिख सकती हूं लेकिन ....मैं खुद को जानती हूं। कितनी कहानियां बिखरी पड़ी हैं मेरे आसपास जो हमेशा से कहना चाहती रही। अगर आपकी मदद मिले तो शायद सब कह पाऊं....वह सब कुछ जो अब तक अनकहा है मेरे पास।

....

- कुछ बोलते क्यों नहीं? इतनी देर से आपके गुणगान किये जा रही हूं?

- आप ही ने डिस्टर्ब करने से मना किया है!

- उफ आप भी!

- ओके तो लिखो, मैं हूं ना। मैं ही अल्टीमेट नहीं हूं। आप भी यकीनन मुझसे बेहतर लिखने का माद्दा रखती हैं। बस शुरू करने की देर है।

Sagamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- ये कहानी घर की तलाश - वह कभी किसी पवित्र नदी के पारदर्शी, निश्चल, दोषरहित जल की तरह लगता जिसे आर पार देखा, समझा और जाना जा सकता था। जैसा है, सबके लिए वही है। कोई दुराव छिपाव नहीं, और कभी यही शख्स इतना हैरान-परेशान, चुप्पा, अपने खोल में बंद लगने लगता कि उससे एक एक वाक्य बुलवाने के लिए घंटों मशक्कत करनी पड़ती। लगता, वह लगातार किसी गहरे मानसिक मंथन से गुजर रहा है।

- कितनी कहानियां एक साथ पढ़ रही हैं?

- अच्छी कहानी है!

- आपकी एक और कहानी खो जाते हैं घर! वाह!! - वह अचानक कार में से अनुपस्थित हो गया है और बाहर भागती दौड़ती दुनिया में शामिल हो गया है।

और पिता जी का नाम?

बाबू।

और मां का?

पता नहीं।...कहीं ऐसा न हो कि कबीरा वगैरह आयें और उसे सोया पा कर लौट जायें।... आपकी कहानियों में डेस्टिनी से लड़ते हुए कैरेक्टर बहुत है जो चाह कर भी भाग्य के लेखे से बच नहीं पाते।

- जीवन ऐसा ही है बंधु!

- थामस हार्डी के उपन्यासों में हर जगह यही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- शायद होगी, मैंने हार्डी को उतना ज्यादा नहीं पढ़ा।

- वे कहते हैं - life is.....but an occasional episode in general drama of pain

और happiness is.........not life is.

- कहीं कहीं ऐसा भी है मेरे लेखन में ..

- कि सारा मामला ही दुखांत है।

- मेरे पात्र कहानी के अंत में कभी नहीं मिलते।

- यही मैं कहने वाली थी। एक तरह की निराशा .. थामस हार्डी की तरह..!

- ये बात पूरी तरह से सही नहीं है। आप यूं कह सकती हैं कि मेरा अधिकांश लेखन ओपन एंडेड हैं। कहानी जहां खत्म होती है पाठक अपने अनुभव, अपनी बैकग्राउंड और अपनी इच्छानुसार उसे आगे बढ़ा सकता है। मैं अपनी किसी भी कहानी का ऐसा अंत नहीं देता कि पाठक को आगे सोचने के लिए कुछ बचे ही नहीं। एक बात और भी है कि संबंधों में पात्रों का मिलना ही सबसे बड़ा सुख नहीं होता। मिलना तो कहानी का अंत हुआ ना। ये जीवन का बहुत बड़ा सच है कि जहाँ हमें थोड़ी सी तृप्ति या सकून मिलता है, जीवन वहीं रुक जाता है ....तलाश एक प्यास की तरह होती है जो आगे की यात्रा के लिए उकसाती है। मुलाकात का मतलब यात्रा का रुक जाना। हम कई बार

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खो कर ज्यादा पा लेते हैं। मैं यही चाहता हूं कि मेरी अधूरी छोड़ी यात्रा हर पाठक पूरा करे।

- बहुत खूब!

- मेरी एक कहानी को अगर पांच सौ पाठक पढ़ते हैं तो वे अपने हिसाब से उसके पांच सौ अंत तय कर सकते हैं।

- इसे आप क्या नाम देंगे?

- रीडर्स पार्टीसिपेशन। वह भी पाठक होने के नाते कहानी से उतना ही जुड़े जितना कि लेखक होने के नाते मैं जुड़ा था।

- एक बात और भी है। मैं अपने पाठकों को बहुत मान देता हूं। वे अपने सारे जरूरी काम छोड़ कर मेरी रचना पढ़ रहे हैं। मैं कहानी लिख कर उन पर अहसान नहीं कर रहा। वे मेरी कहानी पढ़ कर मुझ पर अहसान कर रहे हैं।

- वेल सेड। ये तो बिलकुल नयी बात हो गयी। थैंक्स। अब आपका उपन्यास पढ़ना बाकी है। आज ही सुबह डाउनलोड किया है जनाब। अभी मेरे सामने खुला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

05/01/2015 9.07 AM

- हैलो!
- हैलो, अभी कुछ न कहें। कहानी पढ़ रही हूं। एक काम करें। सज्जाद अली की ये ग़ज़ल हर जुल्म तेरा याद है सुन रही हूं। कई बार सुन चुकी। ये रहा लिंक। https://www.youtube.com/watch?v=FkLFz2RzRhQ. मेरे साथ साथ सुनिये। ये लीजिये।
- वाह क्या बात है। मैं कई बार सुन चुका। एक बार आपके साथ सही।
- आपकी कहानी डर। डर इसमें सच्चा है या झूठा?
- हे भगवान, मल्टी टास्किंग की हद है।
- जो पूछा वह बतायें भगवन।
- डर तो डर है!
- हाहा!
- इस पर एक घंटे की फिल्म बनी थी।
- बननी ही चाहिये थी।
- बहुत परेशान हूं।
- क्या हुआ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- गलती से 10 पेज की एक अच्छी कहानी किसी ने पीडीएफ में कन्वर्ट कर दी। अब दोबारा टाइप करना पड़ रहा है। सुबह सुबह मूड खराब..।

- अब?

- कर रहा हूं टाइप ..।

- गुड ....।

- मारूंगा हां। यहां मेरी जान निकली जा रही है और आप गुड़ बांट रही हैं..।

- undo नहीं हो सकता?

- ये सुविधा नहीं!

- रिकवर नहीं कर सकते फाइल?

- किसी और की गलती भुगत रहा हूं!

- ओह, किसकी गलती?

- एक आया था मेरा पाठक, लैपटॉप में देख रहा था मेरी रचनाएं। कर बैठा कमाल!

- जल्दी टाइप करें हाहा ....यहां क्यूं टाइम वेस्ट कर रहे हैं हाहा हाहा !!

- ये नहीं कि मदद करें। भाषण ऊपर से!

- कैसे?

- कम से कम स्माइली तो भेजें!

Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

- आशीर्वाद तुम्हारे साथ है बच्चा, जमे रहो!

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हां रे! अब यही रह गया है। जो भी आता है टिका जाता है।

- हाहा!

- चलो एफबी बंद करके काम करूं?

- मिलते रहेंगे!

- बेशक!

- बाय!

- अब पूरा हुआ काम। गुड़ बांटो!

- पूछने ही वाली थी कि आपका काम पूरा हो गया?

- जी हो गया लेकिन मूड बहुत बिगड़ गया था!

- मेरे आशीर्वाद के बाद हीही हीही!

- आपको तो बस!

- सब कुछ चलता रहेगा। मैं ही नहीं रहूंगा।

- अब मेरी एक और कहानी और उसका संवाद मुझी पर!

- आप लिखते हैं - मुम्बई जाना होगा? वहां बेहतर सुविधाएं हैं मौत को पीछे सरकाने की। अमेरिका में और बेहतर हैं। लेकिन पैसे?

- दिव्या तुम कहां हो कहानी पढ़ रही हो?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेकिन मुझे तो खराब चोक वाली ट्यूब लाइट की तरह न जाने कब तक भक...भक... जलना-बुझना है। सबकी आंखों में चुभते हुए!

सबकी चिंता का ग्राफ ऊपर उठता रहेगा। इतना ऊपर कि एक दिन मैं ही उस ग्राफ की सीमा से बाहर निकल जाऊंगा।

हम सब भाई यही मान लेते हैं, इस बार दूसरे ने भेज दिया होगा। सामने कोई नहीं आता।

अंधे कुएं में पता नहीं कितना डालना पड़े। न वापसी की गारंटी, न मेरे ठीक होने की।

सूर्य अभी-अभी डूबा है और जाते-जाते जैसे अपने पीछे रंगों की बाल्टी को ठोकर मार गया है। सारे रंग गड्ड मड्ड होकर क्षितिज में बिखर गये हैं।

- वाह, क्या तो स्पीड है। वो कहानी पूरी अब दूसरी शुरू .. ! मेरी किसी न किसी कहानी के अंश मुझे भेजती ही रहती हैं।

- हर बात पर ये फेस बनाना बंद करें! ओके! यहां तो हर समय कोई न कोई कहानी आपकी खुली ही रहती है!

- सड़कों पर अभी भी पिछले कई बरसों के बकाया पोस्ट ग्रेजुएट्स और ग्रेजुएट्स हर तरह से योग्य, जरूरतमंद और इच्छुक होने के बावजूद अपने लायक कोई काम नहीं तलाश पाये थे और हर वक्त अपने हाथ में मैली पड़ चुकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डिग्रियों, आवेदन पत्रों की फोटोकॉपियों और अखबारों की कतरनों कर बंडल उठाये दफ्तरों, फैक्टरियों, सेवा योजन कार्यालयों के गेट के आसपास और चौराहों, नुक्कड़ों पर देखे जा सकते थे। वे हर कहीं मौजूद थे। वे सब जगहों पर अरसे से थे।

....

- बॉटनी का गोल्ड मैडलिस्ट बैंक के काउंटर पर बैठा दिन भर नोट गिनता था और फिजिक्स का फर्स्ट क्लास फर्स्ट कहीं सड़े हुए सरकारी दफ्तर में घुन लगी कुर्सी पर बैठा आलतू-फालतू की चिट्ठियों को दर्ज कर रहा था। अंग्रेजी साहित्य के एमए पास युवक होटल में ग्राहकों के डिनर के ऑर्डर लेते मिलते और हिन्दी का पीएचडी किसी दूर-दराज की चुंगी पर बैठा जाहिल ट्रक ड्राइवरों से माथा-पच्ची कर रहा होता। पालिएस्टर टैक्नालाजी में पीएच डी युवक किसी चाय कम्पनी में मार्केटिंग मैनेजर होता। कहीं कहीं ऐसा भी होता कि घोड़ा डॉक्टरी की डिग्री ले लेने के बाद भी जब किसी युवक को दूर पास कहीं भी छोटी-सी नौकरी नहीं मिलती थी तो वह मोटर पार्ट्स की या किताबों की सेल्समैनी वाली घुमंतू नौकरी सिर्फ़ इस लिए स्वीकार कर लेता था कि बेरोज़गार रहने से तो अच्छा है, कुछ बेच ही लो। घर वालों के सामने हर समय थोबड़ा लटकाये रहने से तो यही बेहतर था।

....

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

05/23/2015 4.09 PM

- हैलो!

- आपकी सारी कहानियां अपनी सी लगती हैं - मेरी ज़िंदगी का एक बेहतरीन दौर तुम्हारे साथ ही गुज़रा है। ज़िंदगी के सबसे अर्थपूर्ण दिन तो शायद वही रहे थे।

- दो जीवन - समान्तर!

- हां वही!

- लगता है सब पढ़ लिया!

- हां, कुछ कहानियां दो तीन बार!

- कैसा लगा गुजरना बहुत दिनों बाद किसी लेखक के पूरे साहित्य के बीच से?

- वंडरफुल यू आर। कितना समर्पण होता है लेखक में। प्रणाम है आपको!

- लगता है आपकी बाई भी काम से जी चुराती होगी। देखती होगी मैडम दिन भर बिजी हैं पढ़ने में!

- अब जो मैं लिखूंगी इन सब के बारे में वो जबरदस्त होगा।

- जानता हूं लेकिन एक लेखक के पूरे साहित्य से गुजरना कैसा लगा?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अपनी रचनाओं की समीक्षाएं भेज सकें तो आसानी होगी। मैं विस्तार से आप पर लिखना चाहती हूं।

- आपने नोट्स तो बना ही लिये हैं। समीक्षाएं भेजी भी हैं और वेबसाइट पर भी हैं।

- जी

- कुछ और हैं। स्कैन करके भेजनी होंगी। थोड़ा समय लगेगा।

- आपकी साइट पर आपका आत्मकथ्य और इंटरव्यू भी पढ़े हैं। आपको बेहतर तरीके से जानने में मदद मिली।

- हममम

- आपकी कहानी पत्थर दिल - दरअसल मेरा रोल नम्बर आते ही तुम मेरा 'यस सर,' सुनने के लिए एकदम तैयार होकर बैठ जाते थे। इसलिए याद रह गया।

अपना सा लगता अनुभव या उस लड़की का जो प्रेम करना चाहती हो। एक बात बताऊं देव?

- जी!

- जब कभी भी किसी से लिखने की बात करती हूं .... हमेशा यही सलाह मिलती है कि थोड़ा पढ़ लो। दो चार राइटर्स को तो पढ़ ही लो। पढ़ती हूं मैं तो पाती हूं कि अरे सब कुछ तो लिखा जा चुका है। अब मैं क्या लिखूं। लिखने की क्या ज़रूरत है!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- नहीं छवि, अपने लेखन को तो खुद ही जस्टीफाई करना होता है।

- जी!

- एक सच्ची घटना है। एक बार बहुत सारे नये लेखक से बड़े लेखक से मिलने और उससे लेखन के बारे में टिप्स लेने सुनने गये। लेखक ने सबसे पूछा-क्या बनना चाहते हो तो सबने एक स्वर से कहा-लेखक बनना चाहते हैं। लेखक ने एक ही शब्द का भाषण दिया-लिखो। और चले गये।

- वाह ग्रेट, लेकिन संतुष्टि का स्तर..... मैं किसी भी अच्छे लेखक को पढ़ कर महसूस करती हूं।

- कहा जाता है कि दुनिया में सिर्फ सात ही कहानियां हैं जिन पर पूरी दुनिया का साहित्य टिका है। फर्क हर लेखक की क्रियेटिविटी का ही होता है।

- और मुझे लिखते समय किसी भी संवाद के दोहराव का डर रहता है। कारण ये है कि सभी शब्द मुझे अपने से लगते हैं।

- पूरी दुनिया में प्यार पाने और प्यार जतलाने के तरीके एक से हो सकते हैं लेकिन प्रेम कहानियां एक जैसी नहीं होतीं।

- वाह!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- छवि जी, मैं भी पहले यही सोचता था। आखिर कुछ तो होता है हर लेखक में जो उसके लेखन को दूसरों से अलग करता है।

- जी!

- पता है कि कई नये लेखक किसी को भी नहीं पढ़ते कि कहीं उनका लेखन किसी से प्रभावित न हो जाये। होता ये है कि वे कहीं नहीं पहुंचते और समय आगे निकल जाता है।

- आप क्या सलाह देते हैं अपनी इस संभावनाशील लेकिन आलसी लेखिका मित्र को।

- लेखिका तो आप लिखना शुरू करने के बाद बनेंगी।

- ये मेरी बात का जवाब नहीं है सर।

- हमें मास्टर्स को ये जानने के लिए पढ़ना चाहिये कि उनके साहित्य में क्या था कि वह हम तक पहुंचा और उनके जाने के बाद आज भी प्रासंगिक है। समकालीनों को इसलिए पढ़ना चाहिये कि वे अपने वक्त को अपने साहित्य में जिस तरह से ला पा रहे हैं क्या मैं भी कर पा रही हूं या नहीं। कहीं मैं ट्रीटमेंट, कथ्य, भाषा शैली वगैरह में पीछे तो नहीं रह गयी।

- आपसे बात करके सारे भ्रम दूर हो रहे हैं।

- और मेरा भ्रम तब दूर होगा जब आपका लिखा कुछ मिलेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेकिन मैं यह कहना चाहती हूं कि मैं हैप्पी एंडिंग वाली कहानियां लिखना चाहूंगी।
- कुछ भी लिखें लेकिन लिखें तो सही।
- मेरी सोच आपकी सोच से अलग है, इस बात से आप परेशान तो नहीं होंगे ना सर?
- सबकी सोच अलग होनी ही चाहिये। तभी लेखन में नवीनता आयेगी। एक अच्छी बात है कि आप जीवन के सकारात्मक पहलू को देखती और मानती हैं। इससे बहुत फर्क पड़ता है।
- आपका लेखन तो पूरा पढ़ लिया, किसी और लेखक का सुझाव देंगे सर?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

05/26/2015 6.00 PM

- हम तो जीते हैं कि दुनिया में तेरा नाम रहे,
  कहीं मुमकिन है कि साकी न रहे, जाम रहे।
  - इकबाल

- गुड मार्निंग!
- उस रात की गंध/धीरेन्द्र अस्थाना..............पढ़ी अच्छी लगी।
- वाह।
- कुछ और लेखकों के नाम बतायें।
- बहुत हैं। अपने आप खोजेंगी तो बेहतर रहेगा। वैसे आपको जिन साइट्स के लिंक दिये थे, सभी अच्छे और महत्वपूर्ण लेखक वहां हैं। नाम गिनाने से आप उन्हीं को पढ़ेंगी। आप अपनी पसंद से पढ़ें।
- बहुत खराब हैं आप। इतनी सी मदद नहीं कर सकते।
- ऐसा है कि मैं मछली पकड़ कर देने के बजाये मछली पकड़ना सिखाने में विश्वास करता हूं।
- इतनी अच्छी बात कह कर मुझे लाजवाब कर दिया। आखिर आप मेरे प्रिय लेखक यूं ही नहीं हैं। वैसे मैंने आज सुबह रमाकांत की कहानी अंधेरा पढ़ी।
- खूब पढ़ो, खुश रहो और दूध से नहाओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आशीर्वाद पूरा करो भगवन!

- जानती तो हैं ना पूरा आशीर्वाद। कहने की जरूरत है क्या?

- दूधो नहाओ पूतो फलो मेरे लिए जीवन में सबसे अच्छा आशीर्वाद। कोई ऐसा रचनाकार बतायें जिसने पहाड़ पर खूब लिखा है। बेशक पहाड़ बहुत नहीं देखे, साहित्य में ही पहाड़ देख लें।

- ये काम भी खुद ही करना होगा।

- मुझे पता था यही जवाब मिलेगा।

- लेखक को लिखने, पढने के अलावा देखने पर बहुत समय लगाना चाहिये। अपनी नज़र विकसित करनी चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/02/2015 8.12 PM

- हैलो! कैसी हैं।

- कितना अच्छा है कि आपको पढ़ना और नोट्स बनाना साथ साथ चलता है!

- अगर मुस्कराने की इजाज़त हो?

- सिनॉप्सिस बन रहे हैं साथ साथ!

- बेशक काम हो न हो!

- बताऊं क्या?

- मैं यहां मुंबई में और मेरा सारा साहित्य आपके घर। मुझे याद हो न हो, आपको सब याद है। जो चाहें पूछ लें बता दें।

- आप बेशक मुस्करायें लेकिन थोबड़े न बनायें!

- दिस इज टू मच!

- थोबड़ा शब्द आपने अपनी एक कहानी में इस्तेमाल किया है। पूरे दिन उसे याद करके हँसती रही। अब लिखा तो चैन मिला। ये रहा कहीं कहीं ऐसा भी होता कि घोड़ा डॉक्टरी की डिग्री ले लेने के बाद भी जब किसी युवक को दूर पास कहीं भी छोटी-सी नौकरी नहीं मिलती थी तो वह मोटर पार्ट्स की या किताबों की सेल्समैनी वाली घुमंतू

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकरी सिर्फ़ इस लिए स्वीकार कर लेता था कि बेरोज़गार रहने से तो अच्छा है, कुछ बेच ही लो। घर वालों के सामने हर समय थोबड़ा लटकाये रहने से तो यही बेहतर था।

- आपने ये अंश पहले कोट किया था। मेरा ही थोबड़ा मुझे ही वापिस हा हा!

- क्या कहना चाहते हैं सर..........................ये क्या है?

- मैं मुस्कुराता हूं तो आपको तकलीफ होती है...चुप रहूं तो भी!

- हर बार हर कहानी पर रिस्पांस देने की ज़रूरत नहीं। टेक इट इज़ी। मैं तो पढ़ते हुए नोट्स बना रही हूं। वर्ड फाइल में पेस्ट कर रही हूं। आपने इतना खजाना दिया है कहानियों का तो कुछ तो मुझे भी करना ही चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/06/2015 3.04 PM

- हैलो!

- आज गद्यकोष पर कई घंटे बिताये और बहुत कुछ पढ़ा।

- बहुत फास्ट रीडर हैं आप!

- समस्या ये है कि इतना पढ़ने के बाद... कोई पूछे.. कौन सी कहानी.. किसकी थी.. मेरे लिए याद करना मुश्किल हो जाता है।

- पढ़ते समय होने वाला अहसास ज्यादा मायने रखता है.. याददाश्त साथ नहीं भी देती तो भी कोई बात नहीं। पाठ सुख पाना ही बड़ी बात है।

- सही कहा आपने!

- शायद एक खराब आदत होती है कि एक ही स्ट्रोक में सब खत्म कर दिया जाये। अच्छी रचना का अच्छे संगीत की तरह आनंद लिया जाना चाहिये। भीतर उतरे रचना तो ज्यादा सुख देगी। आप पढ़ने का कोई प्रोजेक्ट नहीं कर रही हैं और न ही फास्ट रीडिंग कम्पीटीशन में हिस्सा ही लें रही हैं। कोई एक लेखक चुनें, उनके साहित्य का पूरा आनंद लें उसके बारे में कुछ लिखें तभी अगले लेखक की ओर बढ़ें। देखेंगी कि ज्यादा सुख मिल रहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- सर आप ये बातें इतनी देर से क्यों बता रहे हैं। आपने बहुत अच्छी बात बतायी। मेरे सामने कारण दूसरा रहा..... जब सब याद करने की आदत थी, तो सब कहते थे भूल जाया करो जल्दी। ज्यादा याद मत किया करो।

- जी!

- अब आलम ये है कि चलने दो... के चक्कर में... सब कुछ... जल्द ही आपके बताये तरीके से पढ़ूंगी। पहले सभी को ले कर एक नज़र देख रही हूं। बेशक इसे आप भकोसना जैसा कुछ कहेंगे।

- वही कहता।

- आपका सारा साहित्य तो पढ़ लिया!

- जी अब आगे बढ़ें!

- जो चाहें पूछ सकते हैं। मुझे पागल समझ रखा है क्या...?

- हाहा हाहा!

- मेरा कहने का मतलब था कि अब युनिवर्सिटी के रिसर्च स्कालर की तरह सारा दिन राइटर को दिमाग में उठाये उठाये घूमना मुश्किल है। उसके जनम, मरण की सारी डिटेल्स के साथ।

- उफ. चुप रहना ही भला..।

- जैसा कि एकेडमिक सफलता के लिए जरूरी होता है।

- जी सरकार!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हे भगवान, कोई [illegible] दे.. इस याददाश्त के मारे इन्सान को.. !
- बोला न हो जायेगी। धैर्य नहीं है क्या?
- इतना अहसान अपने पास रखो श्रीमन, समझे..वो राइटर ही लकी होगा जिसके साहित्य पर मैं पीएचडी करूंगी। हाहा हाहा.. !
- क्या पढ़ रही हैं इन दिनों.. ?
- सब कुछ और कुछ भी नहीं।
- मतलब।
- जब पढ़ रही होती हूं तो पता होता है कि क्या पढ़ रही हूं। बाद में याद ही नहीं रहता कि क्या पढ़ा था।
- ....
- जवाब क्यों नहीं दे रहे? इसलिए कि आपके काम पर पीएचडी नहीं कर रही?
- आप कह ही रही हैं। हर बार टोकना अच्छा थोड़े ही होता है।
- आपके बारे में एक अच्छी बात ये है कि आप खुद की समझदारी और अनुभव मुझ पर थोपते नहीं ....! आप मुझे कुछ भी समझाने की जल्दी में नहीं रहते और मुझे हर बात का सटीक जवाब देते हैं..........थैंक्स...।
- अब मैं इसका क्या जवाब दूं?
- अब क्यूं जवाब दिया? चुप ही रहते?
- बोलूं तो या ना बोलूं तो?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

06/30/2015 9.07 PM

- हैलो सर!
- कैसी हैं?
- फाइन और आप?
- हमेशा की तरह f9 नहीं हूं!
- क्यों क्या हुआ? कुछ सीरियस!
- बुखार.. !
- ओह दवा आप लीजिये, दुआ मैं करता हूं!
- जी, वैसे तो फीवर को सीरियस होना चाहिये था कि मुझे क्यों हुआ!
- हां!
- कम्बख्त पछता रहा होगा!
- क्या ले रही हैं - दवा, दुआ या दारू?
- बताऊं क्या?
- आप लेती नहीं, मैं ऑफर नहीं कर सकता!
- हाहा!
- वैसे मेरे सभी पुरुष पात्र पीते हैं, मैं भी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- और महिला पात्र भी आपके साथ और आपके बराबर ही पीते हैं?
- मैडम इस वाक्य को इस तरह से कहें - महिला पात्र पुरुष पात्रों के साथ पीते हैं मेरे साथ नहीं। और पाठक पाठिकाएं अपनी जानें!
- और ये भी जोड़ दूं कि पीने वाली पाठिकाओं के पति जानें!
- बेशक जोड़ दें। नये आयाम जुड़ेंगे।
- कहानी में जुड़ें या न जुड़ें उस बेचारी महिला के जीवन में जरूर जुड़ जाएंगे।
- देखने में क्या हर्ज है?
- आपकी तबीयत कैसी है?
- बेहतर, आज बहुत दिन बाद सैर करने गया।
- सुना है, मुंबई वाले कार से सैर करने जाते हैं!
- सही सुना। पार्क के गेट तक कार से। कोई एतराज!
- नहीं, बस क्या तो शान है आपकी कि सैर करने भी कार से जाते हैं।
- ऐसा है छवि जी, मुंबई में पैदल सड़क पार करना भी मुश्किल होता है। दस बार सोचना पड़ता है कि कहीं कोई गाड़ी न ठोक जाये और दूसरी बात आपके पूरे शहर का एरिया और पापुलेशन इतने नहीं होंगे जितने हमारे एक एक उपनगर के हैं। हर उपनगर अपने आप में एक शहर

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। तो पार्क तक पैदल आने जाने में ही सैर का समय पूरा हो जायेगा।

- समझ गयी सरकार। महानगरीय जीवन का एक और पहलू!
- आपको एक मजेदार किस्सा बताऊं।
- ज़रूर!
- हमारे एक परिचित की शादी हुई। शादी तो कहीं और हुई थी लेकिन रहना दिल्ली के किसी बाहरी इलाके में था। पहली ही रात, वाइफ के साथ, आपकी भाषा में कहूं तो ठीये पर रात देर से पहुंचे। सुबह सुबह बीवी ने देखा कि पति महाशय पॉलिथीन की थैली में पानी की बोतलें स्कूटर की बास्केट में रख रहे हैं और उन्हें भी चलने के लिए कह रहे हैं।
- ...
- वाइफ ने कहा कि जहां भी जाना है, इतनी जल्दी क्या है। आज पहला ही दिन है, आराम से तैयार हो कर चलेंगे।
- फिर?
- हमारे मित्र बोले कि अभी ही चलना है और ये तैयार होने का पहला कदम है। बीवी हैरान कि अल सुबह स्कूटर पर कहां जाना है। तब पति ने भेद खोला कि यहां लैट्रिन नहीं है कहीं। दूर जाना पड़ता है। स्कूटर पर चलेंगे तो अच्छी जगह भी मिलेगी और जल्दी लौट भी आयेंगे!
- हाहा किस्सा, मजेदार लेकिन स्थिति दुखद। कोई और बात करो!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/02/2015 6.01 PM

- आपको आज खूब याद किया!
- क्यों उपन्यास के लिए ही ना?
- जी, कई दिन से उपन्यास अटका पड़ा है। दरअसल शादी होने और शादी टूटने के बीच के प्रासंग हैं जो सूझ नहीं रहे। उन्हें छोड़ कर आगे बढ़ा नहीं जा रहा।
- सुनिये सर, एक लतीफा सुनिये शायद मूड बन जाये!
- चलिये यही टोटका सही।
- एक कार की नीलामी हो रही थी। बीस लाख, पच्चीस लाख तीस लाख....

  एक आदमी ने हैरत से कार की हालत देखी। उसे कार में कोई चीज ठीक ना लगी तो उसने पास खड़े आदमी से पूछा- भई, इस खटारा में ऐसी कौन सी खूबी है कि इतना रेट लग रहा है!
- जवाब मिला - जनाब अब तक इस कार के इस एक्सीडेंट हो चुके हैं और हैरत की बात ये है कि हर एक्सीडेंट में सिर्फ बीवी ही मरती है। आदमी बोला – चालीस लाख।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/04/2015 10.11 AM

- कैसी हैं?
- आपकी दुआ!
- भला। कैसा है जीवन?
- हमेशा की तरह अच्छा.. अगर ठीक से जीया जाये!
- मेरे ख्याल से लेखन के लिए छटपटाहट बेहद जरूरी होती है। जब ज्यादा हो जाती है तो लिखा जाता है!
- जी!
- हमेशा अच्छा से क्रांति नहीं होती!
- भला होने से भी नहीं होती!
- ठीक है!
- क्या ठीक है?
- ठीक नहीं होना चाहिये!
- तभी ठीक करने का ठेका मिलेगा हाहाहाहहाहा!
- ठीक है का मतलब आइ डोंट एग्री। जैसे फेसबुक पर कुछ लाइक करने का मतलब हर बार पसंद करना नहीं होता। सहमत होना या नो कमेंट जैसा भी हो सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- समझ रहा हूं। आप देखते होंगे कि कई बार किसी दुखद खबर पर भी दस बीस लाइक आ जाते हैं। अब चूंकि वहां सहमत होने या नो कमेंट होने के लिए कोई बटन नहीं है इसलिए आदतन लाइक बटन ही दब जाता है और लोग बखेड़ा करना शुरू कर देते है।
- इतनी लम्बी भूमिका की वजह!
- देन बी एंग्री!
- ठीक है!
- इसका मतलब था बोर न करें!
- आज आपके मन में क्या है जी, बहकी बहकी बातें। कुछ और तान छेड़ो!
- आप तान छेड़ो....मैं चली!
- कहां चली, राम कली हाहाहाहा!
- जा रे जोगी रे!?
- मिलते हैं!
- सी यू सून!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/07/2015 12.09 PM

- हैलो कैसी हैं?

- f9!

- मैं जार्ज आर्वेल का उपन्यास 1984 पढ़ रहा हूं। मैंने इनके एक उपन्यास एनिमल फार्म का अनुवाद भी किया है।

- मैंने पढ़ लिया है आपकी साइट पर!

- वाह बताया नहीं कभी!

- मैंने वैसे भी आपको सब कुछ कहां बताया है?

- ये भी सही कहा!

- चलो आज एक बात बता ही देती हूं कि आपके लेखन पर कुछ लिख रही हूं। बस पूछियेगा नहीं कि क्या और कब तक पूरा होगा।

- ग्रेट अच्छा लगा। मेरा दिन बन गया।

- देखें कब तक आप इस खुशफहमी में रहते हैं कि पूरा हो और पढ़ने को मिले।

- कभी तो वो लहर आयेगी।

- 20 को इंटरव्यू है!

- मेरी अनेक शुभकामनाएं। सफलता आपके सैंडिल चूमे!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- एक और खबर!

- वो क्या?

- पीएचडी की डिग्री भी आ गयी। इंगलिश में .....नॉर्थ ईस्ट की एक युनिवर्सिटी से!

- डिग्री आ गयी माने, काम कब किया था?

- तीन बरस से चल रहा था।

- कमाल है! आप कब से मुझसे कह रही थीं कि पीएचडी करनी है और यहां घर बैठे आ गयी डिग्री। बधाई दूं लेकिन कुछ समझ तो आये। बल्कि आपने खुद ही तो बताया था कि आप उस डिस्हार्मनी इन मैरिज वाले विषय में फेल हो गयीं थीं और अब दूर गगन की छांव से चली आ रही है पीएचडी।

- हां कर ली है पीएचडी ये सच है. .. बैक डेट से वहां रजिस्ट्रेशन मिल जाता है। ये प्राइवेट युनिवर्सिटी है।

- माने बिना वहां गये? बिना वाइ वा के?

- हां दो गाइड होते हैं। एक अपना लोकल गाइड हम चुन सकते हैं..... !

- वाह स्टूडेंट ही गाइड चुने। बहुत खूब। तो अब आप डॉक्टर हो गयीं?

- यस इन ए वे हां!

- कहीं मान्यता है क्या ऐसी डिग्री की?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हां मान्यता तो उतनी तो नहीं लेकिन कई जगह धुप्पल में चल जाती है। परमानेंट जॉब भी मिल जाता है।

- हममम

- लेकिन सच कहूं तो मैं इस तरह की चीजों से संतुष्ट नहीं हूं। पर ये भी स्वीकार करने में हर्ज नहीं है कि रेगुलर कभी हो ही नहीं पाती मेरी पीएचडी।

- ओके, एक और कर लेना। मना किसने किया है।

- जी!

- आज ही पढ़ा मैंने कि छतीसगढ़ में कोई पांडे जी हैं जो बारह विषयों में एमए और पांच विषयों में पीएचडी हैं।

- पता है आपको कि जब मेरी शादी हुई थी तो मैं सिर्फ बीए बीएड थी। पहला एमए चल रहा था जिसकी परीक्षाएं शादी के बाद दीं। बाकी सारी पढ़ाई शादी के बाद पति के प्रेरित करने और अपनी मेहनत के बल पर कीं। अब कोई मेहनत करना चाहे और ओरिएंटेशन न मिले या मिले तो टाइम न मिले तो सारी सेटिंग खराब हो जाती है। अभी भी मन की बात कहूं तो हिंदी में ही पीएचडी करने की हार्दिक इच्छा है। ये भी तय है कि करूंगी ज़रूर।

- मेरी कामनाएं। सहयोग का वायदा भी।

- एक गड़बड़ हो गयी है।

- वो क्या?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- सारी कहानियां पढ़ कर जितने नोट्स बनाये थे बच्चों ने एक ही क्लिक में डिलीट कर दिये!

- उसकी चिंता न करें। आपको रीसाइकिल बिन में मिल जायेगी वो फाइल।

- कोई मतलब नहीं। सब जगह देख लिया। अपने गेम्स लोड करने के लिए स्पेस बनाने के चक्कर में सब कुछ साफ कर दिया है बच्चों ने।

- ओह, कोई और उपाय?

- कोई नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/11/2015 9.23 PM

- हैलो ये सुनें -अजीब अंधेरा है साकी तेरी महफिल में
  किसी ने दिल भी जलाया तो रौशनी न हुई।
- हममम
- और ये भी
- लोग घर जला कर मयखाने में जाते हैं
  वहां की रौशनी में सुकून मिलता है
- आपकी कोई खबर नहीं!
- मैं हमेशा की तरह फाइन!
- ग्रेट। आपका जॉब, घर, बच्चे, पति, सास ससुर, पढ़ना लिखना, प्यार, और बाकी सब कुछ?
- सब कुछ उत्तम। कुछ और पूछना है?
- नो थैंक्स। वैसे कॉलेज कैसा चल रहा है?
- पढ़ाना मुझे हमेशा अच्छा लगता है। लगता है इस बहाने फिर से मुझे कॉलेज लाइफ दोबारा जीने को मिल रही है!
- क्या उसी कॉलेज में पढ़ा रही हैं जहां आप पढ़ती थीं?
- हां, सब कुछ जाना पहचाना। बस मेरी ही जगह और भूमिका बदली है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- अच्छा लगता होगा। एक बात बताऊं?

- जी!

- मेरे हिस्से में कभी भी रेगुलर कॉलेज नहीं आया।

- क्यों, तो ये सब पढ़ाई?

- बारहवीं प्राइवेट की। शाम को एक जगह ट्यूशन क्लासेज के लिए जाता था। बीए सुबह की क्लासेस से किया एक नौकरी के साथ। एमए फिर नौकरी के साथ। जब पीएचडी कर रहा था तो भी नौकरी थी। छुट्टी के दिन ही गाइड के घर जाता था। बाकी जो भी डिग्री बटोरी हैं, वे सब संडे या शाम की क्लासेस की।

- पता है मुझे!

- कैसे?

- आपकी वेबसाइट पर पढ़ा था और अच्छा लगा था कि आपने जो भी हासिल किया है आपको यूं ही नहीं मिल गया।

- जी

- सर, आपको एक मजेदार जोक सुनाती हूं। जब से सुना है लगातार हंस ही रही हूं। जब तब शेयर नहीं कर लूंगी, चैन नहीं पड़ेगा।

- यानी बाकी टाइम हंसने की जिम्मेवारी मेरी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
- सुन, बिल गेट्स को बंता सिंह से एक खत मिला और बिल गेट्स वह खत पढ़ते ही बेहोश हो गया। पता चला कि बंता सिंह ने खत में पांच सवाल पूछे थे। उसने लिखा था- डीयर सर, मेरे इन पांच सवालों का जवाब दें तो मेहरबानी होगी। सवाल नम्बर एक – आपका कीबोर्ड ठीक से नहीं बनाया गया है। ए किधर तो बी किधर। इसे अल्फाबेटिकली बनाया जाये। बतायें सही कीबोर्ड वाला सिस्टम कब तक लांच करेंगे। सवाल नम्बर दो – इसमें स्टार्ट बटन तो है लेकिन स्टाप बटन कहीं नहीं है। सवाल नम्बर तीन इसमें रीसाइकिल बिन है। रीस्कूटर बिन वाला मॉडल कब आयेगा। नम्बर चार – आपने हमें एसएस वर्ड वर्जन दिया। एमएस सेंटेंस वर्जन कब निकालेंगे और आखिरी सवाल जिस की वजह से दिल का दौरा पड़ा – सवाल नम्बर पांच - नाम आपका गेट्स है और आप बेचते विंडोस है।

- हाहाहाहा। अब मुझे ये आगे शेयर करना पड़ेगा नहीं तो मेरी हालत खराब हो जायेगी।

- बेशक। ठेल बेटा ठेल।

- एक बात बताओ बल्कि सुझाओ।

- जी!

- मुझे जॉब छोड़े काफी अरसा हो गया। खूब आराम कर लिया। अब आराम करते करते सारा दिन अकेले घर में रहते रहते थक गया। कितना लिखूं, कितना पढ़ूं, कितना

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फेसबुक पर समय बरबाद करूं। समझ नहीं आ रहा। पीठ दर्द के चक्कर में यात्राएं बंद हैं। इस सारे चक्कर में सेहत खराब हो रही है!

- जी आगे!

- नौकरी अब करनी नहीं!

- मेडिटेशन, कोई समाजसेवी एनजीओ......... !

- एनजीओ सोचा जा सकता है और . !

- ओशो?

- ओशो नहीं हो पायेगा!

- कभी मेडिटेशन किया?

- मेरी वर्तमान सेहत अनुमति नहीं देती और फिर लेकिन वो तो स्थायी मुक्ति नहीं ना समय बिताने की!

- आप अपने अकेलेपन से खुश क्यों नहीं है। आपने पास तो इतना बढ़िया रचना संसार है। संगीत है। यायावरी है। आप अकेले रहते हुए भी अकेले कहां होते हैं!।

- दोस्त, अब ये अकेलेपन की सीमाएं लांघ कर खालीपन होने लगा है। मैं बेशक अपने अकेलेपन को वरदान मानता हूं लेकिन कुछ भी करने को नहीं होता सारा दिन। जबकि पहले मैं बेह्द बिजी रहा करता था। अचानक ये सब। तन और मन स्वीकार नहीं कर पा रहे।

- एक काम करें सर!

- कहें!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- चंदन को एडाप्ट कर लें। उसके गॉड फादर बन जायें। दोनों का भला हो जायेगा।

- हाहा - - चंदन मेरा बाप बनना चाहेगा। पता है वो फिल्म लाइन में है।

- आज टेनिसन की कविता पढ़ायी क्रासिंग द बार!

- टेनिसन आप जैसे लोगों के कारण आज भी जिंदा हैं। सलाम आपको!

- आप कुछ अलग करने के बारे में सोचें। जिससे आपको आत्मिक सुख मिले!

- मैं तो अपनी तरफ से सब कुछ आत्मिक सुख के लिए ही करता हूं लेकिन जानता हूं संसार में मेरी हैसियत बूंद से भी कम है। मुझसे बेहतर कहने सुनने वाले आ कर चले गये!

- सुनें मेरी बात!

- जी!

- आप यूनीक हैं!

- मैं अपनी सीमाएं जानता हूं!

- आपका काम बोलता है। आपकी जगह साहित्य में ..... !

- नहीं छवि यहां भयंकर राजनीति, मार्केटिंग, पुरस्कार, सम्मान, प्रकाशन, समीक्षा हर बात के लिए। बाजार है ये और मैं कभी नहीं कर पाया।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- छोड़ें उसे ....पहले मेरी सुनें!

- बोलें, सुनता हूं!

- कुछ ऐसा ज़रूर करें लाइफ में... जो आपने अकारण किया हो। जिसमें आपको खुशी मिली हो।... बिना क्रेडिट के...बिना फायदे के... भावना के. और ये काम रोज हो!

- किया है कई बार!

- मसलन!

- अपनी सारी किताबें उपहार में दी अनजान लोगों को, जूता पालिश करने वालों को सामान ले कर दिया, गरीबों को कपड़े दिये, पैसों से मदद की, लेकिन अक्सर मैं ही ठगा गया।

- आप फिर भी करते रहें। छोटा या बड़ा!

- लेकिन!

- अब फिर से करें। हर दिन नया होता है।

- इस हफ्ते पुराना पीसी दे रहा हूं। एक बात बताता हूं!

- अच्छा लगा होगा। हां बताओ, मुझे क्या दे रहे हैं?

- पिछले बरस 6 वाचमैनों को एक एक शाल दी कि रात को सर्दी होती है। अगली रात देखा कि रात भर कांपते बैठे रहते हैं। मैंने पूछा शाल किधर है?

- बेच दी होगी!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- नही बीवी को दे दी सबने। उसने बक्से में बंद कर दी। कितनी बार सामान दिया। लोग इस्तेमाल ही नहीं करते। घर में रख देते हैं।

- मुझे क्या मिलेगा?

- आप बतायें, आपको क्या दूं वैसे मेरी हैसियत ही क्या है कि आपको कुछ दे पाऊं। स्नेह के अलावा!

- हममममममम......। बाय अभी। आराम करना है फिर बर्थडे पार्टी में जाना है फिर डिनर ..!

- या किट्टी पार्टी में हा हाह!

- लिंक भेज रही हूं सुनें – हंगामा है क्यूं बरपा..... https://www.youtube.com/results?search_query=hungama+hai+kyon+barpa+by+ghulam+ali! । क्या आप मुझे बेहतरीन संगीत का लिंक या कूरियर से कलेक्शन ही भेज सकते हैं। आजकल मन संगीतमय हो रहा है।

- कहें क्या भेजूं – नूर जहां, बेगम अख्तर, फरीदा खान, मेहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह, हंस राज हंस सब हैं मेरे पास।

- लेकिन उर्दू शब्दकोश कहां से देखूं ।

- लिंक भेज रहा हूं उर्दू शब्दकोश का। ऑनलाइन है। http://www.lexilogos.com/english/urdu_dictionary.htm बुक मार्क कर लेना।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हर सांस ये कहती है .. हम है तो खुदा है।
- आपको एक और लिंक भेज रहा हूं बेहद शानदार। इसमें तेरा बयान गालिब सुने गुलज़ार की आवाज़ में। https://www.youtube.com/watch?v=fD0_FSsa8Go
- डिक्शनरी का तो स्टाइल ही समझ में नहीं आ रहा। पता नहीं क्या ड्रामा है। उर्दू अंग्रेजी है या अंग्रेजी उर्दू
- उर्दू तो आनी चाहिये प्रभु, उर्दू शब्दकोश देखने के लिए. या फिर अंग्रेजी आनी चाहिये।
- हाहा - बताऊं क्या?
- अब मैं क्या करूं उर्दू के सवाल पर!
- उर्दू सिखाओ अब!
- ठीक है। पहला पाठ - हमज़ुल्फ का मतलब बताओ!
- ये आइडिया अच्छा है.. कुछ खास शब्दों का मीनिंग पता चल जाये तो काम चल सकता है!
- बताओ इसका मतलब?
- नहीं पता!
- सोच भी नहीं सकतीं!
- नहीं!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- हमकदम, हमनवां, हमसफर, हमप्याला, हमनिवाला, हमबिस्तर, हमशक्ल, हमराही, हमदम इतने रेफरेंस दे दिये।

- गुड, फिर भी नहीं पता!

- साढ़ूभाई - को ब्रदर्स!

- वाह, सोच भी नहीं सकते। एक डिक्शनरी ही बना डालो हम जैसों के लिए... उर्दू टू हिंदी

- है नेट पर इस तरह की और हर तरह की डिक्शनरी।

- मेरा एक सवाल है............गॉड ...भगवान.... ये सब बातें ... आप क्या सोचते हैं?

- मेरी पीठ में कई दिन से भयंकर दर्द है। लेटता हूं तो बैठने का दिल करता है। बैठता हूं तो लेटने की इच्छा होती है। मजबूरी में लैपटॉप ले कर बैठा हूं।

- टेक केयर। आराम करें। बाय!

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/24/ 2015 8.01 PM

- सुनें सर। आज आपका उपन्यास देस बिराना शुरू कर रही हूं। देखती हूं क्या कहता है - 24 सितम्बर, 1992। कैलेंडर एक बार फिर वही महीना और वही तारीख दर्शा रहा है। सितम्बर और 24 तारीख। हर साल यही होता है। यह तारीख मुझे चिढ़ाने, परेशान करने और वो सब याद दिलाने के लिए मेरे सामने पड़ जाती है जिसे मैं बिलकुल भी याद नहीं करना चाहता। अच्छी शुरूआत। लगता है बांधेगा।

- बैठा नहीं जा रहा!

- तो खड़े हो जायें सर! हाहाहाहा - हो सकता है घर भी मुझे बार-बार वापिस बुलाने के लिए इशारे करता रहा हो। मेरी राह देखता रहा हो और फिर निराश हो कर उसने मेरे लौटने की उम्मीदें ही छोड़ दी हों.... घर... जो कभी मेरा नहीं रहा.. सिर्फ घर के अहसास के सहारे मैंने ये चौदह बरस काट दिये हैं।

- ये क्या है?

- थोबड़ा!

- क्या मुसीबत है लड़की!

- आपका उपन्यास - शुरूआत बेबे ने की है। बिरादरी से..।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बीच कौन-कौन पूरा हो गया, किस-किस के कितने-कितने बच्चे हुए, शादियां, दो-चार तलाक, दहेज की वजह से एकाध बहू को जलाने की खबर, किसने नया घर बनाया और कौन-कौन मोहल्ला छोड़ कर चले गये और गली में कौन-कौन नये बसने आये। किस के घर में बहू की शक्ल में डायन आ गयी है जिसने आते ही अपने मरद को अपने बस में कर लिया है और मां-बाप से अलग कर दिया है, ये और ऐसी ढेरों खबरें बेबे की पिटारी में से निकल रही हैं और हम सब मज़े ले रहे हैं।

मैं भी तो अपनी लड़ाई का मैदान छोड़ कर बिना लड़े ही हार मान कर जा रहा हूं। एक ही मैदान से दूसरी बार पीठ दिखा कर भाग रहा हूं।

पगली है गुड्डी भी!! ऐसे कमज़ोर भाई को अपना आदर्श बना रही है जो किसी भी मुश्किल स्थिति का सामना नहीं कर सकता और दो बार पलायन करके घर से भाग चुका है।

हम ज़िंदगी भर गलत दरवाजे ही खटखटाते रह जाते हैं और कोई कहीं और बंद दरवाजों के पीछे हमारे इंतज़ार में पूरी उम्र गुज़ार देता है। और हमें या तो खबर ही नहीं मिल पाती या इतनी देर से ख़बर मिलती है कि तब कोई भी चीज़ मायने नहीं रखती। बहुत देर हो चुकी होती है।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- घर के मोह से हमेशा के लिए मुक्त हो गया। अब कम से कम रोज़ रोज़ घर के लिए तड़पा नहीं करूंगा। बेशक तेरी और बेबे की चिंता लगी ही रहेगी।
- सर, आपके इस उपन्यास की थीम क्या है।
- अब तक आप आधा पढ़ चुकी हैं.. समझ में आ जाना चाहिये।
- आपकी तबीयत कैसी है अब?
- ठीक ठीक!
- आपकी कहानियों में परिस्थितियां बहुत बड़ा रोल निभाती हैं। वही बार बार आप बताते हैं। ये उपन्यास भी उसी दिशा में जा रहा है। ये देखें - पहले तुझे अपनी कमजोरियों के खिलाफ, अपने गलत फैसलों के खिलाफ और अपने खिलाफ गलत फैसलों के खिलाफ लड़ना सीखना होगा। तय कर ले कि न गलत फैसले खुद लेगी और न किसी को गलत फैसले खुद पर थोपने देगी।
- ओह।
- सर, कभी-कभी थेरेपी की है खुद के दर्द पर ध्यान लगाने की?
- की तो नहीं है बतायें!
- ओके बताती हूं। ओशो पढ़ते हैं, सुनते हैं उसे गुनिये भी!

- क्या इस इलाज में उपदेश भी शामिल है?
- सुनें और करें चुपचाप!

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जी!
- आप एक लम्बी सांस लें। साक्षी भाव समझते हैं।
- क्या होता है?
- दर्द को कैसे दवा बनायें। अपने दर्द को देखें। दर्द हो रहा है आप दर्द नहीं हो!
- जी
- विश्वास नहीं होता न। मेडिटेशन नहीं करते कभी। करें कभी-कभी!
- ओह मेरा दर्द!
- क्या दर्द दर्द किये जा रहे है? आंखें बंद करें। सारा ध्यान दर्द पर ले आयें!
- ओके महामाया!
- अब लेट जायें मेडिटेशन करते हुए!
- जी!
- दर्द वर्द कुछ नहीं होता है!
- जब दर्द ही नहीं होता तो दर्द पर ध्यान कैसे लगायें!
- यही तो करना है। दर्द को दर्द न मानते हुए एक भाव मानना है और उससे मुक्ति पानी है!
- देखें कितना कर पाता हूं। फिलहाल तो आपसे विदा ही लेनी होगी।
- जी, आराम करें!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

07/28/2015 09.54 AM

- एक खुशखबरी सुना रही हूं।
- बंबई आ रही होंगी।
- आपके साथ तो बात करना गुनाह है। बात मेरे मुंह से निकली नहीं होती और आप तक पहुंच जाती है।
- कब के टिकट हैं?
- सात अगस्त के। वापसी ग्यारह की।
- आज्ञा दें महामाया, मुझे क्या करना है। होटल, टैक्सी, साइट सीइंग, बिग बी या खान बंधुओं के दर्शन। बरसात में बंबई बहुत खूबसूरत हो जाती है।
- प्रभु, सब काम आप ही के जिम्मे हैं।
- कितने प्राणी पधारेंगे?
- हम दो हमारे दो, कजिन भाई भाभी दो उनके दो।
- यानी सब कुछ डबल।
- सही पकड़े हैं।
- होटल के लिए कोई खास पसंद?
- पहली बार समंदर वाले शहर आ रही हूं, इस हिसाब से मेरी खिड़की से समंदर लगातार दिखना चाहिये। समंदर और बरसात का कंबिनेशन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
- न केवल दिखेगा बल्कि पांव पखारने के लिए बार बार बुलायेगा भी।

- डन।

- तो बुकिंग करा दूं। कोई बजट।

- मैं आपका नंबर सुरिंदर को दे रही हूं। फ्लाइट और बाकी डिटेल्स वे बता देंगे और जरूरत पड़ी तो ऑनलाइन पेमेंट कर देंगे।

- मेरे रहते उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

- जानती हूं।

- वे आपको पूरी डिटेल्स के साथ फोन करेंगे और हां, मैं आधा दिन या आधी शाम आपके लिए फ्री रखूंगी और कहीं घूमने नहीं जाऊंगी। बंबई से कहीं बाहर मत चले जाना तब राइटर साहब।

- आप आयें तो सही।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

08/05/2015 10.28 AM

- हैलो

- ...

- आपका फोन बंद है। पता नहीं आप ऑनलाइन भी हैं या नहीं। हम परसों सुबह 11 बजे तक बंबई लैंड करेंगे। जेट की फ्लाइट से। सुरिंदर ने सब बता ही दिया होगा। पहुंच कर फोन करूंगी। लुकिंग फारवर्ड फॉर अ वंडरफुल मीटिंग विद अ ग्रेट राइटर। सी यू सून।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11 अगस्त 2015

देव

अब कैसे हैं देव। पता है आप अभी फोन नहीं ले पायेंगे। फेसबुक तो खोलने का सवाल ही नहीं होता। इसलिए ईमेल कर रही हूं। जानती हूं ये ईमेल भी आप कई दिन बाद देख पायेंगे। उम्मीद तो यही कर रही हूं कि इससे पहले ही आपसे बात भी हो जायेगी। आपके स्वास्थ्य को ले कर बेहद चिंता हो रही है। कल ही आपके बेटे से फोन पर बात हुई थी और उसने बताया है कि ऑपरेशन ठीक हो गया है और आप पहले से बेहतर हैं लेकिन अभी तीन चार दिन आपको अस्पताल में और रहना होगा। वह आपसे बात कराता लेकिन आप उस समय सो रहे थे। हो सकता है उसने आपको मेरे फोन के बारे में बताया हो। उससे पहले रंजना जी से भी बात हुई थी। उन्होंने ही मुझे स्पाइन ऑपरेशन के सिलसिले में अस्पताल में एडमिट होने के बारे में बताया था।

पिछले दिनों की आपकी बात से लग ही रहा था कि सब कुछ ठीक नहीं है लेकिन ये नहीं जानती थी कि ये सब इतनी जल्दी हो जायेगा। और वह भी ऐसे समय जब मैं बंबई में थी और आपसे पहली मुलाकात तय थी।

देव, मुझे आपसे ढेर सारी माफी मांगनी है आपसे। एक नहीं कई बातों के लिए। सारी बातें कुछ इस तरह से होती चली गयीं कि मैं चाह कर भी न तो आपसे संपर्क कर सकी और न ही आपसे मिलने अस्पताल ही आ सकी। मुझे नहीं पता

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था देव कि बंबई की मेरी पहली विजिट ही इतनी हांच पांच वाली होगी और मुझे वहां जा कर आपसे मिलने का मौका ही नहीं मिल पायेगा।

यहां चलने से पहले आपका फोन नहीं मिल रहा था तो मैंने इनबॉक्स में आपको अपनी फ्लाइट के शेड्यूल के बारे में लिख दिया था। उसके बाद भी आपका न तो फोन ही मिला और न ही आप फेसबुक पर नज़र आये। मैं लगातार इस चिंता में ऊब चूभ हो रही थी कि आपसे कांटैक्ट नहीं हो पा रहा है, सब ठीक होना चाहिये और कि बंबई में आपसे कैसे मुलाकात होगी।

दूसरा झटका दिल्ली एयरपोर्ट पर लगा जब हमारे साथ बंबई जाने वाले भाई ने बताया कि उसने अपने जुगाड़ इस्तेमाल करते हुए बंबई युनिवर्सिटी में किसी इंटरनेशनल गेस्ट हाउस में हम सबके रहने का इंतजाम किया है और उसने इस बारे में सुरिंदर को पहले ही बता दिया था। मजे की बात आपके द्वारा करायी गयी होटल की बुकिंग कैंसिल करवा दी गयी थी, इसकी हवा भी नहीं लगने दी सुरिंदर ने। आपसे पूछ नहीं पा रही थी कि ये गेस्ट हाउस कैसा है और कहां है।

यह तो वहीं जा कर पता चला कि गेस्ट हाउस बेशक युनिवर्सिटी के हरे भरे लॉन में है और अच्छा भी है लेकिन ये जगह समंदर से कई किलोमीटर दूर थी। मैं गेस्ट हाउस देखते ही बेहद हताश निराश हो गयी थी। कमरे इतने छोटे थे कि बच्चों की तो छोड़िये, दो जन भी आराम से डबल बेड

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पर नहीं समा सकते थे। मैं दोनों पर बहुत गुस्सा हुई थी कि इतने अच्छे होटल की बुकिंग कैंसिल करा के मुर्गियों के दड़बे जैसे कमरे किसकी सलाह पर बुक कराये गये हैं। मैं बता नहीं सकती देव कि बंबई आने के मेरे सारे उत्साह पर पानी पड़ गया था। उधर से आपकी चिंता अलग सताये जा रही थी कि सब ठीक हो। बार बार आपका फोन ट्राई करती रही थी बीच में। दूसरे ही दिन आपके मोबाइल पर आपकी पत्नी से बात हो पायी थी तो पता चल पाया था कि आप अस्पताल में भर्ती हैं और थोड़ी ही देर में आपको स्पाइन के आपरेशन के लिए आपरेशन थियेटर ले जाया जाना था

मैं बेहद उदास हो गयी थी। समंदर से पहली ही मुलाकात में ऐसी खबर तो नहीं चाही थी मैंने देव। मैं चाह कर भी आपको देखने अस्पताल नहीं आ सकती थी। हालांकि आपकी पत्नी ने बहुत अच्छे से बात की थी और मेरे पूछने पर वे अस्पताल का पता भी बता देतीं। लेकिन हो नहीं पाया। सुरिंदर से कुछ भी कहना बेकार था। उसने भी अपनी तरफ से एक बार भी नहीं पूछा कि तुम्हारे दोस्त कहां हैं जिन्होंने सारा इंतजाम किया था।

बंबई विजिट की बाकी सारी डिटेल्स में न जा कर यही बताना है कि अगले दिन ही हमने जुहू के ही एक होटल में शिफ्ट कर लिया था। कोई और उपाय नहीं था। गेस्ट हाउस के कमरे में डबल बेड इतने छोटे थे कि रात भर न बच्चे सो पाये न बडे। एक्स्ट्रा बेड की न तो व्यवस्था थी न जगह।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बच्चों को भी बबई आना अच्छा लगा। सबको भी लेकिन मैं सारा समय उखड़ी उखड़ी रही। आपसे बात भी तो पाती तो कुछ तो तसल्ली रहती। हम आज शाम ही लौटे हैं और आते ही सबसे पहला काम ये कर रही हूं कि आपको ईमेल कर रही हूं। यह जानते हुए भी कि आप कई दिन तक फेसबुक और ईमेल से दूर रहने वाले हैं।

आप जल्द ठीक हों मैं ये दुआ करती रहूंगी। मैं यह भी उम्मीद करती रहूंगी कि आप फोन करने लायक होते ही मुझे फोन करेंगे और अपनी पुरानी शरारत भरी आवाज में बतायेंगे कि अब सब ठीक है। बहुत सारी बातें करनी है लेकिन देखो ना देव, ये ईमेल भी कितनी भारी भरकम भाषा में लिखा गया है। और नहीं लिख पा रही।

अपना ख्याल रखना। गेट वेल सून। सब कुछ ठीक होने पर पहला फोन मुझे करना। इंतज़ार रहेगा।

लव यू देव
छवि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरज प्रकाश

14 मार्च 1952 को देहरादून में जनमे सूरज प्रकाश का कार्य बहुत विस्तार लिये हुए है। अब तक उनके 7 कहानी संग्रह और दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। दो उपन्यास लिखे जाने की प्रक्रिया में। चार्ली चैप्लिन की आत्म कथा के अनुवाद सहित अंग्रेजी से पांच पुस्तकों के तथा महात्मा गांधी की आत्मकथा के अनुवाद सहित गुजराती से आठ पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। दो व्यंग्य संग्रह और 9 संपादित पुस्तकें उनके खाते में हैं। उन्हें गुजरात साहित्य अकादमी का सम्मान और महाराष्ट्र अकादमी का सम्मान मिल चुके हैं। वे मुंबई में रहते हैं और उनका साहित्य www.surajprakash.com पर पढ़ा जा सकता है।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नॉट इक्वल टू लव एक ऐसी अनोखी
कहानी है जिसमें एक पुरुष पात्र और एक महिला
पात्र फेसबुक चैट के ज़रिये संवाद करते हैं।
वे अलग अलग वक्त पर की गयी चैट
के माध्यम से जीवन के बहुत से सवालों से जूझते हैं।
वे संगीत शेयर करते हैं, साहित्य पर बात करते हैं,
संबंधों और खास तौर पर प्रेम संबंधों पर बात करते हैं और
सोशल मीडिया की प्रासंगिकता जैसे ज्वलंत प्रश्न
से जूझते हैं।
बेहद पठनीय और रोचक भाषा में लिखा गया ये
पहला चैट उपन्यास आप एक ही
बार में पढ़ना चाहेंगे।

उपन्यास

STORYMIRROR
Stories that reflect you
www.storymirror.com

ISBN 9789386305053
9 789386 305053

₹150

Coverdesign by Team Storymirror

C... Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra...